दैनिक जागरण
विनम्रता सभी गुणों की आधारशिला है

बंदिशों का दौर

प्रधानमंत्री की मुख्यमंत्रियों के साथ बातचीत के बाद यही स्पष्ट हुआ कि लॉकडाउन की अवधि बढ़ाने के अलावा और कोई उपाय नहीं। एक तो अधिकांश मुख्यमंत्री लॉकडाउन की समय-सीमा में वृद्धि चाह रहे हैं और दूसरे, कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या में बढ़ोतरी भी इस जरूरत को रेखांकित कर रही है कि फिलहाल कोई जोखिम मोल नहीं लिया जा सकता। चूंकि प्रधानमंत्री से वार्ता के पहले ही कई राज्यों ने अपने यहां लॉकडाउन 30 अप्रैल तक बढ़ाने का फैसला कर लिया था इसलिए माना जा रहा है कि केंद्रीय सत्ता की ओर से भी कम से कम दो सप्ताह तक के लिए लॉकडाउन के विस्तार का फैसला लिया जाएगा। देखना यह है कि ऐसा कोई फैसला करते समय देश के उन इलाकों को कोई रियायत दी जाती है या नहीं जो कोरोना वायरस के संक्रमण से अछूते हैं। चूंकि चार सौ से अधिक जिले ऐसे हैं जहां कोरोना का एक भी मरीज नहीं है इसलिए इस पर विचार होना चाहिए कि क्या इन जिलों की सीमाएं सील कर वहां लॉकडाउन में कुछ ढील दी जा सकती है? इससे चुनिंदा कारोबारी गतिविधियों को शुरू करने के साथ ही फसल कटाई के काम को आगे बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। इसका एक लाभ यह भी होगा कि मजदूरों और कामगारों की रोजी-रोटी की समस्या का एक हद तक समाधान होगा। ऐसा करते समय सार्वजनिक मेल-मिलाप से परहेज को लेकर भी सतर्क रहना होगा और इसे लेकर भी सीमाएं कारगर ढंग से सील हों।

एक ओर जहां कोरोना के संक्रमण से बचे हुए इलाकों में कुछ रियायत देने पर विचार होना चाहिए वहीं दूसरी ओर संक्रमण की चपेट वाले इलाकों और खासकर जहां कोरोना के ज्यादा मरीज मिलने के कारण उन्हें हॉटस्पॉट के रूप में चिन्हित किया गया है वहां लॉकडाउन के पालन में और सख्ती दिखाई जानी चाहिए। ऐसे इलाकों में कर्फ्यू लगाने से भी नहीं हिचका जाना चाहिए। स्वास्थ्य कर्मियों से असहयोग करने और पुलिस कर्मियों की अवहेलना करने वालों को समझाने-बुझाने का समय बीत गया है। ऐसे तत्व कठोर दंड के पात्र बनाए जाने चाहिए जो हालात की गंभीरता समझने को तैयार नहीं। चूंकि एक गलती पूरे देश की मेहनत पर पानी फेरने का काम कर सकती है इसलिए शासन-प्रशासन के साथ आम जनता की भी यह जिम्मेदारी बनती है कि वह लॉकडाउन की बंदिशों का उल्लंघन करने वालों पर निगाह रखे। निःसंदेह फिलहाल लॉकडाउन जरूरी है, लेकिन यह भी ध्यान रहे कि देश को उसकी भारी आर्थिक कीमत चुकानी पड़ रही है। वास्तव में इसी कारण लॉकडाउन पर सख्ती से अमल के प्रति राज्य सरकारों को और अधिक तत्परता दिखाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

ढील देना मुनासिब नहीं

कोरोना महामारी के संकट ने देश-दुनिया के साथ ही उत्तराखंड को भी नाजुक मोड़ पर खड़ा कर दिया है। लॉकडाउन को 14 अप्रैल के बाद बढ़ाने से पीछे हटना किसी भी सूरत में मुमकिन नहीं है। प्रदेश में कोरोना संक्रमण के मामलों में से ज्यादातर चार बड़े जिलों देहरादून, हरिद्वार, नैनीताल और ऊधमसिंहनगर में मिले हैं। दो मामले पर्वतीय जिलों के भी हैं। अच्छी बात ये है कि बीते दो दिनों से नया मामला सामने नहीं आया है। पांच मरीज स्वस्थ होकर डिस्चार्ज हो चुके हैं। बावजूद इसके जिस तरह कोरोना वायरस संक्रमण के उक्त मामले सामने आए, उससे साफ है कि इस महामारी को रोकने के लिए किसी भी स्तर पर ढील नहीं दी जा सकती। राज्य के सामने सबसे बड़ी चुनौती खस्ता वित्तीय हालत है। राजस्व जुटाने के तमाम स्रोतों पर लॉकडाउन का असर साफ दिख रहा है। वहीं लॉकडाउन से परेशानहाल आम आदमी खासतौर पर गरीबों, असहायों और दैनिक श्रमिकों को मदद पहुंचाने की कवायद के साथ स्वास्थ्य सुविधाओं को दुरुस्त करने की अहम जिम्मेदारी सरकार पर है। ऐसे में आर्थिक संसाधनों का और सीमित होते चले जाना चिंता की स्वाभाविक वजह है। जीएसटी, आबकारी, स्टांप व रजिस्ट्रेशन, खनन, वाहन कर, परिवहन समेत राजस्व के तमाम स्रोतों से आमदनी तकरीबन बंद है। राज्य में कर्मचारियों के वेतन-भत्ते और पेंशनरों को पेंशन भुगतान पर ही हर महीने एक हजार करोड़ से ज्यादा खर्च होता है। यही वजह है कि राज्य सरकार ने लॉकडाउन को 30 अप्रैल तक बढ़ाने का समर्थन तो किया, साथ में प्रदेश में औद्योगिक, निर्माण, खनन गतिविधियों को खोलने की जरूरत भी जताई है। कृषि उत्पादों समेत दवाइयों से जुड़े फार्मा उद्योग को संचालित करने और स्टांप व रजिस्ट्रेशन को भी नियंत्रित तरीके से जारी रखने पर जोर है। ये कार्ययोजना राज्य सरकार ने केंद्र को प्रस्तुत की है। इस पर केंद्र सरकार के निर्देशों के मुताबिक राज्य सरकार कार्रवाई करेगी। राज्य ने अपनी माली हालत को ध्यान में रखते हुए पूरी तरह लॉकडाउन के साथ सीमित आर्थिक गतिविधियां जारी रखने की पैरवी की है। सच ये भी है कि कोरोना संक्रमण का संकट जितना बड़ा है और जिस तरह इसने पूरे विश्व को अपनी चपेट में लिया है, उसे देखते हुए स्वास्थ्य विशेषज्ञों से लेकर तमाम प्रबुद्धजन आगे भी 15 दिवसीय लॉकडाउन पर जोर दे रहे हैं।

संकट में छिपे अवसर तलाशे भारत

संजय गुप्त

अमेरिका, जापान समेत अन्य देश अपने कारखाने चीन से बाहर लाने की जो तैयारी कर रहे हैं वह भारत के लिए एक सुनहरा मौका है

भारत सरकार ने कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए तीन सप्ताह के जिस लॉकडाउन की घोषणा की थी उसकी समय सीमा खत्म होने के पहले ही उसे बढ़ाने की मांग तेज हो गई। ओडिशा, पंजाब आदि कुछ राज्य सरकारों ने तो अपने-अपने यहां लॉकडाउन की अवधि बढ़ा भी दी। प्रधानमंत्री के साथ मुख्यमंत्रियों की वीडियो कांफ्रेंसिंग में भी कई मुख्यमंत्री इस पक्ष में रहे कि लॉकडाउन की अवधि बढ़ाई जाए। मौजूदा हालात भी इसकी जरूरत रेखांकित कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने जब लॉकडाउन की घोषणा की थी तब देश में कोरोना संक्रमित लोगों की संख्या पांच सौ के करीब थी, लेकिन अब वह आठ हजार पहुंच रही है। इसकी एक बड़ी वजह तब्लीगी जमात वालों का गैर जिम्मेदाराना व्यवहार रहा। आंकड़े बता रहे कि देश में कोरोना मरीजों की संख्या एक अप्रैल के बाद तेजी से बढ़ी। ज्ञात हो कि इसी समय तब्लीगियों को दिल्ली के निजामुद्दीन स्थित उनके मरकज से बाहर निकाला गया था। उन्हें खुद को अलग-थलग रखने की हिदायत दी गई थी, लेकिन उन्होंने ऐसा करने से इन्कार करने के साथ ऐसी हरकतें कीं जिससे संक्रमण तेजी से फैला। दुख, शर्म और चिंता की बात यह है कि तब्लीगियों के छिपने, असहयोग का सिलसिला अभी भी कायम है। संक्रमितों की बढ़ती संख्या इसलिए गहन चिंता का विषय है, क्योंकि भारत एक तो बड़ी आबादी वाला देश है और दूसरे उसका स्वास्थ्य ढांचा पर्याप्त सक्षम नहीं। चूंकि देश में अपेक्षित संख्या में लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण नहीं हो पा रहा है इसलिए कोरोना वायरस के संक्रमण की चपेट में आए लोगों की सही संख्या जानने में कठिनाई आ रही है। हैरानी नहीं कि देश में कोरोना संक्रमितों की संख्या मौजूदा संख्या से दोगुना हो। शायद इसीलिए लॉकडाउन अवधि बढ़ाने की मांग हो रही है। यह समय की मांग है कि कोरोना प्रभावित इलाकों और खासकर शहरों में जहां सघन आबादी है वहां अधिक से अधिक संख्या में लोगों की जांच हो। जरूरी हो तो ऐसे इलाकों में कर्फ्यू लगाकर जांच की जाए।

कोरोना का कहर देश के साथ दुनिया की अर्थव्यवस्था को भी चोट पहुंचा रहा है। दुनिया का मंदी की चपेट में आना अब एक हकीकत है। यह स्पष्ट है कि लॉकडाउन जितना बढ़ेगा, अर्थव्यवस्था की चुनौतियां भी उतनी ही बढ़ेंगी। लॉकडाउन की घोषणा करते समय भारत सरकार ने उद्योग-व्यापार जगत से यह अपेक्षा की थी कि वह अपने कर्मचारियों का मार्च माह का वेतन न रोके, लेकिन उसके लिए अप्रैल माह के वेतन को लेकर ऐसी अपेक्षा करना कठिन होगा। उद्योग-व्यापार जगत की ओर से यह अपेक्षा पूरी किया जाना आसान भी न होगा, क्योंकि हर कारोबारी इतना समर्थ नहीं कि वह बंद कारोबार के बाद भी अपने कर्मियों के वेतन दे सके। इसी कारण लाखों लोगों की नौकरियों पर तलवार लटक गई है। यह स्थिति पूरी दुनिया में है। कोरोना के कहर से निपटने के साथ ही भारत और दुनिया के अन्य देशों को इसकी भी चिंता करनी होगी कि अर्थव्यवस्था को जल्द से जल्द कैसे पटरी पर लाया जाए?

यह देखना सुखद है कि इस गहन संकट के समय विश्व भारत की ओर उम्मीदों से देख रहा है। इसका कारण प्रधानमंत्री की ओर से पहले सार्क और फिर जी-20 के जरिये इसके लिए सक्रियता दिखाना रहा कि कोरोना के कहर से मिलकर कैसे निपटा जाए। भारतीय प्रधानमंत्री ने कोरोना से उपजी कोविड-19 बीमारी के उपचार में सहायक मानी जाने वाली मलेरिया की दवा जिस तरह तमाम देशों को उपलब्ध कराई उससे उनके साथ-साथ भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि और अधिक निखरी है। विश्व समुदाय भारत की सराहना करने के साथ इस पर भी निगाह लगाए है कि वह कोरोना संकट से कैसे पार पाता है? स्पष्ट है कि कोरोना के कहर को थामकर भारत एक मिसाल कायम करने के साथ उन उम्मीदों को पूरा कर सकता है जो विश्व समुदाय उससे लगाए हुए है। यह मिसाल तभी कायम की जा सकती है जब संक्रमण को थामने के लिए युद्धस्तर पर जुटा जाए। चूंकि यह एक कठिन लड़ाई है इसलिए उसमें आम लोगों का योगदान जरूरी है।

आज जब विश्व भारत की ओर निहार रहा है तब वह चीन के साथ विश्व स्वास्थ्य संगठन को कठघरे में भी खड़ा कर रहा है, क्योंकि इस संगठन ने चीन के सुर में सुर मिलाकर दुनिया को समय रहते चेताया नहीं। उसने चीन की गोद में बैठने का जो काम किया उसके कारण ही उसकी फजीहत हो रही है। यह फजीहत होनी भी चाहिए, क्योंकि उसके कारण दुनिया बहुत गहरे संकट में फंस गई है। बेहतर हो कि विश्व स्वास्थ्य संगठन को अपनी गलती का अहसास हो। विश्व समुदाय को यह देखना ही होगा कि भविष्य में यह संगठन सही तरह काम करे।

हालांकि चीन ने कोरोना वायरस के गढ़ वुहान के लॉकडाउन को खत्म करने की घोषणा कर दी है, लेकिन इसमें संदेह है कि उसने महामारी बन गई कोविड-19 बीमारी पर वास्तव में काबू पा लिया है। इन दिनों तमाम वैज्ञानिक इसकी पुष्टि कर रहे हैं कि कोरोना वायरस चमगादड़ या फिर पैंगोलिन के जरिये वुहान के लोगों के शरीर में आया और फिर वहां से दुनिया में फैला। कायदे से चीन को अपने लोगों को वन्य जीवों को खाने से रोकने के साथ कोरोना वायरस का संक्रमण फैलाने के लिए विश्व समुदाय से खेद व्यक्त करना चाहिए। एक तो इसके आसार कम हैं और दूसरे दुनिया यह स्मरण करने को विवश है कि इसके पहले किस तरह सार्स और एच-1एन-1 वायरस ने दुनिया पर कहर ढाया था। जैसे आज कोरोना के कारण विश्व अर्थव्यवस्था घुटनों के बल आ गई है वैसे ही सार्स और एच-1एन-1 के संक्रमण के दौरान भी उसे बहुत नुकसान उठाना पड़ा था।

चूंकि चीन न तो लोकतांत्रिक तौर-तरीके अपनाने को तैयार है और न ही अपने सामाजिक-राजनीतिक व्यवहार को बदलने के लिए इसलिए अमेरिका, जापान समेत अन्य अनेक विकसित देश अपने कारखाने चीन से बाहर लाने की तैयारी कर रहे हैं। यह उचित भी है, क्योंकि इसका औचित्य नहीं कि चीन दुनिया का कारखाना बना रहे। विकसित देशों की ओर से अपने कारखाने चीन से बाहर निकालने की तैयारी भारत के लिए एक सुनहरा अवसर है। इस अवसर को भुनाने के लिए हरसंभव कदम उठाए जाने चाहिए। यदि विकसित देशों के चीन में स्थापित कारखाने भारत आ सकें तो इससे देश के आर्थिक भविष्य को कहीं अधिक आसानी से सुरक्षित किया जा सकता है।

response@jagran.com

अवधेश राजपूत

घर पर दफ्तर के साथ ही घरेलू काम

हास्य-व्यंग्य

निर्मल गुप्त

घर से दफ्तर के काम का तनाव नहीं, लेकिन असल टेंशन घर के कामों की अंतहीन होती फेहरिस्त बढ़ा रही है

कोरोना वायरस ने सभी को एक झटके में समझा दिया कि अब तो घरघुसरा बने रहने में ही सबकी भलाई है। घर में रहो और वहीं से जो कुछ करते बने, करो। शुरू-शुरू में वर्क फ्रॉम होम का निर्देश पाकर मुलाजिमों के बीच बड़ी दुविधा रही। कुछेक को तो उनकी घरवालियों ने तुरंत समझा दिया कि इसका मतलब है, वर्क फॉर होम। बातों ही बातों में यह सूचना उचित तरीके से सबके कानों तक पहुंचा दी गई कि कामवाली बाई भी अपने घर पर ही रहेगी, इसलिए चलो उठो, लगो काम पर। अंतरराष्ट्रीय आपदा की इस कठिन घड़ी में घर-बार के कामों में हाथ बंटा सरोकारी कमेरे बनो।

एक सरकारी महकमे में बड़े बाबू खुद को ज्यादा समझदार मानकर यह सोच रहे थे कि वह जल्द ही घर वालों के सामने यह साबित करने में सफल हो जाएंगे कि घर पर दफ्तर का काम करना दफ्तर में रहकर काम करने से ज्यादा बड़ा काम है, लेकिन उनकी मैडमजी ने उनके इरादों पर पानी फेर दिया।

साहबजी ने ठान लिया कि वह दैहिक रूप से घर में मौजूद रहते हुए भी मन और आत्मा से दफ्तर के विविध कार्यों में निष्ठापूर्वक संलग्न रहेंगे। घर पर दफ्तर के काम का पहला दिन था इसलिए बड़े बाबू सही समय पर डाइनिंग टेबल पर जा बैठे। साहबजी ने कुर्सी के पृष्ठभाग पर झट से साफ-सुथरा तौलिया टांग लिया। चेयर घुमाने की कोशिश की, लेकिन वह असफल रहे। काठ की घरेलू कुर्सियां शायद ही कभी घूमती देखी गई हों। इसके बाद उन्होंने वॉल क्लॉक को निहारा, फिर सही मुहूर्त ताड़कर लैपटॉप ऑन किया, बटन पुश कर घंटी बजाई और कहा, अरे ननकू भाग के जा जरा एक 'कटिंग चाय' तो पकड़ ला। यह बात ननकू से विशिष्ट अनौपचारिक, किंतु साहबी अंदाज में कही गयी थी, जिसमें आदेश की गंध थी और अनुरोध का तड़का भी मौजूद था। अलबत्ता बात निकलने के बावजूद बहुत दूर तक तो गई, पर वहां तक पहुंच न पाई, जिसे लक्षित कर उसे हवा में उड़ाया गया था। बात मुंह से निकली जरूर पर गंतव्य तक न पहुंची। पहुंचती भी कैसे, क्योंकि ननकूजी भी बड़े बाबू के घर से लगभग पौने पांच किलोमीटर दूर अपनी खोली के स्टूल पर इस तरह मुस्तैद बैठे थे कि कोई हुक्म का कतरा जरा भी उनकी तरफ आता दिखे तो वह उसे लपक कर आनन-फानन सरकारी लहजे में उसे बजा लाएं।

अबे ननकू, बड़ी देर कर दी। साहबजी की तल्ख आवाज घर में गूंजी तो मैडमजी ने कहा 'यहां कोई ननकू नहीं, खुद किचन में जाओ और दो कप कॉफी बना लाओ। अपनी सरकारी हनक घर में न दिखाओ। यदि कुछ करना-धरना निहायत जरूरी हो, तो कोरोना के खिलाफ सख्त एक्शन लेने के लिए सजेशन नोट मोहल्ले के लोगों को बढ़ाओ। यह सुन साहब मनमसोस कर रह गए। उन्हें लगा कि वह अफसर भी क्या, जिसके इर्दगिर्द तिरछी टोपी पहने और कनपटी पर असमय बुझा दी गई बीड़ी अटकाए कोई रोबोट प्रजाति सरीखा कारिंदा लगातार मंडराता और फर्शी सलाम रह-रह कर बजाता न दिखे।

दफ्तरी माहौल के गहन जानकार यूं ही नहीं कह गए कि नौकरी के तीन काम-नक्शा, मीटिंग और सलाम। कोई बताए कि घर से काम करना भी कोई काम हुआ भला! समुचित मौका, सही दस्तूर और अनुकूल वातावरण के अभाव में भरसक चाहने के बावजूद कभी कोई काम ढंग से होता है भला, लेकिन बड़े बाबू की चिंता यह है कि अब घर में दफ्तर का काम तो ढंग से करना ही होगा, इसके साथ ही घर का काम भी करना होगा। वह घर पर रहते हुए दफ्तर का काम निपटा रहे हैं, लेकिन उनकी टेंशन घरेलू कामों की उस लिस्ट से है जो मैडम जी ने तैयार की है। उनकी टेंशन इसलिए और बढ़ रही है, क्योंकि यह लिस्ट हर दिन लंबी होती जा रही है। यह लिस्ट उनके ओहदे से भी बड़ी होती जा रही है। वहीं लॉकडाउन के दिनों की गिनती भी बढ़ती जा रही है।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य | देश में कहां कितने मेडिकल कॉलेज

स्रोत : एमसीआइ

कर्नाटक	60	आंध्र प्रदेश	31	ओडिशा	12	पंजाब	8
महाराष्ट्र	56	गुजरात	29	हरियाणा	12	हिमाचल	7
उत्तर प्रदेश	55	प. बंगाल	24	छत्तीसगढ़	10	असम	6
तमिलनाडु	49	राजस्थान	23	पुडुचेरी	9	उत्तराखंड	6
केरल	32	मध्य प्रदेश	22	दिल्ली	9	झारखंड	6
तेलंगाना	32	बिहार	15	जम्मू कश्मीर	8		

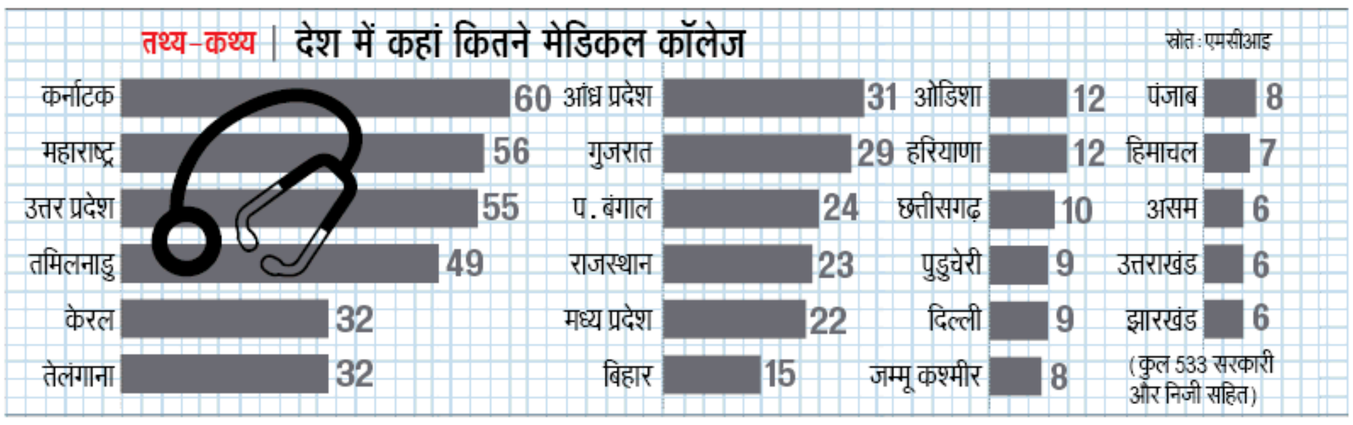

(कुल 533 सरकारी और निजी सहित)

ऊर्जा

स्वास्थ्य की संपदा

मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य का सर्वाधिक महत्व है। स्वास्थ्य के बिना धन, संपत्ति, मनोरंजन और अन्य सुविधाएं महत्वहीन हैं। जो व्यक्ति तन और मन से स्वस्थ होता है, वही सुखी प्राणी है। लोकप्रिय धारणा के विपरीत स्वास्थ्य का मतलब केवल शारीरिक रूप से फिट और किसी भी बीमारी से मुक्त होना नहीं होता है। इसका मतलब यह भी है कि एक व्यक्ति का समग्र विकास होना चाहिए। इसमें मानसिक और भावनात्मक रूप से मजबूत होना, स्वस्थ अंतर-व्यक्तिगत संबंध रखना, अच्छा संज्ञानात्मक कौशल होना और आध्यात्मिक रूप से जागृत होना शामिल है। स्वस्थ होना एक स्थिति नहीं है, यह जीवन जीने का एक तरीका है।

स्वस्थ रहने और अच्छे स्वास्थ्य का आनंद लेने के लिए स्वस्थ जीवन शैली बनाए रखना आवश्यक है। इसके लिए यह जरूरी है कि खान-पान, रहन सहन, स्वच्छता से लेकर मानसिक रूप से सजग रहना होगा। सकारात्मक सोच वाले लोगों की संगत में रहें। कुछ समय अपने साथ बिताएं ताकि आप अपनी आवश्यकताओं को बेहतर समझ सकें। उत्तम स्वास्थ्य के कारण जटिल से जटिल कार्य भी सरलता से हो सकता है। स्वस्थ मनुष्य में अदम्य साहस, उत्साह और धर्म की भावना प्रचुर मात्रा में होती है। वहीं जिन लोगों के पास अच्छी सेहत का खजाना नहीं होता, वे धनवान होते हुए भी अपने जीवन को भार समझते हैं।

यदि सुख के साथ जीना है तो स्वस्थ रहना परम आवश्यक है। इसके लिए सबसे आसान मंत्र है-प्रकृति के नियमों का पालन, सदाचार, कठोर शारीरिक परिश्रम और पौष्टिक, किंतु सात्विक आहार। मद्यपान, अन्य प्रकार के मादक पदार्थों का सेवन, दूषित जलवायु में रहना, अनुचित आचरण, तनाव-ये सब चीजें हमारे स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालती हैं। अतः हमें इनसे बचकर अपने जीवन और स्वास्थ्य की रक्षा करनी चाहिए।

नरपतदान चारण

कम हो गया है पृथ्वी का कंपन

मुकुल व्यास

लॉकडाउन भले निराशाजनक दिख रहा हो, लेकिन इसमें भविष्य के लिए एक बहुत बड़ा सबक छिपा हुआ है

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हमारी पृथ्वी पर धम-धम कम हो गई है। जी, यह सच है। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि दुनिया भर में लॉकडाउन की स्थिति से पृथ्वी की पर्पटी यानी क्रस्ट की हलचल कम हो गई है। अनेक देशों में लोगों को अपने घरों में ही रहने को कहा गया है। सड़कों पर वाहनों का दौड़ना बंद है तथा कारखानों में उत्पादन ठप है। इससे पृथ्वी की पर्पटी पर कंपन का शोर कम हो गया है। वैज्ञानिक इसे साइज्मिक नॉइज भी कहते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि इससे न सिर्फ भूकंप के संकेत ग्रहण करने में आसानी होगी, बल्कि लोगों को पर्यावरण के बारे में एक अच्छा सबक भी मिलेगा। दुनिया भर में भूकंपीय तरंगों की नापजोख करने के लिए तैनात हजारों डिटेक्टर इस बैकग्राउंड नॉइज को ग्रहण कर रहे हैं।

बेल्जियम में रॉयल ऑब्जर्वेटरी के साइज्मालॉजिस्ट थॉमस लीकाक का कहना है कि ब्रसेल्स में पिछले महीने के मध्य में स्कूल और प्रतिष्ठान बंद करने के बाद साइज्मिक नॉइज में 30 से 40 प्रतिशत की कमी आई है। दूसरे भूकंप वैज्ञानिकों ने भी शोर में इसी तरह की कमी नोट की है। लंदन स्थित साइज्मोलॉजिस्ट पॉला कोयलेमेइजर ने कहा कि ब्रिटिश राजधानी में पिछले महीने लॉकडाउन लागू होने के बाद शोर में कमी दर्ज की गई है। इंपीरियल कॉलेज लंदन के भूकंप विशेषज्ञ स्टीफन हिक्स ने बताया कि एम4 मोटरवे के निकट तैनात डिटेक्टर ने दिन के समय औसत बैकग्राउंड नॉइज के स्तर में गिरावट रिकॉर्ड की है।

बेल्जियन वैज्ञानिक लीकाक अब यह परीक्षण करना चाहते हैं कि क्या भूकंप वैज्ञानिक पृथ्वी की पर्पटी से ज्यादा बेहतर माप कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि अनेक डिटेक्टर अपेक्षाकृत शांत क्षेत्रों में स्थापित हैं ताकि उनके द्वारा ग्रहण ध्वनि और मनुष्य की गतिविधियों से उत्पन्न ध्वनि में मिश्रण में न हो, लेकिन ब्रसेल्स में स्थापित एक डिटेक्टर एक बहुत ही व्यस्त इलाके में है। डॉ. लीकोक ने कहा कि लॉकडाउन के बाद से मनुष्य की गतिविधियों से प्रभावित होने वाले क्षेत्रों में स्थापित डिटेक्टरों की क्षमता बढ़ गई है। ये डिटेक्टर अब छोटे भूकंप संकेतों को ज्यादा बेहतर ढंग से ग्रहण कर रहे हैं, लेकिन इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिला है कि मनुष्य की गतिविधियां कम होने से भूकंप आने की संभावना कम हो जाएगी।

लॉकडाउन समाप्ति के बाद मानवीय गतिविधियां शुरू होने से पर्यावरण की स्थिति फिर खराब होने लगेगी। आज गंगा और यमुना जैसी नदियों का पानी साफ होने लगा है। दुनिया के महानगरों के आसमान भी साफ हो रहे हैं। लॉकडाउन भले ही आज निराशाजनक दिख रहा हो, लेकिन इसमें भविष्य के लिए एक बहुत बड़ा सबक छिपा हुआ है। यदि हमें अपने पर्यावरण को बेहतर रखना है तो हमें लॉकडाउन के अनुभवों से सीख कर अपनी जीवन शैली और काम करने के तरीकों में बदलाव लाना होगा।

(लेखक विज्ञान विषय के जानकार हैं)

मास्क पर सही कौन?

मास्क पहनने को लेकर स्वास्थ्य मंत्रालय को कवर करने वाले पत्रकार खासे भ्रमित हैं। मंत्रालय के अधिकारी और डॉक्टर लगातार मीडियाकर्मियों को समझाते रहते हैं कि महज मास्क लगाकर कोरोना से बचना संभव नहीं है। जिसे कोरोना हो गया है, मास्क पहनना सिर्फ उसके लिए जरूरी है। सरकार के वैज्ञानिक सलाहकार ने जब हर व्यक्ति को घर में मास्क बनाकर पहनने का सुझाव दिया तब भी स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारी समझाने की कोशिश करते रहे कि इसे कोरोना से जोड़ना ठीक नहीं है। वैसे बाद में मजबूरीवश स्वास्थ्य मंत्रालय को भी अपनी वेबसाइट पर ही एलान करना पड़ा कि सभी लोग मास्क पहने भले ही वह घर में बना हुआ ही क्यों न हो। इसके बावजूद स्वास्थ्य मंत्रालय के एक अधिकारी ने मास्क पहनने पर तंज कसते हुए कह दिया कि ऐसा करके वे लोगों में भय न फैलाएं। यह अलग बात है कि मुख्यमंत्रियों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग बैठक में खुद प्रधानमंत्री ने मास्क लगा सभी लोगों के लिए मास्क पहनने की जरूरत का संदेश दे दिया। अब स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारियों की बोलती बंद है।

करें तो क्या करें

उद्यमियों को इन दिनों विभिन्न मंत्रालयों से अलग-अलग निर्देश मिल रहे हैं। कोई मंत्रालय उन्हें कहता है कि मैन्यूफैक्चरिंग से ज्यादा जरूरी जान है, इसलिए अभी आर्थिक पैकेज की बात मत करो। दूसरी तरफ एक मंत्रालय उद्यमियों को बुलाकर यह कह रहा है कि उन्हें मैन्यूफैक्चरिंग जारी रखनी चाहिए, अन्यथा विदेश से आने वाले कई ऑर्डर किसी और देश के पास चले जाएंगे। मैन्यूफैक्चरर्स को 30-35 फीसद तक उत्पादन जारी रखने के उपाय करने को कहा जा रहा है। मैन्यूफैक्चरर्स कर रहे हैं कि जब आर्थिक पैकेज मांगने जाओ तो यह कहा जाता है कि जान है तो जहान है, अभी औद्योगिक गतिविधियों के लिए पैकेज मुश्किल है। दूसरी ओर मैन्यूफैक्चरिंग को एक सीमा तक जारी रखने के लिए भी कहा जा रहा है। ऐसे में उद्यमी भी पैकेज के इंतजार में ऐसे दिशा-निर्देशों को अपनी प्रतीक्षा फाइल में लगाकर इंतजार के मूड में हैं।

राजरंग

रास न आई दूरी

कोरोना लॉकडाउन के दौरान योग और अध्यात्म की बड़ी-बड़ी नसीहत देकर सोशल मीडिया से दूरी बनाते हुए वॉट्सएप ग्रुप छोड़ने वाले भाजपा के एक नेताजी को अपनी ही नसीहत उन्हें खुद नहीं बांध पाई। एक सप्ताह में ही अध्यात्म से विमुख होकर वह सोशल मीडिया पर लौट आए। नैतिकता और भ्रष्टाचार से लड़ाई को सोशल मीडिया ग्रुप में झंडा बुलंद करने वाले इन नेताजी ने लॉकडाउन के दौरान एक दिन ग्रुप पर योग के फायदे बताते हुए कहा कि योगी बनने का यह सर्वोत्तम समय है। इन नसीहतों के साथ उन्होंने वॉट्सएप ग्रुप छोड़ दिया, लेकिन एक सप्ताह में ही वह दोबारा ग्रुप ज्वाइन कर वापस लौट आए। असल में सोशल मीडिया का जायका ही कुछ ऐसा ही कि अच्छे-अच्छे उसका मोह नहीं छोड़ पाते।

मिले सुर मेरा तुम्हारा

कोरोना महामारी ने वैसे तो राजनीति के सक्रिय पहिये को लगभग थाम दिया है। हालांकि चाहे पार्टियां हो या नेता, सभी अपने-अपने तरीके से संकट खत्म होने के बाद की सियासी दुनिया के लिए भी चिंतन-मनन कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश में विपक्षी सियासत के दो प्रमुख चेहरे बसपा सुप्रीमो मायावती और सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव भी इसी रणनीति के तहत अपने-अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सक्रिय हैं। अब इसे महज संयोग कहा जाए या सूबे में भविष्य की सियासत का कुछ संकेत माना जाए, मगर इस सक्रियता के क्रम में तीन दिन पूर्व दोनों की एक जैसी राय ने सहज ही ध्यान खींचा। कन्नौज में एक दलित अधिकारी की पिटाई करने वाले भाजपा के आरोपी सांसद पर कार्रवाई नहीं करने को लेकर माया ने ट्विटर पर सूबे की सरकार को घेरा। तो अखिलेश ने भी अपने ट्वीट में कुछ यही भाव दर्शाए। लोकसभा चुनाव के बाद सपा और बसपा ने अपने गठबंधन को बाय-बाय करते हुए सियासी राहें जुदा कर ली थीं, मगर इस पर दोनों के सुरों की समानता सियासी उत्सकुता तो बढ़ाती ही है। बहरहाल यह तो वक्त ही बताएगा कि अखिलेश ने अपने सियासी प्रभाव क्षेत्र का मामला होने की वजह से बसपा नेत्री के सुर में सुर मिलाया या फिर दोनों भविष्य की सियासी गुंजाइश का रास्ता खुला रखना चाहते हैं।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए ... द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

अनंत विजय

anant@nda.jagran.com

आजकल

अतीत के स्वर्णिम दौर का सहारा

लॉकडाउन के दौर में रामायण और महाभारत जैसे धार्मिक और अन्य लोकप्रिय धारावाहिकों के बूते दूरदर्शन की टीआरपी में भारी उछाल आई है, लेकिन अनेक ऐसी चीजें भी सामने आ रही हैं जो यह दर्शाती हैं कि दूरदर्शन में अब भी प्रोफेशनलिज्म का अभाव है। ऐसे में हमें रामायण धारावाहिक के निर्माण और उसके प्रसारण से संबंधित कुछ किस्सों को भी जानना चाहिए जो यह दर्शाते हैं कि कैसे उस दौर में रामायण को 'हिंदू एलिमेंट' बताते हुए उसे 'सेक्यूलर' बनाने की कवायद की गई थी

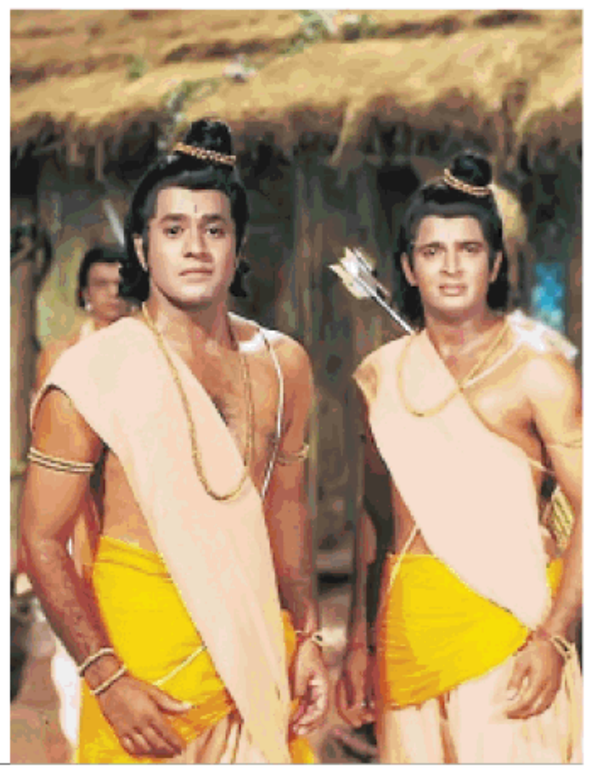

जब देश भर में लॉकडाउन की घोषणा हुई तो दूरदर्शन ने रामायण और महाभारत समेत कई पुराने, परंतु अत्यंत लोकप्रिय रहे धारावाहिक शुरू करने का फैसला लिया। 28 मार्च से रामानंद सागर निर्देशित रामायण को दूरदर्शन के नेशनल चैनल पर दिखाया जाने लगा और बीआर चोपड़ा निर्देशित महाभारत को डीडी भारती पर। प्रसारण के पहले ही सप्ताह में दूरदर्शन के दर्शकों की संख्या में अभूतपूर्व बढ़ोतरी दर्ज की गई। दूसरे सप्ताह में भी दर्शकों की संख्या बनी रही और लोग रामायण और महाभारत देखते रहे। ये तब हो रहा है जब कुछ निजी चैनल भी अलग-अलग समय पर अलग-अलग लोगों के निर्देशन में बने रामायण और अन्य धार्मिक धारावाहिक दिखा रहे हैं। इससे एक बात का पता चलता है कि दूरदर्शन पर अगर अच्छा कंटेंट दिखाया जाए तो उसके पास दर्शक आएंगे। दूरदर्शन को अगर प्रोफेशनल तरीके से चलाया जाए और योजनाबद्ध तरीके से सीरियल बनवा कर प्रसारित किए जाएं तो उसे चलाने के लिए प्रत्यक्ष रूप से सरकारी मदद की और अप्रत्यक्ष रूप से करदाताओं के पैसे की मदद नहीं चाहिए होगी। अपने कार्यक्रमों से वह न केवल अपना खर्च निकाल सकता है, बल्कि मुनाफा भी कमा सकता है।

लेकिन अभी जिस तरह रामायण का प्रसारण हो रहा है उसे देखकर तो यही लगता है कि दूरदर्शन में प्रोफेशनलिज्म का अभाव है। कभी यह धारावाहिक नियत समय से दस मिनट पहले खत्म हो जा रहा है तो कभी नियत समय से बीस मिनट अधिक दिखाया जाता है। इस बारे में प्रसार भारती के सीईओ शशि शेखर ने ट्वीट किया-रामायण के एपिसोड्स की लंबाई अधिक है और रात दस बजे की सीमा को ध्यान में रखकर एडिट करने से महत्वपूर्ण दृश्यों के गुम हो जाने का खतरा है।

सवाल एडिट करने का है ही नहीं। सवाल कट प्वाइंट्स निकालकर ब्रेक लेने का है। रामानंद सागर की जीवनी में उल्लिखित तथ्यों के मुताबिक रामायण का एक एपिसोड 35 मिनट का है। ऐसा प्रतीत होता है कि अभी दिखाए जा रहे रामायण में मूल सीरियल के दो एपिसोड को जोड़कर दिखाया जा रहा है, क्योंकि अवधि 70 मिनट और विज्ञापन जोड़कर 80 मिनट तक पहुंच जा रही है। बगैर एडिट किए भी ऐसे कितने ही कट प्वाइंट्स सीरियल में हैं जहां स्टिंग लगाकर ब्रेक किया जा सकता है। लेकिन इसके लिए दूरदर्शन के किसी जिम्मेदार व्यक्ति को सारे एपिसोड देखने होंगे। लेकिन लगता है रामायण के निर्माण के समय दूरदर्शन जैसा था वैसा ही है और वहां बहुत कुछ बदला नहीं है।

रामायण निर्माण के दौरान आने वाली बाधाओं का रामानंद सागर के पुत्र प्रेम सागर ने विस्तार से जिक्र किया है। हुआ यह कि राजीव गांधी जब प्रधानमंत्री थे तो एक दिन वह काम करके घर लौटे और टीवी देखने लगे। दूरदर्शन पर चलने वाले कार्यक्रमों से उन्हें निराशा हुई। उन्होंने तत्कालीन सूचना और प्रसारण मंत्री वीएन गाडगिल को फोन लगाकर शिकायत की। गाडगिल को सलाह दी कि दूरदर्शन को अपने कार्यक्रमों में विविधता लानी चाहिए और उसे पौराणिक ग्रंथों और दर्शन पर आधारित सीरियल बनाने चाहिए। इस क्रम में राजीव गांधी ने रामायण और महाभारत का नाम लिया। गाडगिल ने प्रधानमंत्री की बात सुनी और सरकारी कामकाज की पद्धति अपनाते हुए सूचना और प्रसारण सचिव एसएस गिल को प्रधानमंत्री की भावना से अवगत करा दिया। सचिव ने इसे आगे बढ़ाते हुए दूरदर्शन के अधिकारियों को बता दिया। आनन-फानन में प्राइवेट प्रोड्यूसर्स स्कीम बनाई गई और रामानंद सागर से रामायण बनाने को कहा गया। उनसे कहा गया कि चार एपिसोड का पायलट बनाकर पेश करें। उन्होंने बनाकर दे दिया। लेकिन उस पर कोई फैसला नहीं हो पा रहा था। गाडगिल के अलावा दूरदर्शन के तत्कालीन महानिदेशक भास्कर घोष एक तरफ प्रधानमंत्री को खुश करना चाहते थे, लेकिन दूरदर्शन पर रामायण के प्रसारण में बाधाएं भी डाल रहे थे।

इस बीच एक बेहद दिलचस्प घटना हुई। सूचना और प्रसारण सचिव एसएस गिल, रामायण के बनाए चार एपिसोड के पायलट का एक एपिसोड घर ले आए। उन्होंने अपनी मां को दिखाया। उसे देखते ही उनकी मां भाव-विभोर हो गईं। उन्होंने बेटे से पूछा कि यह कार्यक्रम कब से शुरू हो रहा है। गिल ने इसी बाधाओं की चर्चा की। उनकी मां ने कहा कि किसी कीमत पर इसे दिखाओ। अगले दिन गिल कार्यालय गए। शाम को लौटकर आए तो पता चला कि उनकी मां ने कुछ खाया-पीया नहीं है। गिल जब मां के पास पहुंचे तो उन्होंने धमकाते हुए कहा कि अगर रामायण का प्रसारण शुरू नहीं हुआ तो वह अन्न-जल त्याग देंगी। गिल परेशान थे, लेकिन इस बीच सूचना और प्रसारण मंत्री बदल गए और अजीत पांजा नए मंत्री बन गए, कई अफसरों का भी तबादला हो गया। अब गिल के सामने एक अवसर था, उन्होंने फौरन रामानंद सागर के प्रस्ताव की मंजूरी का पत्र बनवा दिया। रामानंद सागर उसे लेने दिल्ली पहुंचे, एक प्रोग्राम ऑफिसर ने उन्हें अप्रूवल लेटर देकर सलाह दी कि वह फौरन पत्र लेकर मुंबई चले जाएं। उन्होंने ऐसा ही किया। जब यह अप्रूवल लेटर दूरदर्शन से होता हुआ मंत्रालय पहुंचा तो हंगामा मच गया, लेकिन अब कुछ हो नहीं सकता था। तिथि तय हो चुकी थी और 25 जनवरी 1987 को रामायण का पहला एपिसोड सुबह नौ बजे दूरदर्शन पर प्रसारित हुआ। कई मुश्किलों के बावजूद धारावाहिक लगातार 78 सप्ताह तक चला।

सबसे बड़ी बाधा तो तब आई जब रामायण के एक्सटेंशन की जरूरत महसूस हुई। घोष ने रामायण को 26 एपिसोड का एक्सटेंशन देने से मना कर दिया। रामानंद सागर ने सीधे एचकेएल भगत से बात की जो पांजा के बाद सूचना और प्रसारण मंत्री बने थे। उन्होंने अनुमति दे दी, क्योंकि वह समझ रहे थे कि इसे बंद करने से जनता बुरी तरह से नाराज हो जाएगी। लेकिन घोष लगातार रामानंद सागर पर इस बात के लिए दबाव बना रहे थे कि रामायण से 'हिंदू एलिमेंट' कम करके इसको 'सेक्यूलर' बनाएं, ताकि इसको अलग-अलग विचार के लोग भी देख सकें। रामानंद सागर ने भास्कर घोष की बात नहीं मानी और किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया। उन्होंने भास्कर घोष से बचने की एक युक्ति निकाली। रामानंद सागर हर एपिसोड का टेप प्रसारण समय से चंद घंटे पहले दूरदर्शन को सौंपने लगे, ताकि किसी तरह का बदलाव ही संभव न हो सके। इस तरह से वह रामायण को कथित सेक्यूलर होने से बचाने में कामयाब रहे। दूरदर्शन की बुनियाद में जब ऐसे अफसर रहे हों जो रामायण में भी 'हिंदू एलिमेंट' ढूंढते हों, जो उसके निर्माता पर इस बात के लिए दबाव बनाएं कि रामकथा से 'हिंदू एलिमेंट' कम किए जाएं तो उसकी इमारत कैसी बनी होगी, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। दूरदर्शन को स्वायत्तता देने के लिए प्रसार भारती का गठन किया गया। आज की स्थिति क्या है कि प्रसार भारती में न चेयरमैन है, न बोर्ड में अधिकांश सदस्य। प्रसार भारती की जिम्मेदारी है कि वह दूरदर्शन में प्रोफेशनलिज्म लाए। सूचना और प्रसारण मंत्रालय की जिम्मेदारी है कि वह प्रसार भारती का गठन सुनिश्चित करे। लेकिन मंत्रालय में बैठे यथास्थितिवाद के पुरोधाओं को फिक्र ही नहीं कि प्रसार भारती बोर्ड का गठन हो। ये देखना दिलचस्प होगा कि रामायण, महाभारत, चाणक्य और बुनियाद जैसे सीरियल चलाने से दूरदर्शन को जो दर्शक मिले थे उन्हें वह कब तक जोड़कर रख सकते हैं। अगर जोड़े रख सके तो न सिर्फ दूरदर्शन का भला होगा, बल्कि करदाताओं के पैसे भी बचेंगे।

कोरोना की सीख

जीवन का पाठ पढ़ाती महामारी

लालजी जायसवाल

महात्मा गांधी का कथन है कि पृथ्वी हमें अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए सभी प्रकार के साधन प्रदान करती है, लेकिन लालच को पूरा करने के लिए नहीं। द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत समूचा वैश्विक जगत आर्थिक विकास की होड़ में इस कदर शामिल हुआ कि प्रकृति और जीव संबंध को धीरे-धीरे दरकिनार करता चला गया। प्रकृति का दोहन करना वह अपना अधिकार मान बैठा। प्रकृति में आज ऐसी कोई चीज नहीं जिसका मानव ने व्यापार न किया हो फिर वह चाहे हवा हो अथवा पानी। उसका यही लालच आज समस्त मानव जाति के लिए काल बनकर विश्व भर में लाखों लोगों की जान ले चुका है। मनुष्य ने प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए किया होता तो ठीक था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

मनुष्य ने प्रकृति को अपना गुलाम बनाना चाहा, लाभ के लिए जंगल काटे, जंगलों में आग लगाई, खनन किया, पानी का दोहन भी किया गया, प्रदूषण फैलाया। प्रकृति के कार्यों में मनुष्य ने व्यवधान पैदा करना शुरू किया। ऐसा करते हुए मनुष्य को भरोसा हो गया था कि उसने प्रकृति को पूरी तरह पराजित कर दिया है। लेकिन वह शायद भूल कर बैठा कि प्रकृति शाश्वत है। परिणामस्वरूप प्रकृति द्वारा प्रहार तो होना ही था। एक सर्वेक्षण के माध्यम से स्पष्ट हुआ कि करीब 47 फीसद लोगों ने माना है कि प्रकृति का यह मानव को एक संदेश मात्र है कि अगर अब भी नहीं सुधरे तो समूल विनाश ज्यादा दूर नहीं है। लिहाजा प्रकृति पहले भी अनेक आपदाओं के माध्यम से मानव जाति को चेतावनी देती रही है। जैसे बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू, निपाह वायरस, सार्स, मर्स आदि। इसी क्रम में कोरोना वायरस भी अपना भयावह तांडव विश्व में दिखा रहा है।

महामारी केवल विनाशकारी ही नहीं होती, वह मानव जाति के लिए एक बड़ी शिक्षा देने का भी कार्य करती है, लेकिन उपभोक्तावादी मानसिकता और आर्थिक विकास की होड़ में लगे अहंवादी मानव ने कभी प्रकृति की शिक्षा से अपने मानस को परिवर्तित करने की कोशिश नहीं की। आज कोरोना रूपी वैश्विक महामारी मानव जाति को सीख दे रही है कि लालची मत बनो, प्रकृति का विनाश मत करो, दिखावा प्रेमी मत बनो। इस आपदा ने मानव को यह सिखाने का कार्य भी किया है जो महान योगी, ऋषि हजारों वर्ष पहले यह संदेश दिया करते थे कि स्वयं तथा वातावरण को स्वच्छता प्रदान करो। शायद यही कारण था कि भारतीय पारंपरिक समाज में लोग अक्सर अपने साथ अंगोछा यानी तौलिया रखा करते थे और खांसते समय उससे मुंह ढक लेते थे।

वर्ष 1991 के बाद से देश में आर्थिक उदारीकरण की शुरुआत हुई जिसके बाद इंसान की आवश्यकता निरंतर बढ़ती गई, लेकिन वर्तमान लॉकडाउन ने जीवन के आदर्श रूप को दिखाने का प्रयास किया है। भारत के ऋषियों-मुनियों ने सदैव यह संदेश दिया है कि स्वयं खाने से पहले देखो कि आसपास कोई भूखा तो नहीं है और आज इस आपात स्थिति में भी यही संदेश मुखर होता है। क्या आपको नहीं लगता कि हम पुनः अपने आदर्श जीवन की ओर लौट रहे हैं। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप समूचा विश्व आज कहां पर है? इसके परिणाम से हमने क्या पाया और क्या खोया? इसलिए आज की परिस्थिति ने हम सबको स्थानीयकरण की ओर सोचने को फिर विवश कर दिया है। समय आ गया है कि हमें स्थानीय वस्तुओं को प्राथमिकता देनी चाहिए। प्रकृति मनुष्य जाति से सदैव अनुकूल आचरण की अपेक्षा करती है, लेकिन मनुष्य के अत्यधिक उपभोक्तावादी होते जाने के कारण उसे स्वयं ही समय-समय पर प्रकृति का कोपभाजन होना पड़ा है।

(लेखक इलाहाबाद विवि में शोधार्थी हैं)

ट्वीट-ट्वीट

बस इतना सा फर्क है कि नरेंद्र मोदी कहते हैं कि कोरोना वॉरियर्स को सम्मान दीजिए, क्योंकि वही असली हीरो हैं जो देश को बचा रहे हैं और सोनिया गांधी कहती हैं कि भीलवाड़ा में कोरोना के खिलाफ बेहतर लड़ाई का सारा श्रेय उनके बेटे राहुल को दीजिए, क्योंकि उन्होंने कोरोना के बारे में बताया था।

सुशांत सिन्हा@SushantBSinha

प्रधानमंत्री मोदी जी से गुजारिश है कि वह अमेरिका से भारत को एन-95 मास्क देने के लिए कहें, क्योंकि हमने भी उन्हें क्लोरोक्विन देने में उदारता दिखाई। भारत को एन95 मास्क की दरकार है जिसके निर्यात पर अमेरिका ने प्रतिबंध लगाया हुआ है। यह समय एक दूसरे के सहयोग का है।

मनीष मुंदड़ा@ManMundra

एक बात पर गौर कीजिए कि खासतौर से भाजपा विरोधी दलों के मुख्यमंत्री कैसे लॉकडाउन की मियाद बढ़ाने को लेकर उतावले हो रहे हैं। इस तरह वे अपने राज्यों को तो कोरोना से महफूज बनाना चाहते हैं, भले ही इससे लोगों का रोजगार छूट जाए। इसका राजनीतिक ठीकरा भी मोदी पर फोड़ा जा सकेगा। चुनावी नजरिये से यह बहुत कारगर नीति मालूम पड़ती है।

मिन्हाज मर्चेंट@MinhazMerchant

डब्ल्यूएचओ ने कहा कि जल्द लॉकडाउन जल्द खोलने के घातक परिणाम होंगे। वह अब चुप ही रहे तो अच्छा है। जब बोलना चाहिए था तब भी या तो चुप थे या गलत बोल रहे थे।

ऋचा अनिरुद्ध@richaanirudh

कोरोना से होने वाली मौत के आंकड़े में मध्य प्रदेश दूसरे पायदान पर पहुंच गया है। बीते बीस दिनों से राज्य का नेतृत्व सिर्फ एक व्यक्ति द्वारा बिना किसी कैबिनेट मंत्री के ही किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में संपूर्ण सरकार उपयोगी होती।

जयवर्धन सिंह@JVSinghINC

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने में देशव्यापी लॉकडाउन प्रभावी साबित हो रहा है?

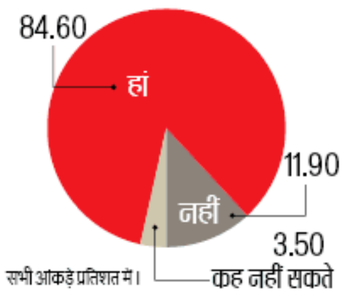

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों पर प्रतिबंध लगाने में और सख्ती की जानी चाहिए?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

टहलो बच्चू चौक पर लिए हाथ में हाथ,
रहो झेलते शौक से बंदी की सौगात!
बंदी की सौगात न मानोगे यदि कहना,
छोड़छाड़ सब काम बंद घर में ही रहना।
अगर चाहिए जान वक्त है भाई संभलो,
वरना घर में बंद रहो कमरे में टहलो!!

– ओमप्रकाश तिवारी

रचनाकर्म

किताब से छवि बनाने की कोशिश

जयप्रकाश पांडे

जयराम रमेश ने इस पुस्तक में कृष्ण मेनन की पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा जवाहरलाल नेहरू के साथ उनके संबंधों पर विस्तार से लिखा है...

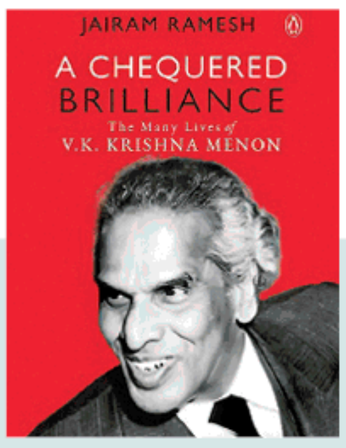

पुस्तक : अ चेकर्ड ब्रिलिएंस, द मेनी लाइव्स ऑफ वी के कृष्ण मेनन
लेखक : जयराम रमेश
प्रकाशक : पेंग्विन रेंडम हाउस, नई दिल्ली
मूल्य : 999 रुपये

पिछले दिनों इंदिरा गांधी पर दो किताबें लिखकर चर्चा में आए कांग्रेस नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री जयराम रमेश ने अब भारत के रक्षामंत्री रहे वी के कृष्ण मेनन पर भारी-भरकम किताब लिख डाली है। इस पुस्तक में रमेश ने मेनन की भारतीय जनमानस में दरकी हुई छवि को दुरुस्त करने का परोक्ष प्रयत्न किया है। 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान कृष्ण मेनन देश के रक्षामंत्री थे और उस युद्ध में पराजय के लिए उनके कई फैसलों को जिम्मेदार माना गया। उस दौर में प्रधानमंत्री नेहरू पर कृष्ण मेनन को हटाने को लेकर बहुत दबाव था और आखिरकार पंडित जी को उन्हें अपने मंत्रिमंडल से हटाना पड़ा था। भारतीय जनमानस में कृष्ण मेनन की चीन से हार के लिए जिम्मेदार नेता की छवि कायम है। रमेश ने इसमें कृष्ण मेनन की पारिवारिक पृष्ठभूमि, धनाढ्य मलयाली परिवार का परिवेश, उनकी बहनों की विद्वता से लेकर जवाहरलाल नेहरू के साथ उनके संबंधों पर विस्तार से लिखा है। इस विस्तार का प्रयोजन यह भी हो सकता है कि लेखक यह चाहता हो कि कृष्ण मेनन की स्थापित छवि से अलग उनकी छवि का निर्माण कर सकें,ताकि उनका समग्रता में मूल्यांकन हो सके। कृष्ण मेनन पर एनी बेसेंट का बहुत प्रभाव था। यह जानना भी दिलचस्प है कि एनी बेसेंट के साथ दो कृष्ण थे- एक कृष्ण मेनन और दूसरे जे कृष्णमूर्ति। लेकिन कालांतर में दोनों एनी बेसेंट से अलग हो गए। कृष्ण मेनन का मतभेद इस वजह से हुआ कि उन्हें लगता था कि एनी बेसेंट भारत की पूर्ण स्वतंत्रता की पक्षधर नहीं हैं।

इस पुस्तक में जयराम रमेश ने उपलब्ध दस्तावेजों के आधार पर यह बताने की कोशिश की है कि 1930 औप 1940 के दौर में कृष्ण मेनन ने ग्रेट ब्रिटेन में रहते हुए भारत की स्वतंत्रता के लिए माहौल बनाया। वहां के पढ़े-लिखे लोगों के बीच भारत की स्वतंत्रता को लेकर एक बौद्धिक मुहिम चलाई। जयराम रमेश इस तथ्य को भी पाठकों के सामने पेश करते हैं कि आजादी के बाद भी कृष्ण मेनन ने वैश्विक स्तर पर भारत की बेहतर छवि पेश करने की कई कामयाब कोशिशें कीं। इस संदर्भ में वह 1957 का उदाहरण देते हैं, जब वह बताते हैं कि कृष्ण मेनन ने संयुक्त राष्ट्र में सबसे लंबा भाषण देने का कीर्तिमान बनाया था, जब वह लगातार दो दिनों तक आठ घंटे तक बोलते रहे थे और कश्मीर के मसले पर भारत के स्टैंड को दुनिया के सामने रखा था। इसके अलावा, जयराम रमेश 1961 की गोवा मुक्ति में कृष्ण मेनन को प्रमुख भूमिका निभाने वाला नेता भी मानते हैं और उस दौरान की उनकी गतिविधियों को रेखांकित करते हैं। अभी तक यह माना जाता रहा है कि संविधान सभा का आइडिया नेहरू का था, लेकिन इस पुस्तक से संकेत मिलता है कि भारत का संविधान कैसे बने, इसकी चर्चा नेहरू, मेनन और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में उनके मार्गदर्शक हेराल्ड लॉस्की के बीच हुई थी। कहा तो यहां तक गया है कि आजादी के दौरान भारत और ग्रेट ब्रिटेन के बीच जिस दस्तावेज पर दस्तखत हुए, उसे बनाने में भी मेनन की बड़ी भूमिका थी।

इस किताब में मेनन और नेहरू के रिश्तों पर भी जयराम ने विस्तार से लिखा है। इसे व्याख्यायित करने के लिए रमेश ने दोनों के पत्रों को आधार बनाया है और उसे बहुधा विस्तार से उद्धृत भी किया है। मेनन और नेहरू के पत्रों को पढ़ने के बाद एक बात साफ तौर पर रेखांकित की जा सकती है कि नेहरू हमेशा मेनन पर बहुत भरोसा करते थे और उनसे हर बात साझा करते थे। मेनन भी नेहरू पर भरोसा करते थे, लेकिन साथ ही वह नेहरू से अपनी नजदीकी को खुद को बढ़ाने के लिए भुनाते भी चलते थे। मेनन पर इतने विस्तार से लिखकर रमेश ने पाठकों के धैर्य की परीक्षा लेने का उपक्रम भी किया है।

यह पुस्तक बहुत शोध और श्रम से लिखी गई है। आम पाठकों से अधिक इस पुस्तक में उनकी रुचि हो सकती है, जो 1930 से लेकर 1970 तक के दौर की विदेश नीति के साथ-साथ नेहरू और तत्कालीन इतिहास में दिलचस्पी रखते हों।

विवादों से बनता इतिहास

कन्हैया झा

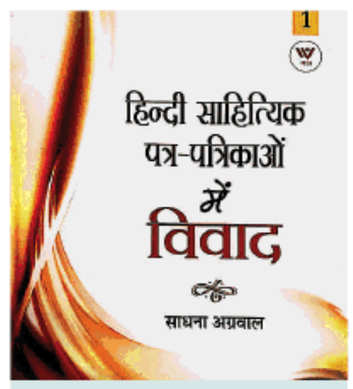

समीक्ष्य कृति : हिंदी साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में विवाद (दो खंड)
लेखक : साधना अग्रवाल
प्रकाशक : यश पब्लिशर्स, नई दिल्ली
मूल्य : रु 795 (दोनों खंड)

हिंदी साहित्य में वाद लविवाद का बेहद लंबा इतिहास रहा है। इन विवादों में कई बार बेहद सार्थक चर्चा हुई है और उससे साहित. को एक रास्ता भी मिला है। लेकिन कई विवाद ऐसे रहे हैं जो धुंए की तरह उठे और फिर उसी की तरह साहित्यिक वायुमंडल में विलीन हो गए। साधना अग्रवाल ने बेहद श्रमपूर्वक हिंदी साहित्य के विवादों को एक जगह समेटा है। दो खंडो में प्रकाशित इस पुस्तक में साधना अग्रवाल ने साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में उठे विवादों तक ही अपने को सीमित रखा है। इस पुस्तक की शुरुआत हिंदी-उर्दू विवाद से होती हैं जिसमें लेखिका ने राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद और भारतेन्दु के बीच चले विमर्श को समेटा है। इसके अलावा एक और दिलचस्प विवाद इस पुस्तक में है पांडे बेचन शर्मा उग्र की कहानी चॉकलेट को लेकर। इस कहानी को लेकर तत्कालीन हिंदी साहित्य जगत में खासा विवाद उठा था। ये कहानी मतवाला पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। विवाद इतना बढ़ा कि ये महात्मा गांधी तक जा पहुंचा। पूरा विवाद बेहद दिलचस्प है।

हिंदी साहित्य में कल्पना पत्रिका में दिनकर की कृति उर्वशी पर उठा विवाद हिंदी साहित्य के समृद्ध विवादों में से एक माना जाता है। इस विवाद की पृष्ठभूमि भी बेहद रोचक है। दरअसल उर्वशी पर लिखी भगवत शरण उपाध्याय की समीक्षा का संपादित रूप पत्रिका में प्रकाशित होना था लेकिन संपादक मंडल के सदस्य मुनीन्द्र अवकाश पर चले गए और समीक्षा जस की तस छप गई। उसके बाद तो कई अंकों में इसके पक्ष और विपक्ष में लेख प्रकाशित हो रहे। इसके अलावा भी इस खंड में पटना में 1970 में आयोजित युवा लेखक सम्मेलन पर उठे विवाद को भी संकलित किया गया है। हाल के दिनों में राजेन्द्र यादव और विभूति नारायण राय को लेकर उठे विवाद भी इस पुस्तक में हैं। दूसरे खंड में उन विवादों से जुड़ी मूल कचनाओं और प्रतिक्रियाओं को रखा गया है। इन दोनों पुस्तकों से साहित्य में विवाद का एक इतिहास बनता है।

आशीष व्यास
संपादक, नई दुनिया, मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश डायरी

कोरोना के मकड़जाल में फंस गया इंदौर

मध्य प्रदेश की व्यावसायिक राजधानी इस बार गर्व नहीं, शर्म के नए अध्याय को लेकर देश के सामने उपस्थित है। शनिवार सुबह तक कोरोना वायरस संक्रमितों की संख्या 249 हो चुकी है और इसी शहर में मौत से मात खाने वालों का आंकड़ा 30 पर जा पहुंचा है। यह कभी नहीं भुलाया जा सकता कि इसी शहर के एक हिस्से में चिकित्सकों और स्वास्थ्यकर्मियों को धिक्कारा गया, यह भी हमेशा याद रखा जाएगा कि कैसे और क्यों पुलिसकर्मियों को निशाना बनाकर पथराव किया गया। भुलाया तो यह भी नहीं जाना चाहिए कि प्रशासनिक गलतियों का बड़ा पिटारा इंदौर में ही खोला-बंद किया गया, याद यह भी रखा जाना चाहिए कि राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं ने इंदौर को सुधरने-संवरने का अवसर ही नहीं दिया। चिंता और चुनौती का ऐसा ही 'चक्रव्यूह' अब भोपाल में भी दिखाई देने लगा है। मान लिया कि इंदौर से ढेरों गलतियां हुई हैं। लेकिन भोपाल में भी उसे क्यों दोहराया गया? ग्वालियर समझ नहीं पाया और जबलपुर संभलते-संभलते फिर चपेट में आने लगा। जान लिया कि हम, हमारा पूरा प्रदेश अब खतरे में है। कोरोना के संदर्भ में हम देश के लिए खतरा बन गए या बनते जा रहे हैं। हमने अबकी बार देश का नाम ऊंचा करने के बजाय नीचा कर दिया है।

अब आगे क्या?

केंद्र से लेकर राज्य तक, क्या हर कोई दूर से बैठकर दिशानिर्देश देगा? टीका-टिप्पणियां करेगा? आरोप-प्रत्यारोप भी करेगा? लेकिन यदि इंदौर, भोपाल या फिर मुरैना-खरगोन कहीं भंवर में फंस गए हैं तो उन्हें बाहर कौन निकालेगा? कोई माने या ना माने, फिलहाल कोरोना के जाल में बुरी तरह उलझ चुके इंदौर की हालत उस मकड़ी की तरह हो गई है जिसे खुद ही जाल बुनकर अपने आप को बचाना है और फिर खुद ही इस मकड़जाल से बाहर भी आना है। जब इंदौर में 'संक्रमण' फैल रहा था तो राजधानी के अफसर भोपाल में बैठकर आदेश दे रहे थे। थिंक टैंक की 'पेपर-प्लानिंग' और मैदानी अमले में जोश-होश के साथ काम करवाने वाले अफसरों की फौज 'गायब' थी। आज यदि इंदौर 'मिनी मुंबई' के रूप में मुंबई के बाद देश में दूसरे स्थान पर है, तो वल्लभ भवन से लेकर विधानसभा के गलियारों में चक्कर लगाने वाले महसूस कर सकते हैं कि यहां इंदौर आज भी 'अलग-थलग' ही है। शायद इसीलिए मौत का कलंक लेकर मेडिकल हब कहलाने वाला इंदौर, अब भारत की सीमाएं पार कर इटली जैसे देश को टक्कर देने पर तुला है। इंदौर में कोरोना पॉजिटिव मरीजों की मृत्युदर देश में सबसे ज्यादा यानी 10 प्रतिशत से ज्यादा है। वहीं रोजाना मौत की नई-नई काली-कहानी सुनाने वाले इटली की मृत्युदर 11 फीसद है।

बात भीलवाड़ा मॉडल की: सप्ताह भर से ज्यादा हो गया जब हर कोई कह रहा है कि इंदौर सहित पूरे मध्य प्रदेश में राजस्थान का भीलवाड़ा-मॉडल लागू करें। देश भर में अब सभी को पता है कि भीलवाड़ा ने मरीज मिलते ही लॉकडाउन कर दिया। क्या सिर्फ इतने से ही वहां संक्रमण रुक गया? नहीं, बिल्कुल भी नहीं। यह संभव हुआ राज्य सरकार और जिले के प्रशासनिक तंत्र के बीच पुख्ता समन्वय से। भीलवाड़ा जिला प्रशासन का दावा है कि यहां 27 कोरोना पॉजिटिव मिले थे और अब कोई कोरोना पॉजिटिव मरीज नहीं है। मौत का आंकड़ा भी शून्य है। हालांकि कलेक्टर राजेंद्र भट्ट अब थ्री-लेयर क्वारंटाइन और आइसोलेशन योजना पर काम कर रहे हैं।

स्पीड: पहला मरीज मिलते ही, ढाई घंटे के अंदर पुख्ता लॉकडाउन। ढाई दिन के भीतर ही अस्पताल के 384 कर्मचारी, 400 मरीजों की स्क्रीनिंग और सैंपलिंग। इसमें दो डॉक्टर समेत 18 संक्रमित पाए गए थे। सभी को आसपास हीआइसोलेट-क्वारंटाइन किया गया।

बड़ा सवाल: मध्य प्रदेश में 18 दिन में एक हजार लोगों को ही क्वारंटाइन कर पाए।

क्वारंटाइन किए गए घर के बाहर पहरेदार: मॉनिटरिंग, क्वारंटाइन या आइसोलेट किए गए परिवारों व कंटेनमेंट जोन में हर घर के बाहर पहरेदार। ताकि वे बाहर आकर आस-पड़ोस या कॉलोनी में किसी से संपर्क नहीं कर सकें। संभवतः इस कारण मरीजों की संख्या नियंत्रित रही।

बड़ा सवाल: मध्य प्रदेश में राज्य सरकार और मेडिकल कॉलेज केवल पॉजिटिव मरीजों और मौत के अलग-अलग आंकड़े जारी करते रहे।

कोई सफलता टीमवर्क के बगैर संभव नहीं है। 15 सीनियर डॉक्टर्स की टीम के साथ एक डीएसपी स्तर के अधिकारी 24 घंटे जुटे हुए हैं। जब हम मरीज के साथ-साथ वायरस से लड़ रहे थे तब पुलिस टीम लोगों की आदतों से संघर्ष कर रही थी। इसे इस तरह समझिए, हम सभी तीन दिन का कपड़ा लेकर घर से चले थे। तब से अब तक, यहीं से कपड़े खरीदकर पहन रहे हैं। हमारे परिणामदायक योगदान को देखते हुए घरवालों ने भी कह दिया है कि अब काम पूरा करके ही लौटना।

बड़ा सवाल: इंदौर में कर्फ्यू के पहले ही दिन दूध वितरण को लेकर जन प्रतिनिधियों से सरकारी नुमाइंदों तक ने ऐसा दबाव बनाया कि चंद घंटों में ही तीन बार फैसला बदलना पड़ा।

बहरहाल इंदौर से इटली तक कोरोना संक्रमण से बचाव के तरीके, उपचार, नवाचार और प्रशासनिक व्यवस्था पर नजर डालें तो यह सिर्फ कोरोना संक्रमितों की प्रतिरोधक क्षमता की परीक्षा नहीं है, बल्कि जनता, प्रशासन और सरकार की इम्युनिटी पावर का भी टेस्ट है। इसे यूं भी समझ सकते हैं कि वर्तमान ने हमारे इतिहास को लिखने के लिए अक्षरों का ऐसा झुंड रख दिया है, जो खुद ही शब्द बनकर अपने आप को अर्थ दे रहा है! धीरे-धीरे अपनी पंक्तियां भी खुद ही तय कर रहा है! अब सवाल हमारी समझ और सरोकार का है कि वर्तमान की इस अर्थपूर्ण शिक्षाओं से हम क्या सबक सीखते हैं।

हिमाचल में 45 हजार करोड़ का लघु एवं मध्यम उद्योग संकट में

जासं, शिमला : कोरोना वायरस के कारण उत्पन्न स्थिति ने हिमाचल प्रदेश के लघु एवं मध्यम उद्योग क्षेत्र को संकट में डाल दिया है। पहाड़ी प्रदेश के आर्थिक तंत्र की रीढ़ इस औद्योगिक ढांचे के चरमराने से करीब सवा चार लाख लोगों के सामने दो वक्त की रोजी-रोटी के लाले पड़ जाएंगे। इन छोटे उद्योगों के बंद होने से कई लोगों को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। निवेश की बात करें तो करीब 45 हजार करोड़ रुपये लघु एवं मध्यम उद्योगों में लगे हैं।

अगर रियल एस्टेट सेक्टर को अस्तित्व बचाए रखना और जल्द से जल्द वापस पटरी पर लौटना है, तो उसे सेक्टर में सुधार की ओर तेजी से कदम बढ़ाने होंगे।
— रजनीश कुमार, चेयरमैन, एसबीआइ

कोरोना के इलाज के लिए राज्यों को और वित्तीय पैकेज संभव

मदद ▶ स्वास्थ्य पर अपने जीडीपी का दो फीसद से अधिक खर्च नहीं करते हैं राज्य

खर्च बढ़ाने की स्थिति में गड़बड़ा सकती ही राज्यों की वित्तीय सेहत

राजीव कुमार, नई दिल्ली

कोरोना के इलाज के लिए राज्यों को केंद्र सरकार की तरफ से अभी और वित्तीय पैकेज मिल सकता है। भारत में अधिकतर राज्यों ने चालू वित्त वर्ष (2020-21) में स्वास्थ्य सेवा पर अपने सकल घरेलू उत्पाद का अधिकतम दो फीसद खर्च करने का प्रावधान किया है। लेकिन कोरोना के बढ़ते फैलाव को देखते हुए उन्हें इस खर्च को बढ़ाना होगा। स्वास्थ्य सेवा पर राज्य अपने जीडीपी (जीएसडीपी) का एक फीसद भी अतिरिक्त खर्च करते हैं तो उनका राजकोषीय घाटा तीन फीसद के पार जा सकता है। इसलिए केंद्र की तरफ से उन्हें और वित्तीय मदद दी जा सकती है।

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोविड-19 से लड़ने के लिए 15,000 करोड़ रुपये के हेल्थ पैकेज का एलान किया था। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक इनमें से 4,113 करोड़ रुपये तात्कालिक तौर पर राज्यों को कोविड-19 के इलाज पर खर्च के लिए दिए जा चुके हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15,000 करोड़ रुपये के हेल्थ पैकेज का एलान किया था। प्रतीकात्मक

नेशनल हेल्थ प्रोफाइल-2019 की रिपोर्ट के मुताबिक राज्यों में संक्रमित रोगियों में 69.47 फीसद सांस के तीव्र इंफेक्शन वाले रोगी पाए गए। विशेषज्ञों के मुताबिक कोरोना संकट के दौरान इन रोगियों को ज्यादा सावधान रहने की जरूरत है और राज्यों को भी इन बातों को ध्यान में रखते हुए अपने स्वास्थ्य खर्च की तैयारी रखनी चाहिए। एसबीआइ के समूह मुख्य आर्थिक सलाहकार एसके घोष के मुताबिक देश के प्रमुख 19 राज्य अगर अपने जीएसडीपी के एक फीसद अतिरिक्त खर्च स्वास्थ्य सेवा पर करते हैं तो यह 1.6 लाख करोड़ रुपये होगा, लेकिन इस अतिरिक्त खर्च से इन राज्यों का राजकोषीय घाटा जीएसडीपी का 2.06 फीसद से बढ़कर 3.5 फीसद तक जा सकता है। उनका यह भी कहना है इस दौरान राजकोषीय घाटे की चिंता करना मूर्खता भरा कदम होगा और इस समय में केंद्र सरकार को राज्यों को पूरी मदद करनी चाहिए।

मंत्रालय सूत्रों के मुताबिक केंद्र सरकार की तात्कालिक प्राथमिकता स्वास्थ्य सेवा के लिए वित्तीय पैकेज का इंतजाम करना है और सरकार राज्यों के लिए जल्द ही स्वास्थ्य खर्च के लिए एक और पैकेज दे सकती है। ओईसीडी के आंकड़ों के मुताबिक स्वास्थ्य सेवा पर भारत का खर्च अपने जीडीपी का 3.6 फीसद है तो अमेरिका अपने जीडीपी का 16.9 फीसद, जर्मनी 11.2 फीसद, फ्रांस 11.2 फीसद, जापान 10.9 फीसद, ब्राजील 9.2 फीसद, रूस 5.3 फीसद तो चीन पांच फीसद खर्च करता है। भारत में पिछले पांच सालों में प्रति व्यक्ति के हिसाब से स्वास्थ्य सेवा पर होने वाले खर्च में लगभग दोगुनी बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2015 में प्रति व्यक्ति यह खर्च 1,008 था जो 2019 में बढ़कर 1,944 रुपये हो गया। फिर भी हमारे देश 10,000 व्यक्ति पर अस्पतालों में 8.5 बेड की उपलब्धता है। जापान और कोरिया में प्रति 10,000 व्यक्ति पर 100 बेड उपलब्ध हैं।

अनबिके घरों की सुनिश्चित करें जल्द बिक्री, सोच बदले रियल एस्टेट सेक्टर

▶ एसबीआइ चेयरमैन बोले - दाम बढ़ने के इंतजार में घर अनबिका रखने का अब औचित्य नहीं

नई दिल्ली, प्रेट्र : देश के सबसे बड़े कर्जदाता भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआइ) ने रियल एस्टेट सेक्टर से कहा है कि वह अनबिके घरों की जल्द से जल्द बिक्री सुनिश्चित करे और अपने अकाउंट्स का स्तर गिरने नहीं दे। बैंक के चेयरमैन रजनीश कुमार ने रियल एस्टेट सेक्टर की संस्था नारेडको के साथ वर्चुअल यानी ऑनलाइन कॉन्फ्रेंस के माध्यम से बातचीत करते हुए कहा कि सेक्टर को कारोबार के बारे में सोच बदलनी होगी।

रजनीश कुमार ने कहा, 'इनवेंट्री जल्द से जल्द समाप्त की जानी चाहिए। हमें लगता था कि दाम बढ़ेंगे, लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ है। एक वक्त ऐसा भी था जब बाजार में पहला घर खरीदने वालों और निवेशकों का तांता लगा रहता था और आप सिर्फ पांच वर्षों में अपनी लागत के मुकाबले दोगुनी कमाई कर सकते थे। लेकिन अब वे दिन लौटकर आने वाले नहीं हैं।'

इसके साथ ही उन्होंने रियल एस्टेट कंपनियों को यह सलाह भी दी कि उद्योग को खर्च घटाने और जल्द से जल्द से लाभ में आने की कोशिश करनी चाहिए। कुमार का कहना था कि रियल एस्टेट सेक्टर को इस बारे में सोचना होगा कि निर्माण लागत कैसे घटाई जाए और निर्माण के कच्चे माल की लागत को कैसे नियंत्रण में रखा जाए। हमें राज्य और स्थानीय सरकारी निकायों को यह बात समझानी होगी कि अब यह सेक्टर वह दुधारू गाय नहीं है जिसे कोई अनंत काल तक दुहता रहे। अब हमें निर्माण लागत में कमी लानी ही होगी। एसबीआइ चेयरमैन का कहना था कि सबका लक्ष्य हाउसिंग सेक्टर को सबके लिए अफोर्डेबल बनाने, बिल्डिंग निर्माण में लगने वाला समय घटाने और उन्हें जल्द से जल्द बेचने पर होना चाहिए। दाम बढ़ने के इंतजार में अब अनबिके घरों को रोककर रखने का कोई फायदा नहीं है।

लक्जरी घरों को लेकर उत्साह ठंडा

नई दिल्ली, प्रेट्र : लक्जरी घरों को लेकर हाल के वर्षों में खरीदारों का उत्साह ठंडा सा रहा है। एक रियल एस्टेट वेबसाइट के मुताबिक पिछले तीन वर्षों के दौरान तीन करोड़ रुपये से ऊपर के जितने फ्लैट बने हैं, उनमें से सिर्फ 45 प्रतिशत को खरीदार मिले हैं। निवेशक इस बाजार से इसलिए दूर हैं, क्योंकि उन्हें अच्छे रिटर्न की उम्मीद नहीं है। साइट का कहना था कि जनवरी, 2017 से दिसंबर, 2019 के दौरान नौ प्रमुख शहरों में 13,290 फ्लैट लांच किए गए। इनमें से इस वर्ष जनवरी तक सिर्फ 5,926 घर ही बेचे जा सके हैं।

जहां तक रियल एस्टेट सेक्टर के बारे में लोगों की सोच का सवाल है, तो एसबीआइ प्रमुख का कहना था कि रियल एस्टेट रेगुलेशन एंड डेवलपमेंट एक्ट (रेरा) आने के बाद कुछ चीजों में सुधर हुआ है। लेकिन कॉरपोरेट गवर्नेंस के मामले में सेक्टर को अभी भी बहुत कुछ करने की जरूरत है। कुमार ने कहा, 'यह मैं नहीं कह रहा। लेकिन रियल एस्टेट सेक्टर को लेकर यह सोच बेहद आम है कि इसमें जमकर मुनाफाखोरी होती है और बहुत से ढंके-छुपे लेनदेन होते हैं। लोग यह भी मानते हैं कि इसमें कोई भी सौदा पूरी तरह खरा नहीं होता है। मैं नहीं जानता कि यह सब सच है या सिर्फ लोगों की ऐसी सोच है। लेकिन उद्योग को अपने बारे में इस तरह की सोच को खत्म करने की जिम्मेदारी उठानी ही होगी।'

लोन अदायगी की अवधि तीन महीने से आगे बढ़ाए जाने के बारे में कुमार का कहना था कि इस बारे में आरबीआइ को फैसला लेना है। लेकिन अगर जरूरत पड़ी तो इंडियन बैंक्स एसोसिएशन आइबीए के माध्यम से वह आरबीआइ से आग्रह करेंगे कि इसे छह महीने तक बढ़ाया जाए। इकोनॉमी में रियल एस्टेट सेक्टर की भूमिका के बारे में उन्होंने कहा कि वर्तमान में यह जीडीपी में 15 प्रतिशत तक की हिस्सेदारी रखता है और लाखों लोगों को रोजगार देता है।

वायरस की क्रिया और उस पर हमारी प्रतिक्रिया कुछ ऐसी है...

अगर वक्त इतना मुश्किल और गंभीर नहीं होता तो ग्लोबल इकोनॉमी पर कोरोना महामारी के प्रभावों के बारे में आमतौर पर और निवेश समुदाय में खासतौर पर जिस तरह की भविष्यवाणियां की जा रही हैं, मैं उन पर जोर-जोर से हंसता। इन सभी भविष्यवाणियों की शुरुआत, जाहिर है, गोल्डमैन सैक्श की तरफ से फरवरी मध्य के आसपास हुई थी, जब उसने कहा था कि वैश्विक विकास दर पर इस महामारी का ग्लोबल जीडीपी के सालाना औसत के 0.1 या 0.2 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होगा। इन भविष्यवक्ताओं का यह भी कहना था कि अगर परिस्थितियों में उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुए तो कोरोना वायरस का असर उन्हीं कंपनियों तक सीमित रहेगा जिनका चीन के बाजारों से बहुत ज्यादा लेनादेना है। और जैसे ही आप अपनी भविष्यवाणियों को अगर परिस्थितियों में उल्लेखनीय बदलाव नहीं हुए तो के घेरे में ले लेते हैं, आप पूरी तरह सुरक्षित हो जाते हैं। अगर परिस्थितियों में उल्लेखनीय बदलाव नहीं हुए तो के साथ आप कुछ भी भविष्यवाणी कर सकते हैं। और अगर आपकी भविष्यवाणी चुनौती देने लायक स्थिति में आ फंसती है तो आप आसानी से यह कहकर निकल सकते हैं कि परिस्थितियां बदल गईं।

आजकल विश्लेषकों का एक नया हुजूम सा उमर आया है जो पिछले कुछ दिनों समय के दौरान शेयर बाजारों के भरभराने में ऐसे संकेत खोज रहा है कि क्या बाजार निचले स्तर तक गिर चुके हैं या इनमें गिरावट अभी बाकी है। इन सबके बीच कुछ भविष्यवक्ता तो सबसे ज्यादा बेतुके नजर आते हैं। उनके सारे तर्कों का आधर इस तरह की बातों पर टिका होता है कि जब शेयर बाजार अपने शीर्ष से 25 प्रतिशत तक टूट जाएं तो मान लेना चाहिए कि गिरावट अपने चरम पर पहुंच चुकी है और अब खरीदारी का वक्त है।

लोग धड़ल्ले से ऐसी अतार्किक बातें लिख रहे हैं और सोशल मीडिया पर ऐसे लेखों की इस तरह बाढ़ सी आई हुई है कि लोग इन पर यकीन भी किए जा रहे हैं। आखिर इन बातों का आधार क्या है? मुझे लगता है कि वे अतीत में हुई ऐसी घटनाओं के औसत को अपना आधार बना रहे हैं। लेकिन आज की वास्तविक परिस्थितियों में उसका कोई मूल्य नहीं है। अतीत में शेयर बाजारों की इस हद तक गिरावट के पीछे जो वजहें रही होंगी, कतई जरूरी नहीं कि मौजूदा गिरावटों की जमीनी वजहों का उनसे कोई संबंध भी हो। जमीनी हकीकत यह है कि आज जो हो रहा है और हुआ है, उसका 1989, 1993, 2001 और 2008 से कोई समानता नहीं है। इन सभी वर्षों के दौरान बाजार की गिरावट की अलग-अलग कहानियां और कारण रहे हैं। हां, इतना जरूर है कि आप औसत का आकलन कर सकते हैं। लेकिन जिन परिस्थितियों से हम आजकल गुजर रहे हैं, उनमें किसी तरह की भविष्यवाणी के लिए औसत वाला यह उपकरण बेहद कमजोर है।

जो भी हो, 25 प्रतिशत वाला यह सिद्धांत सिर्फ अभी ही नहीं, बल्कि बेहतरीन से बेहतरीन समय के लिए भी बेमतलब और अधकचरा ही है। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हो रही है। कुछ और बुनियादी तर्क खोजे जा रहे हैं और उन पर बहस हो रही है। ऐसा ही एक तर्क जीडीपी और कुल बाजार पूंजीकरण के अनुपात का है। यह तर्क कहता है कि जब यह अनुपात अपनी ही लंबी अवधि के औसत से कम हो, तो समझ लेना चाहिए कि बाजार में खरीदारी का मौका आ गया है। जाहिर है कि भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया के ज्यादातर बाजार इस वक्त उस अनुपात पर अपनी लंबी अवधि के औसत से नीचे हैं। तो क्या इसका कोई मतलब है?

यहां सबसे ज्यादा समझने वाली बात यह है कि इस तरह के सभी सूचक मुख्य रूप से इस बात पर निर्भर रहते हैं कि बाकी सभी चीजें एकसमान हों। यहां तक कि जीडीपी का आकलन भी इसी तरह की शर्त पर निर्भर करता है। ये सभी सूचक और संकेतक इस सिद्धांत पर टिके होते हैं कि अतीत और भविष्य में बदलाव के कोई बड़े कारक या बिंदु नहीं होते। लेकिन वर्तमान हालात में इस तरह के तर्क को आधार नहीं बनाया जा सकता है। हम एक बहुत बड़े बदलाव के बिंदु का सामना कर रहे हैं। यहां तक कि बदलाव का यह बिंदु इतना बड़ा हो सकता है कि जिस तरह के उठापटक हमने पिछले दिनों देखे हैं, वे असल में बहुत छोटे हों। और यह भी हो सकता है कि बदलाव इतने अलग हों कि हम सबकी भविष्यवाणियां और तर्क-वितर्क धरे रह जाएं।

अगर ऐसी कोई एक ऐसी चीज है जिसे मैंने अतीत और वर्तमान के बहुत से संकटों में प्रत्यक्ष महसूस किया है तो वह यह है कि भावना के आवेग में आकर लोग सिर्फ अतीत की घटनाओं को देखते हुए भविष्यवाणियां करते हैं। पिछले कुछ सप्ताह के दौरान हमने कोरोना महामारी के मामले में भी यही देखा है। फरवरी के मध्य में बहुत से लोग कह रहे थे कि इस समय तक आते-आते चीन में पांच करोड़ से अधिक लोग कोरोना-ग्रसित होंगे। महज एक महीने पहले तक टीवी चैनलों पर जिन्हें विशेषज्ञ बताया जा रहा था, वे जोर-शोर से कह रहे थे कि भारत में मई के अंत तक 40 करोड़ आबादी कोरोना ग्रसित हो जाएगी।

ये सभी वैसी भविष्यवाणियां थीं जो उन दिनों तक के ट्रेंड को देखते हुए की गई थीं। ये अनुमान इस तरह लगाए गए थे जैसे कि परिस्थितियों में बदलाव की दिशा में कोई कुछ करेगा ही नहीं। कई बार बिजनेस और इकोनॉमी के बारे में भी लोग इसी तरह के अनुमान लगाते दिखते हैं। इस समय अनिश्चित यह नहीं है कि इस महामारी का आर्थिक असर क्या होगा। अभी अनिश्चित यह है कि इस को बेअसर करने के लिए सरकार क्या कदम उठाती है। और वही सबसे महत्वपूर्ण कदम होंगे। हमने कोरोना के स्वास्थ्य प्रभावों के मामले में यही देखा है। इसलिए भविष्य कैसा होगा, इसके बारे में कोई भी अनुमान लगाने से पहले कई आंकड़ों पर विचार करना चाहिए।

धीरेंद्र कुमार, सीईओ
वैल्यू रिसर्च

बोनस

पिछले कुछ समय के दौरान कोरोना और अर्थव्यवस्था पर उसके असर को लेकर जितनी और जिस तरह की भविष्यवाणियां हो चुकी हैं, उनमें से अधिकतर कुल मिलाकर हास्यास्पद हैं। इसकी वजह यह है कि हम अतीत के उदाहरणों को लेकर भविष्य का आकलन करते हैं, जबकि दोनों वक्त की परिस्थितियों में बड़ा अंतर होता है। अभी कुछ विशेषज्ञ शेयर बाजारों की दशा और दिशा की तुलना वर्ष 2008 से कर रहे हैं और उस हिसाब से अपने उपाय सुझा रहे हैं। हकीकत यह है कि दोनों परिस्थितियों में बड़ा अंतर है। कुछ ऐसी ही भविष्यवाणियां कोरोना और उसके आर्थिक असर को लेकर भी हो रही हैं। शायद यही वजह है कि दो महीने पहले कोरोना को लेकर जो अनुमान लगाए जा रहे थे, वे आज झूठे साबित हो रहे हैं।

राष्ट्रीय

बिजली वितरण कंपनियों को राहत पर विचार कर रही केंद्र सरकार

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकार गंभीर वित्तीय संकट से जूझ रही बिजली वितरण कंपनियों यानी डिस्कॉम्स को राहत देने के लिए कई उपायों पर विचार कर रही है। सूत्रों का कहना है कि इनमें उन कंपनियों को सस्ती दरों पर कर्ज मुहैया कराने और शुल्क घटाने जैसे उपाय शामिल हैं। इसका मकसद कोविड-19 से मुकाबले की इस घड़ी में निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करना है। सूत्रों का कहना था कि बिजली मंत्रालय डिस्कॉम्स को राहत देने पर इसलिए विचार कर रहा है क्योंकि लॉकडाउन की इस अवधि में उनका कलेक्शन नहीं के बराबर रहा है। ऐसे में उनके अस्तित्व पर संकट के बादल छाए हुए हैं, जबकि कोरोना से लड़ने के लिए लॉकडाउन की इस अवधि में निर्बाध बिजली आपूर्ति की जरूरत है।

लॉकडाउन की इस अवधि में बिजली की मांग लगभग एक-तिहाई घट चुकी है। इस सप्ताह शुक्रवार यानी 10 अप्रैल को देश में बिजली की मांग घटकर 121.38 गीगावाट रह गई, जो पिछले वर्ष 10 अप्रैल को 170.52 गीगावाट थी। इस गिरावट की मुख्य वजह यह है कि इस वक्त औद्योगिक गतिविधियां भी ठप हैं और राज्य बिजली वितरण कंपनियों यानी डिस्कॉम्स की तरफ से मांग में बेहद कमी आई है। गौरतलब है कि दिनभर के दौरान जिस घंटे में बिजली की मांग सबसे ज्यादा होती है, उसे ही वास्तविक सर्वाधिक बिजली मांग माना जाता है।

▶ सस्ती दरों पर कर्ज मुहैया कराने और शुल्क घटाने जैसे उपाय कर सकती है सरकार

प्रतीकात्मक

सूत्रों के मुताबिक डिस्कॉम्स घोर नकदी संकट से जूझ रही हैं। इसलिए सरकार सस्ते कर्ज के माध्यम से उन्हें परिचालन पूंजी मुहैया कराने पर विचार कर रही है। इसके अलावा सरकार केंद्रीय और राज्य बिजली नियामकों को भी आदेश दे सकती है कि डिस्कॉम्स के लिए टैरिफ घटाई जाए। हालांकि इसके वित्तीय पहलुओं को देखते हुए इस तरह के किसी भी आदेश को केंद्रीय कैबिनेट की मंजूरी की दरकार होगी। इस प्रस्ताव को अगले सप्ताह केंद्रीय कैबिनेट के समक्ष विचार के लिए भेजा जा सकता है। पिछले सप्ताह बिजली मंत्रालय ने डिस्कॉम्स को राहत देने के लिए कई कदमों की घोषणा की थी। इन कदमों के तहत बिजली उत्पादन कंपनियों से कहा गया था कि वे डिस्कॉम्स को भुगतान के लिए अतिरिक्त मोहलत दें। इसके साथ ही बिजली उत्पादन कंपनियों से यह भी कहा गया था कि वे 30 जून तक की बिलिंग राशि के देर से भुगतान पर डिस्कॉम्स से लिए जाने वाले शुल्क की दर कम करें।

लॉकडाउन से बेअसर रही ग्रीष्म ऋतु की खेती

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ पिछले वर्ष के मुकाबले चालू सीजन में बोआई का रकबा 12 फीसद बढ़ा

▶ दलहन और तिलहन की खेती के लिए भी यह मौसम मुफीद साबित हुआ

कोरोना से बचने के लिए लागू लॉकडाउन का कोई असर ग्रीष्म ऋतु की खेती पर नहीं पड़ा है। इस दौरान फसलों की बोआई का रकबा पिछले साल के मुकाबले बेहतर रहा है। इस इस मौसम में होने वाले धान दलहन तिलहन और मोटे अनाज की खेती होती है। 24 मार्च से लागू 21 दिनों के लॉकडाउन के दौरान 10 अप्रैल तक इन फसलों की खेती का रकबा पिछले साल के मुकाबले 11.64 फीसद बढ़ा है। फसल वर्ष 2018-19 के दौरान जहां कुल 37.12 लाख हेक्टेयर में इन फसलों की खेती हुई थी वह इस बार बढ़कर 48.76 लाख हेक्टेयर हो गई है।

लॉकडाउन के बावजूद केंद्र सरकार के प्रयासों और राज्य सरकारों के सहयोग के चलते हैं गर्मी के सीजन वाली खेती पर कोई बुरा असर नहीं पड़ा। यही वजह है कि धान से लेकर दलहन, तिलहन और मोटे अनाजों की निर्बाध खेती देशभर में हो रही है। ग्रीष्म ऋतु की फसलों की बोआई का यह आंकड़ा कृषि मंत्रालय की ओर से जारी किया गया है। आंकड़ों के मुताबिक गर्मी के मौसम में होने वाली धान की खेती पिछले सीजन के मुकाबले 8.71 फीसद अधिक रही है। जबकि अन्य फसलों का बोआई रकबा एक फीसद कम दर्ज किया गया है। पिछले वर्ष इस समय तक कुल 23.81 लाख हेक्टेयर में धान की खेती की गई थी, जबकि इस बार बढ़कर धान का यह रकबा 32.58 लाख हेक्टेयर हो गया है।

कृषि मंत्रालय के मुताबिक दालों की कमी को पूरा करने के लिए सरकार का पूरा जोर दलहन फसलों की खेती पर रहा है इस अल्पकालिक मौसम में धान का बोआई रकबा पिछले साल के 3.01 लाख हेक्टेयर से बढ़कर इस बार 3.97 लाख हेक्टेयर पहुंच गया है। इसी तरह मोटे अनाज की खेती का रकबा भी पिछले साल के 5.97 लाख हेक्टेयर से बढ़कर चालू गर्मी के सीजन में 6.66 लाख हेक्टेयर हो गया है।

जम्मू से पकड़ा गया जैश का ओजीडब्ल्यू

जागरण संवाददाता, आरएसपुरा : जम्मू के सीमावर्ती कस्बे आरएसपुरा से सटे चकरोई गांव से पुलिस ने आतंकवादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के एक ओवर ग्राउंड वर्कर (आजीडब्ल्यू) को हिरासत में लिया है। आरोपित मोहम्मद मुजफ्फर बेग उत्तरी कश्मीर के हंदवाड़ा जिले का रहने वाला है। उसके पास से पांच सिमकार्ड और कुछ नकदी बरामद होने की जानकारी मिली है।

पुलिस के मुताबिक मुजफ्फर बेग चकरोई गांव के लब्बाराम की पत्नी से कोट भलवाल जेल में मिला था, जहां उसका मामा सजा काट रहा था।

मौसम विशेष

पंजाब, हरियाणा और दिल्ली में दिन का मौसम गर्म व शुष्क रहेगा। जबकि उत्तर-पश्चिम राजस्थान के कुछ भागों में गरज और तेज हवाओं के साथ छिटपुट वर्षा होगी। जम्मू-कश्मीर व हिमाचल प्रदेश में एक-दो भागों में वर्षा व बर्फबारी होने की संभावना है। रात का मौसम ठंडा बना रहेगा।

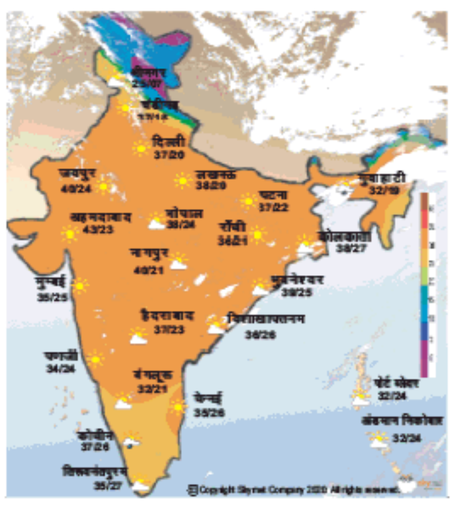

साप्ताहिक राशिफल

रविवार 12 अप्रैल, 2020 से शनिवार 18 अप्रैल, 2020 तक

पं. बी. बी. शास्त्री 'देवेश'

मेष (चू,चे,चो,ला,ली,लू,ले,लो,आ)
व्यापार, उद्योग, नौकरी के कार्य में सफलता, अर्थ साधन अच्छा, अपना प्रयास सार्थक करें, अति विश्वास से बचें, वाहन भवन की योजना, संतान से चिंतित, कुसंग से बचें, खानपान का ध्यान रखें, प्रणय में सुख, अनुबंध की प्राप्ति, पद परिवर्तन, शुभ अंक 9।

वृष (इ,ऊ,ए,ओ,पा,वी,वू,वे,वो)
व्यापार, उद्योग, नौकरी के कार्य में सफलता, अर्थ साधन में प्रयास, कार्यशैली में सुधार करें, पूंजी निवेश में सावधान, पारिवारिक चिंता, भूमि-भवन कार्य में प्रगति, संतान से सहयोग, शिक्षा में रुचि, राज्य पक्ष से सावधान, व्यय अधिक, शुभ अंक 7।

मिथुन (का,की,कू,घ,ड,छ,के,को,हा)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में श्रम से सफलता, धनागम में सुधार, प्रतिस्पर्धा का योग, तनाव से बचें, विदेश से समाचार, समस्या का समाधान, मित्रों से सहयोग, प्रणय में मधुरता, जीवन साथी का मिलन, राज्यपक्ष से सावधान, निर्माण योजना, शुभ अंक 4।

कर्क (ही,हू,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो)
व्यापार, नौकरी उद्योग के कार्य में सफलता, धनागम में अवरोध, परिश्रम से सफलता कम, मन में चिंता, वाहन-भौतिक साधन योग, संतान से सहयोग, चयन में देरी, मित्रों से सावधान, प्रणय में मधुरता, स्थान-पद परिवर्तन योग, व्यय अधिक, शुभ अंक 5।

सिंह (मा,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे)
अर्थ साधन में प्रयास, व्यापारिक क्षेत्र में विस्तार, नए घटनाक्रम तथा नए अवसर, संतान से चिंतित, अध्ययन में अवरोध, मित्रों तथा व्यवसाय क्षेत्र से सराहना, दांपत्य सुख, पद स्थान परिवर्तन, व्यर्थ के कार्यों से बचें, व्यय अधिक, शुभ अंक 3।

कन्या (टो,पा,पी,पू,ष,ण,उ,पे,पो)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में सहयोग से सफलता, धनागम में सुधार, प्रतिस्पर्धा से तनाव, विशेष व्यक्ति से सहयोग, लक्ष्य का ध्यान रखें, चिंता समाधान, संतान से सहयोग, मित्रों से सावधान, रक्षा साधन कार्य में प्रगति, यंत्र स्थापन, शुभ अंक 2।

तुला (रा,री,रू,रे,रो,ता,ती,तू,ते)
अर्थ साधन अच्छा, सलाह से निर्णय करें, सदस्यों से सहयोग, प्रतिस्पर्धा से तनाव, संतान के लिए योजना, अध्ययन में अवरोध, शत्रुपक्ष प्रभावी, प्रणय में सुख, जीवन साथी का मिलन, यात्रा में सावधानी, राजनीतिक प्रयास सफल, व्यर्थ के कार्य से बचें, शुभ अंक 6।

वृश्चिक (तो,ना,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू)
व्यापार, उद्योग के कार्य में सहयोग से सफलता, कार्य क्षेत्र में विस्तार, साझेदारी में सावधानी, अति विश्वास से बचें, भौतिक साधनों की पूर्ति, संतान से सहयोग, चयन में देरी, जीवन साथी का मिलन, वाहन में सावधानी, व्यय पर नियंत्रण करें, शुभ अंक 5।

धनु (ये,यो,भा,भी,भू,धा,फा,ढा,भे)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में श्रम से सफलता, धनागम में सुधार, साझेदारी में सावधानी, महिला से संपर्क, मन अशांत, संतान से सहयोग, चयन में सफलता, कुसंग से बचें, शत्रु पक्ष प्रभावी, भ्रमण योग, संपूर्ति का अनुबंध, शुभ अंक 3।

मकर (भो,जा,ज,खी,खू,खे,खो,गा,गी)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में सहयोग से सफलता, अर्थ साधन अच्छा, प्रतिस्पर्धा से चिंता, सामाजिक कार्य में प्रगति, मन अशांत, भौतिक साधनों की वृद्धि, शिक्षा में प्रगति, त्वचा विकार, नेत्र पीड़ा योग, जीवन साथी का मिलन, शुभ अंक 8।

कुम्भ (गू,गे,गो,सा,सी,सू,से,सा,दा)
नौकरी, व्यापार, उद्योग के कार्य में प्रयास से सफलता, धनागम अच्छा, पूंजी निवेश में सावधानी, कार्यशैली में परिवर्तन करें, लक्ष्य का ध्यान रखें, महिला से सहयोग, अध्ययन में एकाग्रता, दांपत्य में सुख, राजनीतिक प्रयास सार्थक, व्यर्थ की भागदौड़, शुभ अंक 1।

मीन (दी,दू,थ,झ,ञ,दे,दो,चा,ची)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में प्रयास से सफलता, धनागम अच्छा, अति विश्वास से बचें, पूंजी निवेश में सावधानी, परिस्थिति विचलित कर सकती है, संतान का सहयोग, शिक्षा में रुचि, जीवन साथी का मिलन, उच्चाधिकारी से सहयोग, व्यर्थ की चिंता, शुभ अंक 4।

30 नए मामले पाए गए हैं दक्षिण कोरियो में। इससे यहां पीड़ितों की संख्या बढ़कर 10,480 हो गई है। इनमें से करीब सात हजार मरीज बीमारी से उबर भी चुके हैं। गत सोमवार को यहां 51 नए मामले पाए गए थे।

कोरोना वायरस का प्रकोप, अमेरिका में इटली से ज्यादा मौतें

महामारी ▶ एक दिन में रिकॉर्ड 2,100 से ज्यादा पीड़ितों ने दम तोड़ा

ट्रंप बोले, लॉकडाउन खोलना मेरी जिंदगी का होगा सबसे बड़ा फैसला

वाशिंगटन, एजेंसियां : कोरोना महामारी से जूझ रहे अमेरिका में संक्रमित लोगों का आंकड़ा पांच लाख के पार पहुंच चुका है। अब तक पांच लाख 21 हजार से ज्यादा लोगों का टेस्ट पॉजिटिव पाया गया है। बीते 24 घंटे में रिकॉर्ड 2,181 पीड़ितों ने दम तोड़ दिया है। दुनिया में कोरोना से एक दिन में मौत का यह सबसे बड़ा आंकड़ा है। यहां इस महामारी से मरने वालों की संख्या इटली से भी ज्यादा हो गई है। महामारी के चलते दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी ठप पड़ी है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि अदृश्य दुश्मन से ठप पड़ी लॉकडाउन को खोलने का जब भी फैसला लिया जाएगा तो वह मेरी जिंदगी का सबसे बड़ा निर्णय होगा।

आंकड़ों के अनुसार, अमेरिका में अब तक कुल 20,057 कोरोना पीड़ितों की मौत हो चुकी है। जबकि इटली में अब तक 19,468 लोगों की मौत हुई है। राष्ट्रपति ट्रंप ने शुक्रवार को ह्वाइट हाउस में पत्रकारों से बातचीत में कहा, 'नए अनुमानों के अनुसार, देश में मौत का आंकड़ा 60 हजार से नीचे रह सकता है। हालांकि इससे कभी खुशी नहीं हो सकती, लेकिन पहले यह अनुमान लगाया गया था कि कोरोना के चलते अमेरिका में दो लाख लोग मौत के मुंह में जा सकते हैं।'

उन्होंने कोरोना की मार से पटरी से उतर रही अमेरिकी अर्थव्यवस्था के मसले पर कहा, 'मैं एक फैसला लेने जा रहा हूं और मैं ईश्वर से यही उम्मीद करता हूं कि यह सही फैसला हो, लेकिन मैं बगैर किसी सवाल के कहना चाहूंगा कि यह मेरी जिंदगी का अब तक का सबसे बड़ा फैसला होगा।' ट्रंप ने हालांकि अपने फैसले के एलान के लिए कोई तारीख नहीं बताई। महामारी के चलते 33 करोड़ की आबादी वाले अमेरिका में जनजीवन पूरी तरह ठहर गया है। 97 फीसद आबादी घरों में कैद हैं। कारोबार ठप पड़ा है। हवाई यातायात में 96 फीसद की कमी दर्ज की गई है। करीब 1.7 करोड़ लोग बेरोजगार हो गए। 66 लाख अमेरिकियों ने बेरोजगारी लाभ के लिए आवेदन किए हैं।

न्यूयॉर्क में एक लाख 70 हजार संक्रमित : अमेरिका में कोरोना महामारी का केंद्र बने न्यूयॉर्क राज्य में ही एक लाख 70 हजार से ज्यादा मामले हैं। इस राज्य में अब तक 7,800 से ज्यादा पीड़ितों की जान जा चुकी है। पिछले 24 घंटों में ही यहां 783 लोगों की मौत हुई है। जबकि पड़ोसी राज्य न्यूजर्सी में दो हजार से ज्यादा मौतें हुई हैं और 54 हजार से अधिक संक्रमित हैं। ट्रंप ने कहा कि महामारी के केंद्र न्यूयॉर्क के अस्पतालों में भर्ती होने वाले नए मरीजों की संख्या में कमी आ रही है।

इटली की मदद करने का आदेश : राष्ट्रपति ट्रंप ने कोरोना की मार से जूझ रहे इटली की मदद करने का आदेश दिया है। उन्होंने अधिकारियों को इस यूरोपीय देश को कोरोना से मुकाबला करने के लिए चिकित्सा और मानवीय सहायता मुहैया कराने को कहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने एक मेमो में कहा, 'हमारा करीबी और पुराना सहयोगी इटली कोविड-19 महामारी से तबाह हो रहा है। उसकी स्वास्थ्य व्यवस्था ध्वस्त होने के कगार पर है और अर्थव्यवस्था पर गहरी मंदी का खतरा बढ़ गया है।'

ब्रिटेन के ग्लास्गो स्थित स्कॉटिश इवेंट कैंपस (सीइसी) को अस्थायी अस्पताल में बदल दिया गया है। कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों की संख्या बढ़ने से अस्पतालों में जगह कम पड़ने लगी है। एएफपी

ट्रंप को रास नहीं आया गूगल-एपल का हाथ मिलाना

वाशिंगटन, एजेंसियां : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को कोरोना के मुद्दे पर गूगल और एपल का हाथ मिलाना रास नहीं आया। उन्होंने कहा कि इससे लोगों की निजता प्रभावित होगी और सरकार को इसकी बारीकी से जांच करनी होगी। हालांकि गूगल प्रमुख सुंदर पिचाई और एपल सीईओ टिम कुक ने सफाई देते हुए कहा है कि इस तकनीक से यूजर की गोपनीयता कतई प्रभावित नहीं होगी। बता दें कि दोनों कंपनियों ने मिलकर कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग तकनीक बनाने का फैसला लिया है, जिससे इस वायरस के प्रसार को रोकने में मदद मिलेगी। इस तकनीक से सरकार और हेल्थ एजेंसियों को भी फायदा होगा। दरअसल, हेल्थ एजेंसियों का मानना है कि कोरोनावायरस लोगों के एक-दूसरे के नजदीक आने से तेजी से फैलता है, इसलिए गूगल और एपल ने मिलकर ब्लूटूथ की मदद से कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग टेक्नोलॉजी पर काम करने का फैसला किया है। इस टूल के जरिये क्लोज कॉन्टैक्ट में आने वाले लोगों पर नजर रखी जा सकेगी। दोनों कंपनियां मिलकर कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग टेक्नोलॉजी पर आधारित एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस (एपीआइ) डेवलप करने वाली हैं। समय की मांग को देखते हुए दोनों ही कंपनियां इसके लिए यूजर पॉलिसी में कड़े सुरक्षा नियम जोड़ने वाली हैं। जिसे दो चरणों में लागू किया जाएगा। पहले चरण के तहत मई में दोनों ही कंपनियां एपीआइ जारी करेंगी, जो हेल्थ एजेंसियों के साथ मिलकर एंड्रायड और आइओएस के लिए एप डेवलप करेंगी, जिसे यूजर्स अपने एंड्रायड और आइओएस डिवाइस में डाउनलोड कर सकेंगे। दूसरे चरण में एपल और गूगल ब्लूटूथ पर आधारित कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग प्लेटफॉर्म तैयार करेंगे, जो दोनों ही डिवाइसेज पर काम करेंगी। एपीआइ के मुकाबले ये ज्यादा बेहतर होगा, क्योंकि इसमें ज्यादा से ज्यादा लोग हिस्सा ले सकेंगे और संक्रमण को फैलने से रोकने में मदद मिलेगी।

अपने नागरिकों को नहीं बुलाने वाले देशों पर अमेरिका सख्त

▶ ट्रंप ने नए वीजा प्रतिबंधों का एलान किया

वाशिंगटन, प्रेटू : कोरोना महामारी के दौरान अपने नागरिकों को अमेरिका से नहीं बुलाने वाले देशों के प्रति राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सख्त रुख अख्तियार कर लिया है। उन्होंने ऐसे देशों के नागरिकों पर नए वीजा प्रतिबंध लगाने का एलान किया है। ट्रंप ने शुक्रवार को वीजा प्रतिबंधों के लिए आदेश जारी किया, जो तत्काल प्रभाव से लागू हो गया। यह इस साल 31 दिसंबर तक प्रभावी रहेगा।

डोनाल्ड ट्रंप ने इस संबंध में जारी आदेश में कहा, 'जो देश महामारी के दौरान अमेरिका से अपने नागरिकों को बुलाने से इन्कार कर रहे हैं या बिना वजह देरी कर रहे हैं, वे अमेरिकियों के स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा कर रहे हैं, जो किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं किया जा सकता है।' आतंरिक सुरक्षा मंत्री और विदेश मंत्री को दिए निर्देश में राष्ट्रपति ने कहा कि अमेरिका उन विदेशी नागरिकों को उनके देश वापस भेजे, जो अमेरिकी कानूनों का उल्लंघन कर रहे हैं। इस संबंध में आंतरिक सुरक्षा मंत्री प्रक्रिया की शुरुआत करेंगे। वह उन देशों की पहचान करेंगे, जिन्होंने अपने नागरिकों को स्वदेश बुलाने के अमेरिका के अनुरोध पर ध्यान नहीं दिया है। इसके बाद वह विदेश मंत्री को इस संबंध में जानकारी देंगे। राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि ऐसी जानकारी मिलने के सात दिनों के अंदर विदेश मंत्री ऐसे देशों पर वीजा प्रतिबंध लगाएंगे, जो अपने नागरिकों को वापस नहीं बुला रहे हैं। वहीं दूसरी ओर एक ट्वीट में ईस्टर की जगह गुड फ्राइडे की बधाई देने पर सोशल मीडिया पर ट्रंप ट्रोल हो गए।

वाशिंगटन स्थित व्हाइट हाउस में प्रेस ब्रीफिंग के दौरान अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप। रायटर

डब्ल्यूएचओ फंडिंग पर अगले हफ्ते निर्णय लेंगे ट्रंप

वाशिंगटन, प्रेटू : अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) पर चीन केंद्रित होने का आरोप दोहराते हुए कहा कि वह इस वैश्विक संगठन को अमेरिका से मिलने वाले फंड पर अगले हफ्ते निर्णय का एलान करेंगे। डब्ल्यूएचओ को अमेरिका से हर साल 50 करोड़ डॉलर (करीब 3,800 करोड़ रुपये) का फंड मिलता है। ट्रंप ने इस हफ्ते के शुरू में डब्ल्यूएचओ को चीन केंद्रित होने का आरोप लगाते हुए कहा था कि उसने महामारी के बारे में सही समय पर सही जानकारी नहीं दी। साथ ही इस संगठन की फंडिंग भी रोकने की धमकी दी थी। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने व्हाइट हाउस में पत्रकारों से कहा, 'डब्ल्यूएचओ पर अगले हफ्ते एक घोषणा करने जा रहे हैं।'

23 मार्च के बाद स्पेन में पहली बार घटी मृतकों की संख्या

मैड्रिड, एजेंसियां: स्पेन में पिछले चौबीस घंटों में कोरोना वायरस से 510 लोगों की मौत हुई है। इस तरह स्पेन में मृतकों की संख्या 16,353 हो गई है। 23 मार्च के बाद यह पहला मौका जब एक दिन में मृतकों की संख्या इतनी कम है। संक्रमण के 4800 नए मामले सामने आए हैं। देश में कुल संक्रमितों की संख्या 161,852 हो गई है। इटली और अमेरिका के बाद महामारी से सबसे ज्यादा प्रभावित स्पेन के लिए मौत और संक्रमण के आंकड़ों में कमी एक उत्साहजनक संकेत है।

स्पेन में लॉकडाउन को खोलने के क्रमिक उपायों पर विचार शुरू हो गया है। सोमवार से निर्माण और मैन्युफैक्चरिंग जैसे क्षेत्रों में श्रमिकों को काम की अनुमति होगी। हालांकि स्पेन ने फ्रांस और पुर्तगाल से लगती सीमा पर आवाजाही पर प्रतिबंध को दो सप्ताह और बढ़ा दिया है। स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि क्योंकि कुछ कंपनियां फिर से खुल रही हैं, इसलिए सोमवार से मेट्रो और ट्रेन के स्टेशनों पर मास्क बांटे जाएंगे। हालांकि स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने लोगों से लॉकडाउन का सख्ती से पालन करने का अनुरोध किया है।

ईरान में 125 और लोगों की मौत : ईरान में पिछले चौबीस घंटे में 125 और लोगों की मौत हुई है। देश में मृतकों की संख्या 4,357 हो गई है। 1837 संक्रमण के नए मामले सामने आने के बाद संक्रमितों की कुल संख्या 70,029 हो गई है। ईरान में अभी तक 251,703 लोगों का टेस्ट किया जा चुका है। 41,947 लोगों को जहां अस्पताल से छुट्टी दी जा चुकी है वहीं 3,987 लोगों की हालत गंभीर है।

ब्राजील में अमेजन जनजाति के 15 वर्षीय लड़के की मौत : ब्राजील में अमेजन जनजाति के एक 15 वर्षीय लड़के की कोरोना से मौत हो गई। उसे श्वसन संबंधी दिक्कतों के चलते गुरुवार रात अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जनजाति के लिए काम करने वाली एक संस्था का कहना है कि यह लड़का कई अन्य के संपर्क में रहा है। संस्था ने लड़के को पर्याप्त चिकित्सा सुविधा नहीं मिलने का आरोप लगाया। ब्राजील में 19,638 लोग संक्रमित हैं और 1056 लोगों की मौत हो चुकी है। देश की व्यावसायिक राजधानी साओ पॉलो सर्वाधिक प्रभावित है। विशेषज्ञों ने अप्रैल के आखिरी में महामारी के चरम पर पहुंचने की आशंका जताई है।

पाकिस्तान के ईसाइयों पर कोरोना की मार : पाकिस्तान में पहले से अछूत बनकर जी रहे ईसाइयों पर कोरोना की मार पड़ी है। आमिर गिल नाम के एक क्लीनर को उसके मालिक ने ईस्टर से एक दिन पहले से बिना किसी चेतावनी के काम से निकाल दिया। गिल ने कहा कि हम तो पहले से ही अछूत थे और अब अमीर लोग समझते हैं कि हम इस महामारी को उनके घर नहीं ले आएं। उधर, पाकिस्तान में पिछले 24 घंटे में कोरोना के पांच मरीजों की मौत हुई है। इस तरह देश में मृतकों की संख्या 71 हो गई।

स्पेन के सेवेरो ओचोआ हॉस्पिटल में कोरोना के मरीजों का इलाज करने के दौरान जान गंवाने वाले मेडिकल स्टाफ के लिए श्रद्धांजलि सभा के दौरान कई कर्मचारियों की आंखों में आंसू छलक आए। एएफपी

देश	मौतें	संक्रमित
इटली	19468	147,577
अमेरिका	20057	505,237
स्पेन	16353	161,852
फ्रांस	13,197	124,869
ब्रिटेन	9875	78991
ईरान	4357	70,029
चीन	3339	81,953

▶ पिछले चौबीस घंटों में 510 लोगों की गई जान, मृतकों की संख्या बढ़कर हुई 16,353

भारत के मछुआरों से कोरोना की महामारी नहीं फैले, इसके लिए श्रीलंका की नौसेना ने पेट्रोलिंग बढ़ा दी है।

काबुल स्थित राष्ट्रपति के महल के 20 कर्मचारी कोरोना पॉजिटिव मिले।

जापान ने अपने नागरिकों से बार और रेस्तरां नहीं जाने की अपील की है। जापान में सात अप्रैल को आपातकाल की घोषणा की गई थी। अभी तक वहां संक्रमण से 100 लोगों की मौत हो चुकी है।

कांगो इबोला के साथ ही कोरोना की महामारी से जूझ रहा है। वहां पर पिछले 18 महीनों के दौरान इबोला से दो हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है।

क्यूबा ने अमेरिका द्वारा लगाए गए कड़े प्रतिबंधों की आलोचना की है। यहां पर अब तक 15 लोगों की मौत हो चुकी है जबकि 564 लोग संक्रमित हैं।

मैक्सिको के समुद्र तटीय शहरों में कोई घुस नहीं सके, इसके लिए वहां के लोगों ने सड़कों को विभिन्न अवरोधों के माध्यम से बंद कर दिया है। अगर कोई भी इन शहरों में घुसने की कोशिश करेगा तो उसे 12 दिनों तक क्वारंटाइन में रहना होगा।

10 दिनों के इलाज के बाद तुर्की में एक 93 साल का व्यक्ति ठीक हुआ है।

स्वीडन में संक्रमण के डर से अस्पताल और नर्सिंग होम में काम करने से कतरा रहे हैं। यहां पर अब तक संक्रमण से 900 लोगों की मौत हो चुकी है।

40 से अधिक भारतवंशियों की जान गई

1,500 ज्यादा भारतीय मूल के लोग कोरोना से संक्रमित

वाशिंगटन, प्रेटू : कोरोना वायरस से जूझ रहे अमेरिका में बड़ी संख्या में भारतीय मूल के लोग भी महामारी की चपेट में बताए जा रहे हैं। भारतीय समुदाय के प्रतिनिधियों ने बताया कि अमेरिका में 40 से ज्यादा भारतवंशियों और भारत से आए नागरिकों की मौत हो चुकी है। जबकि वायरस से संक्रमित भारतीय मूल के लोगों की संख्या 1,500 से ज्यादा हो सकती है।

अमेरिका में महामारी से न्यूयॉर्क और न्यूजर्सी सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। इन दोनों राज्यों में भारतीय मूल की बड़ी आबादी रहती है। भारतीय समुदाय के नेताओं के हवाले से यह बताया गया है कि कोरोना से मरने वाले भारतवंशियों में से 17 का ताल्लुक केरल, दस का गुजरात, चार का पंजाब, दो का आंध्र प्रदेश और एक का ओडिशा से था। जबकि कोरोना से 12 भारतीय नागरिकों के भी मरने की खबर है।

न्यूजर्सी में रियल एस्टेट का कारोबार करने वाले भावेश दवे ने कहा, 'हमने ऐसी स्थिति कभी नहीं देखी।' कोरोना से जान गंवाने वालों में सननोवा एनालिटिकल इंक के सीईओ हनमंत राव भी हैं। न्यूजर्सी के एडिसन में उनकी मौत हुई। उनके परिवार में पत्नी और दो बेटियां हैं। भारतवंशियों में लोकप्रिय और न्यूजर्सी शहर में रहने वाले चंद्रकांत अमीन की भी मौत हो गई। वह 75 साल के थे। समुदाय के नेताओं का अनुमान है कि भारतीय मूल के 400 से ज्यादा लोग न्यूजर्सी और एक हजार से अधिक न्यूयॉर्क में कोरोना पॉजिटिव हैं।

भारतीय संगठन ने जुटाए पांच लाख डॉलर : अमेरिका में भारतीय समुदाय के एक गैर-लाभकारी संगठन इंडियास्पोरा ने कोरोना वायरस से प्रभावित लोगों की मदद करने के लिए चंदे के तौर पर पांच लाख डॉलर (करीब 3.80 करोड़ रुपये) एकत्र किए हैं। इस संगठन ने बताया कि चंदा जुटाने का अभियान जारी है और हम लोगों तक मदद पहुंचा रहे हैं।

दक्षिण कोरिया में लोग दोबारा पाए जा रहे पॉजिटिव

सियोल, रायटर : कोरोना महामारी पर बहुत हद तक अंकुश लगाने में सफल रहे दक्षिण कोरिया में बीमारी से उबर चुके कई लोग जांच में दोबारा संक्रमित पाए जा रहे हैं। अधिकारियों ने बताया कि कोरोना मुक्त घोषित किए गए 91 रोगियों का टेस्ट फिर पॉजिटिव आया है।

दक्षिण कोरिया के रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्र (केसीडीसी) के निदेशक जियोंग ईयून-कियोंग ने यह आशंका जताई कि वायरस दोबारा सक्रिय हो सकता है। जबकि दूसरे स्वास्थ्य अधिकारियों ने कहा कि यह अभी स्पष्ट नहीं है कि इस प्रवृत्ति की क्या वजह है? इसकी जांच की जा रही है। केसीडीसी के अनुसार, देश में कोरोना के 30 नए मामले पाए गए हैं। इससे पीड़ितों की संख्या बढ़कर 10,480 हो गई है। इनमें से करीब सात हजार पीड़ित उबर चुके हैं। गत सोमवार को 51 नए मामले पाए गए थे।

एशिया में चीन के बाद कोरोना वायरस से सबसे ज्यादा प्रभावित दक्षिण कोरिया में नए मामलों में लगातार कमी दर्ज की जा रही है। इस देश में महामारी का केंद्र बने देगू शहर में करीब दो माह बाद पहली बार कोई नया मामला भी सामने नहीं आया। अकेले देगू में ही 6,807 मामले पाए गए थे। लोगों में दोबारा संक्रमण के मामले सामने आना चिंताजनक है।

▶ कोरोना मुक्त घोषित किए गए 91 रोगी जांच में मिले संक्रमित

क्वारंटाइन का उल्लंघन करने वालों पर रखी जाएगी नजर

समाचार एजेंसी एपी के अनुसार, दक्षिण कोरियाई अधिकारियों ने शनिवार को बताया कि कलाई पर पहनने योग्य एक ट्रैकिंग रिस्टबैंड के जरिये उन लोगों पर नजर रखी जाएगी, जो क्वारंटाइन आदेश का उल्लंघन करते हैं।

चीन में संक्रमण के 46 नए मामले, तीन लोगों की जान गई

बीजिंग, एजेंसियां : दुनिया को महामारी के कुचक्र में फंसाने वाले चीन में कोरोनावायरस संक्रमण के 46 नए मामले सामने आए हैं। इनमें से चार घरेलू संक्रमण के हैं। एक दिन पहले संक्रमण की संख्या 42 थी। कोरोनावायरस के 34 ऐसे मामलों का भी पता चला है, जिनमें संक्रमण के कोई लक्षण दिखाई नहीं दे रहे हैं। चीन में इस वैश्विक महामारी से तीन और लोगों की मौत हो जाने से मरने वालों की संख्या बढ़कर 3,339 हो गई है।

चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग (एनएचसी) के अनुसार, देश के मुख्य भूभाग में शुक्रवार तक विदेशों से आए संक्रमित लोगों की संख्या 1,183 दर्ज थी। इनमें से 449 लोगों को उपचार के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई और 734 लोगों का उपचार किया जा रहा है इनमें से 37 की हालत गंभीर है। आयोग ने बताया कि देश में संक्रमित लोगों की कुल संख्या शुक्रवार को 81,953 हो गई, जिनमें 1,089 मरीजों का अभी उपचार चल रहा है। 77,525 लोगों को उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई है और 3,339 लोगों की इस संक्रमण से मौत हो गई है। हालांकि महामारी से सबसे ज्यादा प्रभावित हुबेई प्रांत में लगातार सातवें दिन संक्रमण का कोई मामला सामने नहीं आया, लेकिन नए मामलों की संख्या बढ़ने के बीच चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने कार्यस्थलों पर कड़ी निगरानी रखने का आदेश दिया है। चिनफिंग का यह आदेश ऐसे समय में आया है, जब चीन ने इस वैश्विक महामारी के खिलाफ दो महीने से अधिक समय तक चले संघर्ष के बाद हाल ही काम और उत्पादन फिर से शुरू कर दिया है।

रूस से लगते सीमावर्ती प्रांतों में बढ़ रहा संक्रमण : चीन के जिन प्रांतों की सीमा रूस से लगती है, वहां पर संक्रमण में बढ़ोतरी देखी जा रही है। उत्तरी-पूर्वी हेइलोंगजियांग प्रांत के स्वास्थ्य अधिकारियों ने बताया कि शुक्रवार को यहां पर संक्रमण के कुल 23 नए मामलों का पता चला, इनमें 22 चीनी नागरिक रूस से राजधानी हार्बिन पहुंचे थे। इसी तरह इनर मंगोलिया में शनिवार सुबह तक संक्रमण के 27 मामले दर्ज किए हैं। ये सभी लोग भी रूस से यहां आए हैं।

अफ्रीकी समुदाय ने लगाया उत्पीड़न का आरोप : दक्षिणी चीन के सबसे बड़े शहर गुआंग्झू में रहने वाले अफ्रीकी समुदाय के लोगों ने संक्रमण के संदेह में स्थानीय अधिकारियों पर उत्पीड़न का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि उनसे ना केवल घर खाली कराए जा रहे हैं बल्कि क्वारंटाइन में भेजने के साथ ही बड़े पैमाने पर टेस्टिंग भी कराई जा रही है। उधर, डेढ़ करोड़ की आबादी वाले इस औद्योगिक जिले के स्थानीय अधिकारियों के मुताबिक आठ लोग बीमारी से पीड़ित मिले थे।

चीन के वुहान शहर में निर्मित किए गए अस्थायी अस्पतालों का एरियल व्यू। संक्रमितों की संख्या कम होने की वजह से फिलहाल इन अस्पतालों को बंद कर दिया गया है। हालांकि देश में संक्रमण के नए मामले भी सामने आए हैं। एपी

पूरे देश में कुत्ते का मांस खाने पर रोक की तैयारी

शंघाई, रायटर: शेंजेन प्रांत के बाद चीन सरकार ने अब पूरे देश में कुत्तों का मांस खाने पर रोक लगाने की तैयारी कर ली है। इस आशय का एक मसौदा प्रस्ताव कृषि मंत्रालय ने तैयार किया है। इसके मुताबिक, चीन में अब कुत्तों को पशुधन नहीं बल्कि पालतू जानवर माना जाएगा। पशु संरक्षण की दिशा में मसौदा प्रस्ताव को गेमचेंजर माना जा रहा है। बता दें कि अभी तक चीन में मांस के लिए कुत्ते और बिल्लियों को बड़े पैमाने पर मौत के घाट उतारा दिया जाता है। मसौदे के मुताबिक, 'मानव सभ्यता की प्रगति और जानवरों के संरक्षण के प्रति लोगों की बढ़ती चिंता व प्यार के मद्देनजर कुत्ते अब 'साथी पशु' बन गए हैं।अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इन्हें पशुधन नहीं माना जाता है। आगे से अब चीन में भी कुत्तों को पशुधन के तौर पर नहीं गिना जाएगा।' इस मसौदे की गाइडलाइन बुधवार को प्रकाशित की गई और इस पर आम लोगों से राय मांगी गई है। चीन सरकार का यह फैसला कोरोना से उपजे खौफ का परिणाम है। पिछले महीने ही प्रतिबंध लगाने वाली शेंजेन प्रांत की सरकार ने कहा कि कुत्ते और बिल्ली इंसानों के काफी करीब हैं और कई अन्य देशों में भी इनके मांस खाने पर प्रतिबंध है।

उठाया कदम

वाणिज्य मंत्रालय ने हफ्ते भर पहले प्रतिबंध हटाया था, कोरोना संक्रमण के इलाज में अचूक हथियार मानी जा रही है यह दवा, अमेरिका समेत कई देशों में मलेरिया रोधी दवाइयों की मांग

पाक में मलेरिया रोधी दवा के निर्यात पर पाबंदी

इस्लामाबाद, प्रेटू : पाकिस्तान ने कोरोना वायरस के खिलाफ जंग में अचूक हथियार मानी जाने वाली मलेरिया रोधी दवा के निर्यात पर फिर तत्काल प्रभाव से पाबंदी लगा दी है। अमेरिका समेत कई देशों में इस दवा का कोरोना वायरस से संक्रमित रोगियों के लिए इलाज के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है।

शुक्रवार को वाणिज्य मंत्रालय की तरफ से जारी अधिसूचना के मुताबिक कोरोना वायरस पर गठित राष्ट्रीय समन्वय समिति (एनसीसी) जब तक जरूरी समझेगी तब तक यह पाबंदी लगा रहेगी। करीब हफ्ते भर पहले ही मंत्रालय ने निर्यात पर पाबंदी हटाने का आदेश जारी किया था। लेकिन एक बार फिर मलेरिया-रोधी दवाइयों के निर्यात पर पाबंदी लगा दी गई है। मलेरिया-रोधी दवाइयों खासकर हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन की दुनियाभर में मांग बढ़ी है। अमेरिकी फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन ने हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन को कोरोना वायरस के लिए इलाज में इस्तेमाल करने के लिए स्वीकृत की गई है।

दैनिक समाचार पत्र डॉन के मुताबिक पाकिस्तान में इस मसले को लेकर भ्रम की स्थिति है कि मलेरिया-रोधी दवा के निर्यात पर प्रतिबंध लगाने का अधिकार वाणिज्य विभाग के पास है या राष्ट्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के पास। इससे पहले, वाणिज्य विभाग ने मास्क के निर्यात पर पाबंदी लगाने के ड्रग रेग्यूलेटरी अथॉरिटी ऑफ पाकिस्तान के पत्र को अनुचित करार दिया था।

वहीं, आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक एनसीसी की बैठक के मद्देनजर वाणिज्य विभाग ने तीन अप्रैल को पत्र जारी कर सभी तरह की मलेरिया-रोधी दवा के निर्यात पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी थी। उसके बाद यह तय किया गया था कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय मलेरिया-रोधी दवाइयों के निर्यात पर प्रतिबंध की मंजूरी के लिए संघीय कैबिनेट के सामने प्रस्ताव रखेगा। छह अप्रैल को कैबिनेट की बैठक में पाबंदी को मंजूरी दे दी गई।

लेकिन वाणिज्य मंत्रालय ने छह अप्रैल को एक अन्य आदेश जारी करते हुए प्रतिबंध लगाने संबंधी तीन अप्रैल के अपने आदेश को वापस ले लिया था। बाद में इन दवाइयों के निर्यात पर पाबंदी संबंधी कैबिनेट के फैसले को अमल में लाने के लिए वाणिज्य मंत्रालय ने नौ अप्रैल को नई अधिसूचना जारी की। शुक्रवार को मीडिया को इस अधिसूचना के बारे में जानकारी दी गई। पाकिस्तान में लगभग 20 कंपनियां मलेरिया-रोधी दवाइयां बनाती हैं।

पाकिस्तान में कोरोना संक्रमण के मामले तेजी बढ़ रहे हैं। पाकिस्तान में संक्रमितों की संख्या पांच हजार के करीब पहुंच गई है। अब तक 71 लोगों की मौत हो चुकी है और 50 से ज्यादा लोगों की हालत गंभीर बनी हुई है।

इमरान खान। फाइल

वेंटीलेटर मिलने में देरी से गई चीन में बहुत से लोगों की जान

बीजिंग, प्रेटू: वेंटीलेटर मिलने में हुई देरी के चलते चीन में बहुत से लोगों की जान चली गई। एक अध्ययन के अनुसार, चीन में कोरोना महामारी से मरने वाले केवल 20 फीसद लोगों को ही मैकेनिकल वेंटीलेटर की सुविधा मिल सकी।

बता दें कि वेंटीलेटर मुख्य रूप से दो तरह के होते हैं। पहला मैकेनिकल वेंटीलेशन और दूसरा नॉन इनवेसिव वेंटीलेशन। मैकेनिकल वेंटीलेटर के ट्यूब को मरीज के सांस नली से जोड़ दिया जाता है, जो फेफड़े तक ऑक्सीजन ले जाता है। दूसरे प्रकार के वेंटीलेटर को सांस नली से नहीं जोड़ा जाता है, बल्कि मुंह और नाक को कवर करते हुए एक मास्क लागाया जाता है जिसके जरिये इस प्रक्रिया को अंजाम दिया जाता है। जर्नल ऑफ द अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन में प्रकाशित शोध में वुहान के 21 अस्पतालों का आकलन किया गया है।

टहलकर, फिल्में देखकर, पहेलियां सुलझाकर समय बिता रहे जॉनसन

लंदन, प्रेटू : कोरोना वायरस से संक्रमित ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन की हालत में अब सुधार हो रहा है। वह यहां एक अस्पताल के कक्ष में कुछ देर टहलकर, फिल्में देखकर, सुडोकू खेलकर और पहेलियां सुलझाकर समय बिता रहे हैं। लंदन के सेंट थॉमस अस्पताल में भर्ती जॉनसन के स्वास्थ्य पर चिकित्सक निकटता से नजर रख रहे हैं। 'डॉउनिंग स्ट्रीट' के एक प्रवक्ता ने कहा कि प्रधानमंत्री अब आराम करने के बीच कुछ देरी तक टहल पाने में सक्षम हैं। उनकी हालत में सुधार हो रहा है। उन्होंने अपने चिकित्सकों से बात की और अपनी देखभाल करने वाली पूरी टीम का शुक्रिया अदा किया। इस बीमारी से प्रभावित हुए लोगों के साथ उनकी संवेदनाएं हैं।

उन्होंने बताया कि जॉनसन के स्वास्थ्य के बारे में अस्पताल अब दिन में केवल एक बार जानकारी देगा। 'द टाइम्स' ने सूत्रों के हवाले से बताया कि जॉनसन के स्वास्थ्य में काफी सुधार हुआ है और वह अस्पताल के बिस्तर पर लेटकर 'लॉर्ड ऑफ द रिंग्स' और 'विदनेल एंड आई' जैसी फिल्में देख रहे हैं और सुडोकू खेल रहे हैं। डाउनिंग स्ट्रीट ने इस बात की पुष्टि नहीं की कि जॉनसन को उनकी गर्भवती मंगेतर कैरी साइमंड्स समेत किसी से मिलने की अभी अनुमति दी गई है या नहीं। लेकिन, लोगों ने उन्हें हजारों कार्ड भेजे हैं, जिनमें उनके स्वस्थ होने की कामना की गई है। जॉनसन को गुरुवार को आइसीयू से अस्पताल के वार्ड में लाया गया था।

बोरिस जॉनसन की फाइल फोटो। रायटर

ब्रिटिश पीएम के स्वास्थ्य पर चिकित्सक निकटता से रख रहे नजर, हजारों लोगों ने कार्ड भेजकर स्वस्थ होने की कामना की

दैनिक जागरण
राष्ट्रीय संस्करण
रविवार 12 अप्रैल 2020
स्पोर्ट्स
12
www.jagran.com

मुझे लगता है कि इस लॉकडाउन के समय में लोगों से अपनी क्रिकेट की कहानियां शेयर करनी चाहिए।
— माइकल अथर्टन, इंग्लैंड के पूर्व कप्तान

लियोन दुनिया के सर्वश्रेष्ठ ऑफ स्पिनर : ब्रैड हॉग

नई दिल्ली : ऑस्ट्रेलिया के पूर्व चाइनामैन गेंदबाज ब्राड हॉग का मानना है कि रविचंद्रन अश्विन शानदार गेंदबाज हैं लेकिन अब उनकी जगह नाथन लियोन दुनिया के सर्वश्रेष्ठ ऑफ स्पिनर हैं। हॉग लॉकडाउन के दौरान ट्विटर पर क्रिकेटप्रेमियों के सवालों का जवाब दे रहे थे। अश्विन और लियोन में से टेस्ट क्रिकेट में बेहतर कौन है, यह पूछने पर उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि लियोन दुनिया के सर्वश्रेष्ठ ऑफ स्पिनर हैं।

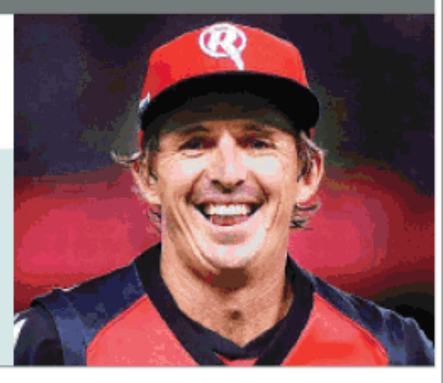

एक नजर में

डेलग्लिश कोरोना की चपेट में

लंदन : यूरोपियन चैंपियन लिवरपूल के दिग्गज सर केनी डेलग्लिश कोरोनावायरस से संक्रमित पाए गए हैं। डेलग्लिश के परिवार ने कहा कि 69 वर्षीय पूर्व फुटबॉलर को कोरोना वायरस की जांच के लिए बुधवार को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। यह अप्रत्याशित रूप से टेस्ट पॉजिटिव था। अस्पताल में भर्ती होने से पहले, सर केनी ने अपने परिवार के साथ मिलकर सलाह की थी कि वह ज्यादा समय तक खुद को एकांतवास में रखेंगे। वह जल्द ही घर लौटने के लिए उत्साहित है। (आइएएनएस)

अध्यक्ष पर भूटिया की नजर

नई दिल्ली : भारतीय फुटबॉल टीम के पूर्व कप्तान बाइचुंग भूटिया ने कहा है कि वह भविष्य में अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआइएफएफ) के अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ने के बारे में सोच सकते हैं। भूटिया ने फेसबुक पर कहा कि मैं समझता हूं कि इस पर भविष्य में ध्यान दिया जा सकता है। वह इस समय सिक्किम में जमीनी स्तर के कार्यक्रमों में व्यस्त हैं। (आइएएनएस)

सभी का टेस्ट जरूरी : बेवन

लंदन : लीग मैनेजर एसोसिएशन के सीईओ रिचर्ड बेवन ने कहा है कि इंग्लिश सत्र तभी शुरू हो जब इसमें खेलने वाले सभी खिलाड़ियों का कोरोना टेस्ट हो जाए। उन्होंने कहा कि एक बार जब यह हो जाए तभी खेल को दोबारा शुरू किया जा सकता है। कोरोना की वजह से ब्रिटेन में 9,000 से ज्यादा लोगों की जान जा चुकी है। फुटबॉल लीग के सीईओ को लगता है कि एक बार जब सब सही हो जाए तो 56 दिनों में सत्र को खत्म किया जा सकता है। (एएफपी)

ऑनलाइन चैंपियनशिप

नई दिल्ली: दुनिया के शीर्ष निशानेबाज 15 अप्रैल को पहली अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन चैंपियनशिप में भाग लेंगे जिसमें वे अपने घर में बैठकर इसमें निशाना लगा सकेंगे। इस तरह की पहली प्रतियोगिता के लिए बस एक 'इलेक्ट्रोनिक टारगेट सेटअप' और इंटरनेट कनेक्शन वाला मोबाइल फोन चाहिए। भारत से इसमें मनु भाकर, संजीव राजपूत और दिव्यांश सिंह पंवार हिस्सा लेंगे। कोविड-19 महामारी के कारण ओलंपिक को एक साल के लिए स्थगित कर दिया गया है जिससे इन निशानेबाजों को भी अपना सपना पूरा करने के लिए इंतजार करना होगा। पूर्व भारतीय निशानेबाज शिमरोन शरीफ ने इसकी शुरुआत की है। (प्रेट्र)

गोल्फ टूर्नामेंट रद, कैडियों के सामने बड़ा संकट

गोल्फ कोर्स बंद होने के कारण मुश्किल में गोल्फरों के सहायक, दिहाड़ी में कमाने वाले कैडियों को मिल रही मामूली मदद

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: कोरोना वायरस के कारण देशव्यापी लॉकडाउन के चलते पेशेवर गोल्फ टूर ऑफ इंडिया (पीजीटीआइ) टूर्नामेंट रद होने और गोल्फ कोर्स बंद होने से दिहाड़ी पर काम कर रहे सैकड़ों कैडियों (गोल्फर के सहायक) के सामने आजीविका का संकट पैदा हो गया है। देश में भारतीय गोल्फ यूनियन से रजिस्टर्ड 231 गोल्फ कोर्स हैं। इसमें हजारों कैडी अपनी सेवा देते हैं। अकेले उत्तर प्रदेश में ही करीब डेढ़ दर्जन गोल्फ कोर्स में 700-800 कैडी काम करते हैं। दिल्ली-एनसीआर में करीब 2500 कैडी काम करते हैं जिनमें अधिकांश प्रवासी है। कई नियमित कैडी है तो कई पार्ट टाइम काम करते हैं।

दो बार एशियाई टूर के विजेता गोल्फर राशीद खान का मानना है कि अगर हालात में सुधार नहीं आया तो सबसे ज्यादा गाज कैडियों पर गिरेगी। कैडी रोज कमाते हैं और अब उनकी कमाई बंद हो गई है। उन्हें परिवार पालने हैं, किराया देना है। हालात नहीं सुधरने पर उनके लिए काफी कठिन हो जाएगा। चंडीगढ़ के अक्षय शर्मा और 2015 जूनियर विश्व गोल्फ चैंपियन शुभम जगलान के कैडी रहे मंटू ने कहा कि हालात सामान्य नहीं होने पर 95 प्रतिशत कैडियों पर असर पड़ेगा। हमारे देश में पांच प्रतिशत कैडी ही 20-25 हजार रुपये महीने कमा पाते हैं। बाकी सभी की हालत खराब है। करीब 50-60 कैडी ही शीर्ष गोल्फरों के साथ नियमित यात्रा करते हैं और कुछ को उनसे वेतन भी मिलता है लेकिन बाकी दिहाड़ी पर काम करते हैं। मुंबई के इमरान मुहम्मद अंसारी ने कहा कि वह भविष्य को लेकर चिंतित है। गोल्फ कोर्स बंद हो चुके हैं। हमारा क्लब अभी दाल, चावल, प्याज, आलू दे रहा है लेकिन वह काफी नहीं है। हम पूरा दिन किसी गोल्फर के साथ काम करने पर 500-600 रुपये रोज कमाते हैं लेकिन अब तो कुछ काम ही नहीं है। बांबे प्रेसिडेंसी गोल्फ क्लब कैडियों को राशन तो बेंगलुरु गोल्फ क्लब हर कैडी को रोज 300 रुपये दे रहा है। नोएडा गोल्फ क्लब ने अपने कैडियों को 2000-2000 रुपये दिए हैं। दिल्ली गोल्फ क्लब (डीजीसी) के कैडीज वेलफेयर ट्रस्ट ने देश में गोल्फ कोर्स खोलने पर गौर करने की मांग की है। डीजीसी ने कैडीज को पांच हजार रुपये देने का फैसला किया है।

कर्नाटक गोल्फ संघ के कैडी • फाइल फोटो, प्रेट्र

चंडीगढ़ में मिल रही मदद : चंडीगढ़ गोल्फ क्लब में 18 होल का कोर्स है, इसमें करीब 400 कैडी हैं। लॉकडाउन के चलते तीन अप्रैल को गोल्फ क्लब की तरफ से इन्हें 2000 रुपये और राशन दिया गया। कैडी दीपू ने बताया कि उन्हें 13 अप्रैल को फिर गोल्फ क्लब में बुलाया गया है।

कैडीज की मदद को आगे आया लखनऊ गोल्फ क्लब

लखनऊ गोल्फ क्लब में 100 कैडी हैं। यहां भी 18 होल का कोर्स है। क्लब के कप्तान जोगिंदर पाल सिंह सियाल ने बताया कि गोल्फर आम दिनों में नौ होल पर एक कैडी को 150 रुपये देते हैं। इसी तरह 18 होल का कोर्स पूरा करने पर कैडियों को 250 रुपये दिए जाते हैं। इस समय क्लब के 2100 सदस्य कैडियों को आर्थिक मदद दे रहे हैं। प्रत्येक कैडी को 10 दिन में 1000 रुपये की आर्थिक मदद दी जा रही है। अगले तीन महीने तक इसी तरह मदद मिलती रहेगी।

कानपुर में कैडीज की कोई मदद नहीं

कानपुर कैंट एरिया में आर्मी एनवायरमेंट एंड ट्रेनिंग एरिया गोल्फ बना हुआ है जिसमें 18 होल का कोर्स है। मैदान के इंचार्ज प्रेम सिंह यादव के मुताबिक आम दिनों में 35 से 40 कैडी काम करते हैं। जिनको 150 से 200 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से दिया जाता था। कोर्स में काम करने वाले ज्यादातर लोग पास के ही गांव के हैं इसलिए उनकी ओर से अभी मदद या ऐसी कोई मांग नहीं की गई है।

कोलकाता में प्रत्येक सप्ताह दिए जा रहे रुपये

कोलकाता के टॉलीगंज क्लब के गोल्फ सुपरिटेंडेंट गौरव पुंडीर ने बताया कि क्लब के नए-पुराने सदस्यों ने मिलकर कैडियों के लिए तीन साल पहले एक ट्रस्ट का गठन किया था। यह ट्रस्ट कैडियों के परिवार की चिकित्सा और उनके बच्चों की पढ़ाई की व्यवस्था करता है। लॉकडाउन में ट्रस्ट की तरफ से प्रत्येक कैडी को प्रत्येक सप्ताह 1,000 रुपये दिए जा रहे हैं। अब तक दो-दो हजार रुपये दिए जा चुके हैं। जब तक लॉकडाउन जारी रहेगा, तब तक 1,000 रुपये दिए जाते रहेंगे। हमारे करीब 200 कैडी हैं।

मुश्किल में जमशेदपुर के कैडीज

जमशेदपुर में बेल्डीह तथा गोलमुरी गोल्फ कोर्स हैं। बेल्डीह गोल्फ कोर्स 18 होल का है जबकि गोलमुरी गोल्फ कोर्स नौ होल का है। दोनों ही कोर्स में मिलाकर लगभग 300 कैडीज हैं। सत्र में एक कैडीज को प्रतिदिन 300 रुपये के हिसाब से मिलता है। लॉकडाउन के कारण गोल्फ कोर्स सूना पड़ा है और कैडीज को घर चलाना मुश्किल हो रहा है।

रांची में सेना कर रही मदद

दीपाटोली कैंट में सेना द्वारा संचालित गोल्फ कोर्स में अधिकतर सेना के अधिकारी ही खेलते हैं। यहां 50 कैडी ही हैं। इस समय उनकी स्थिति ठीक नहीं है। सेना द्वारा ही उन्हें मदद मिल रही है।

मेरठ में कोई मदद नहीं

मेरठ छावनी स्थित आर्मी एनवायरनमेंटल पार्क एंड ट्रेनिंग एरिया में लगभग 50 कैडी रजिस्टर्ड हैं। इनमें आम तौर पर 30 से 35 कैडी ही आते हैं। सभी सिविल कैडी आस-पास के क्षेत्र के ही रहने वाले हैं जो इन दिनों अपने घर पर हैं। एप्टा के अकाउंटेंट प्रदीप के अनुसार लॉक डाउन के बाद से अब तक कोई अतिरिक्त मदद नहीं पहुचाई जा सकी है।

पटना गोल्फ क्लब के सदस्य कर रहे कैडीज की मदद

पटना गोल्फ क्लब में 150 कैडीज हैं। क्लब के पूर्व कप्तान और वर्तमान में कार्यकारी सदस्य कुमार त्रिपुरारी सिंह ने बताया कि आम दिनों में नौ होल पर एक कैडी को 200 रुपये गोल्फर से मिलते हैं। इसी तरह 18 होल का कोर्स पूरा करने पर उन्हें 400 रुपये दिए जाते हैं। वर्तमान समय में लॉकडाउन होने से क्लब के 550 सदस्य अपनी ओर से चार लाख रुपये जमाकर उनकी मदद कर रहे हैं। प्रत्येक कैडी को 15 दिन में एक हजार रुपये दिए जा रहे हैं।

राइट की खोज हैं पांड्या बंधु

मुंबई, प्रेट्र : भारतीय क्रिकेट टीम के हरफनमौला खिलाड़ी क्रुणाल पांड्या ने कहा है कि भारत के पूर्व कोच जॉन राइट ने उन्हें और उनके भाई हार्दिक पंड्या को काफी सपोर्ट किया है। दोनों भाई इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में मुंबई इंडियंस के लिए खेलते हैं और राइट इस टीम का कोच रह चुके हैं। क्रुणाल ने कहा, 'बीते हुए दिनों की बात है। स्पीड पोस्ट जॉब के लिए सरकारी भर्ती थी और ट्रायल्स के लिए मुझे पत्र भी मिला था। मेरे पिता ने मुझसे कहा कि तुम्हारे पास अच्छा मौका है। ठीक उसी समय मुझे बड़ौदा टीम की ओर से मुश्ताक अली में खेलने के लिए ट्रायल्स भी देने जाना था। मैंने सोचा कि मैंने पिछले दो-तीन साल से काफी मेहनत की है और अब मेरे पास एक नया खिलाड़ी बनने का मौका है। मैंने ट्रायल दिया और सफल हुआ। उसके बाद मुंबई इंडियंस टीम में राइट ने हमारा बहुत सहयोग किया।'

बेटी के साथ समय बिता रहे रहाणे: भारतीय टेस्ट टीम के उपकप्तान अजिंक्य रहाणे ने बताया कि वह इस दौरान कराटे का अभ्यास कर रहे हैं, जिसमें उन्हें ब्लैक बेल्ट हासिल है। वह घर के कामों में पत्नी राधिका की मदद करते हैं और बेटी आर्या का ख्याल रखते हैं। रहाणे ने कहा कि सुबह जब आर्या सोकर उठती है तब तक मैं 30-45 मिनट अपना वर्कआउट कर लेता हूं। इसके बाद, मैं कराटे का अभ्यास करता हूं। मैं कराटे में ब्लैक बेल्ट हूं।

लॉकडाउन हटने के बाद घर ही नहीं आऊंगा : चहल

नई दिल्ली, आइएएनएस : भारतीय क्रिकेट टीम के स्टार लेग स्पिनर युजवेंद्रा सिंह चहल ने कहा है कि लॉकडाउन के दौरान घर पर रह रहकर वह काफी थक गए हैं और एक बार जब लॉकडाउन खुल जाएगा तो वह घर पर ही नहीं आएंगे। कोरोना वायरस के कारण इस समय पूरे भारत में लॉकडाउन जारी है और चहल की तरह ही सभी क्रिकेटर 25 मार्च से ही घर में हैं। हालांकि चहल इस दौरान सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव दिखाई दे रहे हैं। चहल ने कहा कि मैं अपने घर से लॉकडाउन हो जाऊंगा। मैं घर लौटकर नहीं आऊंगा। मैं और बर्दाश्त नहीं कर सकता। घर पर और नहीं रह सकता। इन दिनों मैं जितना वक्त घर पर रह लिया हूं यह अगले तीन साल के लिए काफी है। मैं पास के किसी होटल में रह लूंगा लेकिन घर नहीं आऊंगा। मेरे लिए इतना काफी है। मैं लॉकडाउन के दिनों को और बर्दाश्त नहीं कर सकता।

शादी से चौंका सकते हैं चहल

अभिनेत्री जारा यासमीन के साथ इंस्टाग्राम लाइव चैट पर चहल ने कहा कि वह शादी करके सभी को चौंका सकते हैं। चहल से जब यासमीन ने उनके शादी के प्लान पर पूछा तो उन्होंने कहा कि मुझे नहीं पता, यह सभी के लिए एक सरप्राइज हो सकता है।

जब लारा ने दोबारा रचा इतिहास

इतिहास में आज

आज ही के दिन वेस्टइंडीज के दिग्गज बल्लेबाज ब्रायन लारा ने इंग्लैंड के खिलाफ खेली थी 400 रनों की पारी

16 अप्रैल 1994 को वेस्टइंडीज के दिग्गज बल्लेबाज ब्रायन लारा ने इंग्लैंड के खिलाफ 375 रन बनाकर टेस्ट क्रिकेट की एक पारी में सबसे ज्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड बनाया था। इसके लगभग 10 साल बाद 12 अप्रैल 2004 को लारा ने इसी टीम के खिलाफ 400 रन का जादुई आंकड़ा छूकर इतिहास रच दिया था। इससे कुछ महीनों पहले ही वर्ष 2003 में ऑस्ट्रेलिया के मैथ्यू हेडन ने 380 रन बनाकर उनका 375 रन का रिकॉर्ड धराशायी किया था। लारा का यह स्कोर आज भी टेस्ट क्रिकेट का सर्वश्रेष्ठ निजी स्कोर है।

लारा की शानदार पारी : पहले बल्लेबाजी करते हुए वेस्टइंडीज ने पांच विकेट पर 751 रन का बड़ा स्कोर खड़ा किया था। लारा ने इस पारी में 582 गेंद का सामना करते हुए नाबाद 400 रन बनाए थे, जिसमें 43 चौके और चार छक्के शामिल थे। लारा के अलावा रामनरेश सरवन ने 90, रिडली जैकब्स ने नाबाद 107 रन की पारी खेली। वहीं क्रिस गेल ने भी 69 रन की अहम पारी खेली थी। इंग्लैंड की टीम पहली पारी में 285 रन पर ऑलआउट हो गई। फॉलोऑन खेलने के बाद इंग्लैंड ने पांचवें दिन तक पांच विकेट पर 422 रन बनाए जिससे मैच ड्रॉ हो गया।

नहीं बचा सके कप्तानी : वेस्टइंडीज की टीम पिछले तीन टेस्ट हार चुकी थी और लारा की टीम पर सूपड़ा साफ होने का खतरा था। लारा चौथे टेस्ट में अपनी टीम को जीत तो नहीं दिला सके, लेकिन इस टेस्ट को ड्रॉ कराकर सूपड़ा साफ होने से बचा लिया। हालांकि इसके बाद भी उन्हें अपनी कप्तानी गंवानी पड़ी थी।

ब्रायन लारा • फाइल फोटो, एएफपी

धौनी पर संन्यास का दबाव मत बनाओ : नासिर हुसैन

मुंबई, आइएएनएस : आइपीएल का 13वां सत्र महेंद्र सिंह धौनी के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी का पैमाना माना जा रहा था। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान नासिर हुसैन ने कहा है कि धौनी पर संन्यास लेने का दबाव नहीं बनाना चाहिए क्योंकि धौनी एक बार चले गए तो आप उन्हें दोबारा टीम में शामिल नहीं कर सकते।

उन्होंने कहा कि क्या महेंद्र सिंह धौनी भारतीय टीम में जगह के हकदार हैं? यह सीधी सी बात है। यह नियम हर किसी पर लागू होता है। वह अभी भारतीय क्रिकेट को काफी कुछ दे सकते हैं। एक-दो मामले हुए हैं, जब लक्ष्य का पीछा करने में उनसे गलती हुई, जैसे कि इंग्लैंड के खिलाफ विश्व कप का मुकाबला लेकिन कुल मिलाकर देखें तो धौनी अब भी प्रतिभाशाली खिलाड़ी हैं।

भारत के खिलाफ हारना करियर का खराब पल : लैंगर

सिडनी: भारत के खिलाफ घरेलू सीरीज में मिली अभूतपूर्व हार ऑस्ट्रेलियाई कोच जस्टिन लैंगर के लिए 'खतरे की घंटी' रही। लैंगर ने कहा कि 10 साल बाद जब मैं अपने कोचिंग करियर की समीक्षा करूंगा तो वह सीरीज मेरे कोचिंग करियर के लिए निर्णायक साबित होगी। यह खतरे की घंटी और मेरे जीवन का कठिन दौर था।

राष्ट्रीय

ईडी ने फेमा जांच में मुंबई में 32 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त की

नई दिल्ली, प्रेट्र : प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कहा कि उसने मुंबई की एक महिला के खिलाफ विदेशी मुद्रा उल्लंघन मामले में विदेश में कथित रूप से अघोषित संपत्ति रखने के आरोप में दो प्रमुख संपत्तियों को जब्त किया है। इनकी कीमत 32 करोड़ रुपये से अधिक है। जांच एजेंसी ने कहा कि स्वर्गीय परमानंद तुलसीदास पटेल की बेटी जया पटेल के खिलाफ विदेशी विनिमय प्रबंधन अधिनियम (फेमा) की धारा 37-ए के तहत आदेश जारी किया गया था। एजेंसी ने कहा कि मुंबई में पेडर रोड स्थित 32.38 करोड़ रुपये की दो अचल संपत्तियों को 'विदेश में अवैध रूप से संपत्ति अर्जित करने के लिए भारत में संपत्ति के बराबर मूल्य' के तौर पर जब्त किया गया है।

एजेंसी ने कहा कि फेमा की जांच में पता चला कि मुंबई की जया के पास अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देशों में अवैध रूप से जुटाई गई संपत्ति है। प्रवर्तन निदेशालय ने बयान में कहा, 'जया व उनके सहयोगी के आवासीय व कार्यालय परिसर पर छापेमारी की गई जिसके परिणामस्वरूप अघोषित विदेशी संपत्तियां अवैध रूप से हासिल करने के दस्तावेज जब्त किए गए।'

कोरोना संक्रमण से जंग में देशभर में नजीर बना आगरा मॉडल

जागरण संवाददाता, आगरा

- स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने की प्रशंसा
- उप्र में सबसे पहले आगरा में बनाए गए हॉटस्पॉट जोन, कांटेक्ट ट्रेसिंग पर दिया गया ध्यान

उप्र ही नहीं, बल्कि देशभर में कोरोना से जंग में आगरा मॉडल नजीर बन गया है। यहां प्रदेश में सबसे पहले हॉटस्पॉट बनाए गए थे। छह अप्रैल को 22 हॉस्टस्पॉट जोन बनाए गए थे। वर्तमान में इनकी संख्या 29 है। शनिवार को स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने नई दिल्ली में प्रेसवार्ता के दौरान आगरा को रोल मॉडल बताकर तारीफ की। अभी तक जो रणनीति यहां के पुलिस-प्रशासन ने अपनाई है, उसे प्रजेंटेशन के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।

संयुक्त सचिव ने कहा कि इटली से घूमकर आगरा आए एक परिवार के सदस्यों में सबसे पहले कोरोना की पुष्टि हुई थी। पुलिस-प्रशासन ने बेहतर तालमेल दिखाया। परिवार के सदस्य कहां-कहां गए? इसकी पूरी ट्रेसिंग की गई। तीन किलोमीटर को कंटेंटमेंट और पांच किलोमीटर को बफर जोन में बदला गया। 1248 मेडिकल टीमों का गठन कर अब तक नौ लाख लोगों का सर्वे किया गया 2500 लोग खांसी, जुकाम और बुखार से पीड़ित मिले। इन पर नजर रखी जा रही है।

> पुलिस-प्रशासन, नगर निगम सहित अन्य विभागों में बेहतरीन तालमेल का परिणाम है कि आगरा रोल मॉडल बना है। केंद्र और राज्य सरकार को मॉडल से संबंधित पूरी जानकारी भेज दी गई थी।
> -प्रभु एन सिंह, डीएम, आगरा

यूं बना रोल मॉडल

नगर निगम में कमांड एंड कंट्रोल रूम बनाया गया है। सेहत की जांच, आगरा लॉकडाउन मॉनीटरिंग एप, चेक ग्रॉसरी एप लांच किया जा चुका है। टेली मेडिसिन की सुविधा मिल रही है।

आवश्यक वस्तुओं की होम डिलीवरी कराई जा रही है।

ई-कामर्स पर फोकस किया गया।

आवश्यक सेवाओं में दिक्कत न हो, इसके लिए मैनुअल पास जारी किए गए।

3 अप्रैल से ई-पास जारी किए जा रहे हैं।

कम्युनिटी किचन शुरू किया गया।

जनसहयोग से 50 हजार के करीब खाने के पैकेटों का वितरण कराया जा रहा है।

दवाओं की होम डिलीवरी की सुविधा शुरू की गई।

आइएमए की मदद से बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया।

होटलों में 566 और अन्य में 3180 बेड रिजर्व किए गए हैं।

मरीजों का बेहतर तरीके से इलाज किया जा रहा है।

डॉक्टरों को क्वारंटाइन किया जा रहा है।

सैनिटाइजेशन, फॉगिंग और एंटी लार्वा का छिड़काव कराया जा रहा है।

पशुओं के चारा की व्यवस्था की गई। हर दिन नगर निगम की टीम पशुओं-पक्षियों को दाना-पानी उपलब्ध करा रही है।

मप्र में 10 दिन में दूसरे बाघ शावक की मौत

नईदुनिया, मंडला : मध्य प्रदेश के कान्हा टाइगर रिजर्व में शनिवार को एक और बाघ शावक का शव मिला है। मृत शावक की उम्र आठ माह बताई गई है। अप्रैल माह में यह दूसरे बाघ शावक की मौत है।

कान्हा टाइगर रिजर्व के फील्ड डायरेक्टर एल. कृष्णमूर्ति ने बताया कि चिमटा परिसर के प्रकोष्ठ क्रमांक 780 में एक बाघ शावक का शव मिला है। उसके गर्दन में केनाइन दांतों के स्पष्ट घाव देखे गए हैं। इस शावक को मारने के पश्चात बाघ द्वारा करीब 500 मीटर घसीटा गया है। कृष्णमूर्ति ने बताया कि यह सीजन बाघों के लिए मैटिंग का होता है। बाघिन के साथ शावक होते हैं, जिससे बाघिन बाघ की ओर ध्यान नहीं देती है। बाघिन का ध्यान आकृष्ट करने के लिए बाघ शावकों को मार देते हैं।

तेंदुए के हमले में आठ साल की बालिका की मौत : धार जिले के अमझेरा से सात किमी दूर वनवासी गांव हाथीपावा में तेंदुए के हमले में आठ साल की बालिका ज्योति की मौत हो गई। वह स्वजन के साथ घर के बाहर सो रही थी। शुक्रवार देर रात तेंदुआ बालिका को मुंह में दबाकर ले भागा। चीख सुन जागे स्वजन व ग्रामीणों ने शोर मचाया तो तेंदुआ बालिका को छोड़कर चला गया, लेकिन गले पर हमला करने की वजह से उसकी मौत हो गई।

मेरे बेटे से सीखें मुसलमान होने का मतलब

डॉ. फैजल आजमी। फाइल फोटो

जज्बे को सलाम

- अपना फर्ज निभा रहे डॉ. फैजल के पिता ने कहा, कुछ लोगों की हरकतों के चलते पूरी कौम हो रही बदनाम
- कुछ लोग कर रहे हैं गलत हरकत, ये लोग पूरे समाज का प्रतिनिधित्व नहीं करते

डॉ. दिवस पांडेय। फाइल फोटो

कोरोना फाइटर

कुमार संजय, लखनऊ

'जो लोग अपनी हरकतों से पूरी कौम को बदनाम कर रहे हैं, उन्हें मुसलमान होने का मतलब मेरे बेटे से सीखना चाहिए।' यह कहना है कोरोना फाइटर डॉ. जिया फैजल आजमी के पिता अब्दुल अहद का। डॉ. जिया फैजल वह कोरोना फाइटर हैं जिन्होंने डॉ. दिवस पांडेय के साथ सबसे पहले कोरोना वार्ड में ड्यूटी लगवाई।

तब्लीगी जमातियों द्वारा की जा रही हरकतों पर फैजल के वकील पिता अब्दुल अहद कहते हैं कि कुछ लोग गलत हरकत कर रहे हैं। ये लोग पूरे समाज का प्रतिनिधित्व नहीं करते। कहीं नहीं लिखा है कि महामारी को रोकने के लिए नियमों का पालन मत करें। हमारे बेटे ने तो खुद को कोरोना वार्ड में काम करने के लिए आगे किया, जिससे दूसरे डाक्टरों और स्टाफ में भय कम हो। जो अपने ईमान का पक्का है, वही सच्चा मुसलमान है।

लखनऊ के संजय गांधी पीजीआइ के कोरोना वार्ड में जब ड्यूटी की बारी आई तो डॉ. फैजल आजमी और डॉ. दिवस पांडेय ने नंबर आने का इंतजार किए बिना ही खुद को आगे कर दिया। इनका उद्देश्य था कि दूसरे डॉक्टरों और स्टाफ के मन में कोरोना को लेकर जो डर था वो निकल सके। ये दोनों जानते थे कि कोरोना वार्ड में जरा सी चूक इनके लिए भारी पड़ सकती है। ड्यूटी के दौरान छह घंटे न वॉशरूम जा सकते हैं, न कुछ खा पी सकते हैं। पहली बार ड्यूटी लगने पर डॉक्टर और स्टाफ के मन में थोड़ा डर होता है। इसलिए, इन दोनों डॉक्टरों ने पहले बैच में ड्यूटी कर साथियों के मन से आशंकाएं खत्म कीं। इनके शिक्षक एनेस्थेसिया विभाग के प्रो. पुनीत ने इनका हर दिन मनोबल बढ़ाया।

डॉ. फैजल आजमी व उनके माता-पिता व अन्य परिवारीजन गोमतीनगर में रहते हैं। सामान्य दिनों में ये दो तीन दिन में शाम को घर चले जाते थे, लेकिन अब कोरोना वार्ड में ड्यूटी के दौरान 21 दिन तक घर नहीं जा पाएंगे। ड्यूटी के बाद अब ये क्वारंटाइन में हैं। पत्नी डॉ. सदफ जो एमडीएस कर रही हैं, उन्होंने भी मनोबल बढ़ाया।

डॉ. दिवस पांडेय भी ड्यूटी के बाद क्वारंटाइन हैं। इनका घर भी कैंट में है। इमरजेंसी ड्यूटी न होने पर घर चले जाते थे और मां-पिता की सेवा के साथ घर के काम भी निपटा लेते थे। वह 21 दिन तक घर नहीं जा पाएंगे। पिता घनश्याम पांडेय कहते है कि कि बेटे पर गर्व है। अगर डॉक्टर ही डर जाएंगे तो कौन इनकी देखभाल करेगा। जिस समय पीजीआइ में पहली मरीज कोरोना की भर्ती हुई तो बेटे ने खुद को आगे आकर ड्यूटी लगवा ली।

पुलवामा कांड दोहराने की साजिश रच रहा आतंकी जान बचाकर भागा

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

पुलवामा कांड दोहराने की साजिश रच रहा पाकिस्तान का जैश कमांडर वलीद भाई अपने साथियों संग शनिवार तड़के नाड़ीमर्ग (कुलगाम) में सुरक्षाबलों से अपनी जान बचाते हुए भाग निकला। अलबत्ता, उसके ठिकाने से एक एलएमजी गन और बड़ी मात्रा में आइईडी बनाने का साजो सामान बरामद किया गया है। पुलिस ने उसके एक आश्रयदाता को भी पकड़ा है।

जानकारी के अनुसार, पुलिस को शुक्रवार रात करीब 11 बजे पता चला कि जैश-ए-मोहम्मद का पाकिस्तानी कमांडर वलीद अपने कुछ साथियों संग कुलगाम के नाड़ीमर्ग इलाके में अपने किसी संपर्क सूत्र के पास आया हुआ है। उसके साथ दो से तीन आतंकी और हैं। वह 14 फरवरी 2019 को लित्तर पुलवामा में हुए वाहन बम जैसे किसी बड़े हमले को दोहराने की साजिश रच रहा है।

सूचना मिलते ही पुलिस ने सेना और सीआरपीएफ के जवानों के साथ नाड़ीमर्ग का रुख किया और आधी रात के बाद जवान गांव में पहुंचे। रात करीब दो बजे सुरक्षाबलों ने जैसे ही तलाशी अभियान शुरू करते हुए आतंकियों का ठिकाना बने संदिग्ध मकानों की तरफ बढ़ना चाहा, आतंकियों को पता चल गया। उन्होंने जवानों पर अपने स्वचालित हथियारों से तीन से चार राउंड फायर करने के साथ ही एक ग्रेनेड भी फेंका। जवानों ने खुद को बचाते हुए अपनी पोजीशन संभाली और जवाबी फायर किया। करीब 20 मिनट तक दोनों तरफ से गोलियां चली। आतंकियों की तरफ से गोली चलना बंद होने पर जवानों ने उनके ठिकाने की तलाशी ली तो उन्होंने वहां से एक लाइट मशीनगन, भारी मात्रा में कारतूस और आइईडी बनाने का साजो सामान बरामद किया।

सूत्रों ने बताया कि आतंकी वहां दो अलग-अलग मकानों में छिपे थे। वलीद के साथ मौजूद दो प्रमुख आतंकियों में रेडवनी कुलगाम का असलम डार और रौउफ था। फिलहाल, सुरक्षाबलों ने उन्हें पकड़ने के लिए पूरे इलाके की घेराबंदी करते हुए एक तलाशी अभियान चला रखा है।

पाक की गोलाबारी में जवान घायल, 10 मकान क्षतिग्रस्त

जसं, पुंछ : मुंह की खाने के बाद भी पाकिस्तान बाज नहीं आया। शनिवार को फिर पाकिस्तानी सेना ने नियंत्रण रेखा पर पुंछ जिले के मेंढर और शाहपुर किरनी सेक्टर में भारी गोलाबारी की। इसमें सेना का जवान घायल हो गया। इसके अलावा 10 मकान क्षतिग्रस्त हो गए। भारतीय सेना ने भी पाकिस्तान को करारा जवाब दिया। पाकिस्तानी सेना पिछले एक सप्ताह से आतंकियों को भारतीय क्षेत्र में दाखिल करवाने के लिए गोलाबारी कर रही है। गत रविवार को उत्तरी कश्मीर के केरन सेक्टर में भी पांच आतंकियों ने घुसपैठ की थी, जिन्हें भारतीय सेना ने मार गिराया था। इस दौरान पांच जवान भी शहीद हो गए थे। इसी बीच, जब पाकिस्तान ने गत शुक्रवार को गोलाबारी की तो भारत ने पाकिस्तान के पांच सैनिकों को ढेर करने के साथ उनके आयुध डिपो व आतंकियों का एक लांचिंग पैड तबाह कर दिया था। पाकिस्तान शुक्रवार रात से ही गोलाबारी कर रहा है। इस दौरान मेंढर में नियंत्रण रेखा पर तैनात भारतीय सेना का जवान घायल हो गया।

300 फीसद बढ़ गया है चीन के वुहान में लॉकडाउन हटने के बाद अलीपे एप के स्थानीय ऑनलाइन मैरिज एप्लिकेशन सिस्टम पर ट्रैफिक। इस तरह शादी के लिए ऑनलाइन आवेदन अधिक आ रहे हैं।

लव अग्रवाल : दिन के 20 घंटे देश के नाम

इन दिनों देश में कोरोना से जंग में कई योद्धा अहम भूमिका निभा रहे हैं। इन्हीं में से एक हैं स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल, जो रोजाना चार बजे इस महामारी पर अपडेट देते हैं। आइए जानते हैं उनके यहां तक के सफर और परिवार के बारे में...

चर्चित शख्सियत

अश्वनी त्रिपाठी, सहारनपुर

दिन के चार बजते हैं तो टेलीविजन के न्यूज चैनलों पर लग अग्रवाल दिखाई देते हैं। अखबारों में उनके बताए आंकड़ों के आधार पर कोरोना की देशव्यापी तस्वीर की झलक मिलती है। लव अग्रवाल स्वास्थ्य मंत्रालय में संयुक्त सचिव हैं और उन पर कोरोना को लेकर देश को अपडेट करने की जिम्मेदारी है। एक लिहाज से वह देश में कोरोना से लड़ रहे एक योद्धा हैं-इसलिए और भी, क्योंकि अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करने में वह न तो दिन देख रहे हैं और न रात। टीवी पर वह शांत-संयत नजर आते हैं, तमाम आंकड़े वह बिना कागज देखे गिना देते हैं, कभी-कभार ही लड़खड़ाते हैं। दरअसल, उन्हें करीब से जानने वालों को पता है कि यही उनकी स्वाभाविक प्रकृति भी है-धीर-गंभीर, लेकिन एक कठिन टास्क मास्टर।

मूल रूप से उत्तर प्रदेश के सहारनपुर के रहने वाले आइएएस अधिकारी लव कोरोना युद्ध के जितने बड़े योद्धा हैं, असल जिंदगी में उतने ही सहज और सामान्य हैं। कोरोना पर विजय पाने के टास्क ने बेशक उनकी सामान्य दिनचर्चा को प्रभावित किया है, लेकिन आम दिनों में कर्तव्य पालन को लेकर जितने सजग वह स्वास्थ्य मंत्रालय में रहते हैं, उतना ही घर में रिश्ते निभाने को लेकर भी। कामकाज में परफेक्शन लव अग्रवाल का विशेष आग्रह होता है।

सहारनपुर की ग्रीन पार्क कॉलोनी में रहने वाले उनके पिता चार्टर्ड अकाउंटेंट केजी अग्रवाल बताते हैं कि बेटा उनका बहुत खयाल रखता है। पहले रोजाना सुबह-शाम फोन करके हाल-चाल लेता था, लेकिन अब वह 20-21 घंटे दफ्तर में रहता है। देर रात ही घर पहुंच पाता है। हम सभी को भी बचाव करने की सलाह देता है।

इनोवेटिव अधिकारी के रूप में पहचान: 46 वर्षीय आइआइटीयन लव अग्रवाल आंध्र प्रदेश कैडर के आइएएस अफसर हैं। उनकी पहचान इनोवेटिव आइएएस अफसर की है। 28 अगस्त, 2016 को स्वास्थ्य मंत्रालय में संयुक्त सचिव बनाए गए। वह ग्लोबल हेल्थ, मेंटल हेल्थ, टेक्नोलॉजी, पब्लिक पॉलिसी जैसे अहम विषयों का कार्यभार देखते हैं। कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत का पक्ष रख चुके हैं। जी20 देशों के हेल्थ वर्किंग ग्रुप्स के सम्मेलन में उन्होंने आयुष्मान भारत का प्रजेंटेशन दिया था। स्वास्थ्य सचिव डॉ. प्रीति सूदन के साथ वह यूएस इंडिया हेल्थ डॉयलाग में भी शामिल रहे। अब कोरोना से देश को बचाने के लिए गठित नेशनल डेस्क का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

साहित्य से हुए बदलावों ने सदैव प्रेरित किया: पिता केजी अग्रवाल बताते हैं कि लव को बचपन से ही पढ़ना-लिखना पसंद था। वह किताबों के साथ अपना अधिकाधिक समय गुजारते थे। खेलकूद में कभी विशेष रुचि नहीं रही। स्कूल की लाइब्रेरी में भी वह किताबों को ही तलाशते। मुंशी प्रेमचंद की कथाएं सदैव आकर्षित करती थीं। सामाजिक मुद्दों खासकर सामाजिक असमानता, भ्रष्टाचार, गरीबी, उपनिवेशवाद आदि पर लव ने कई किताबें बचपन में ही पढ़ ली थीं। मुंशी प्रेमचंद की कथाओं से हुए युगांतरकारी परिवर्तनों ने उन्हें अपने कर्तव्य पालन में सदैव कुछ नया करने की प्रेरणा दी।

निडरता है व्यक्तित्व का प्रबल पक्ष: लव अग्रवाल की निडरता उनके व्यक्तित्व का सबसे मजबूत पक्ष है। आंध्र प्रदेश में कोल्लूरू झील प्रख्यात है। करीब 901 वर्ग किलोमीटर में फैली इस झील में करोड़ों का मछली पालन होता है।

इस झील पर कुख्यात माफिया गैंग का वर्षों से कब्जा था। कई आइएएस अफसर जब इस झील को माफिया से मुक्त नहीं करा सके तब आंध्र सरकार ने लव अग्रवाल को इस झील को कब्जा मुक्त कराने के लिए भेजा। डेढ़ साल की मेहनत के बाद लव अग्रवाल ने झील को माफिया से संपूर्ण मुक्त करा दिया था। इस प्रकरण को पर्यावरण जगत में सराहा गया था, तथा राष्ट्रीय स्तर पर लव अग्रवाल को ख्याति मिली थी।

रिश्तों को लेकर हैं बेहद गंभीर

मां विजयरानी अग्रवाल पुत्र लव के बारे में बताती हैं कि अगर मैं हकीकत बयां करूंगी तो इसे अतिश्योक्ति कहा जाएगा, लेकिन बेटा हर रिश्ते को पूरी संजीदगी के साथ निभाते हैं। सुबह-शाम फोन कर माता पिता का हाल लेते हैं, तो दुबई तथा सहारनपुर में बसे छोटे भाइयों समेत बहन की भी हर रोज खैर खबर लेते हैं। पत्नी डॉ. नीरजा अग्रवाल समेत पुत्र मेहुल तथा पुत्री गौरी को भी वह अपनी व्यस्तता के बावजूद पूरा समय देकर उनका खयाल रखते हैं। पिता तो यहां तक कहते हैं कि छोटे भाइयों के लिए पिता के सारे फर्ज भी लव ही निभा देते हैं। परिवार को एक कड़ी में पिरोने का कार्य लव ने ही संभाल रखा है।

लव अग्रवाल के पिता व मां आगे। पिछली पंक्ति में अन्य स्वजन। जागरण

सादा भोजन पसंद, फिल्में देखने का शौक

लव अग्रवाल के स्वजनों का कहना है कि वह बेहद मिलनसार तथा सुलझे इंसान हैं। भोजन में उन्हें सादा खाना पसंद है, तले-भुने से वह परहेज करते हैं। मां बताती हैं कि आटे का हलुआ और लड्डू उन्हें सर्वाधिक पसंद है। जब भी सहारनपुर आते हैं तो वह हलुआ-लड्डू बनवाकर अवश्य खाते हैं। समय मिलने पर परिवार के साथ टीवी पर फिल्में देखना पसंद करते हैं। इसके अलावा सिनेमा हॉल में नई रिलीज फिल्मों को सबसे पहले देखने का भी उन्हें शौक है। उन्हें जैसे ही समय मिलता है, दोस्तों और परिवार के साथ फिल्म देखने निकल जाते हैं। पुरानी फिल्मों के गीत उन्हें खूब पसंद हैं। अक्सर इन गानों में आवाज आलटाइम ग्रेट मुहम्मद रफी और मुकेश की होती है।

तकनीक के पैरोकार है

मैकेनिकल इंजीनियर होने के नाते लव अग्रवाल अपने तकनीकी ज्ञान का उपयोग आइएएस सेवा में खूब करते हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में उन्होंने अपनी तकनीकी कुशलता का खूब प्रयोग किया। वर्तमान में स्वास्थ्य मंत्रालय में ग्लोबल हेल्थ, मेंटल हेल्थ, टेक्नोलॉजी, पब्लिक पॉलिसी का कार्य संपादित करने के दौरान भी वह अपने तकनीकी कौशल का प्रयोग कर सदैव कुछ नया करने की कोशिश में रहते हैं। जी-20 देशों के हेल्थ वर्किंग ग्रुप सम्मेलन में आयुष्मान भारत का प्रजेंटेशन भी उनकी तकनीकी कुशलता का प्रतीक था। कोरोना से लड़ाई में भी वह नई तकनीक का बखूबी प्रयोग कर रहे हैं।

पिता सीए बनाना चाहते थे, बन गए आइआइटियन

लव अग्रवाल के घर में पढ़ाई का माहौल बचपन से था। इनके पिता शहर के प्रख्यात चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं। लव बचपन से ही पिता केजी अग्रवाल तथा माता विजयरानी अग्रवाल के निर्देशन में कक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करते रहे। शहर के प्रतिष्ठित स्कूल सेंट मेरीज से सेकेंडरी तक की शिक्षा पूरी करने के बाद लव ने आगे के लिए पिता से विचार-विमर्श किया। पिता ने उनसे सीए की तैयारी करने के लिए कहा, लेकिन लव आइआइटी करना चाहते थे। बहरहाल, पिता को मना करने के बजाए लव ने पिता से कहा कि वह सीए तो कर लेंगे, लेकिन एक बार आइआइटी का एग्जाम देना चाहते हैं। प्रवेश परीक्षा दी तो पहली बार में ही उनका चयन हो गया। तब लव अग्रवाल ने पिता से आगे के लिए आदेश मांगा। इस पर पिता ने सहमति देते हुए लव अग्रवाल को आइआइटी करने दिल्ली भेज दिया। वर्ष 1993 में आइआइटी से डिग्री हासिल करने के बाद लव अग्रवाल सन 1996 में संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में बैठे और पहले प्रयास में ही कामयाबी हासिल कर ली। उन्हें आंध्र प्रदेश कैडर मिला।

विश्व कप जिताने वाले जोगेंद्र जुटे हैं कोरोना को हराने में

कोरोना वायरस से जंग में पूरा देश एकजुटता दिखा रहा है और हर कोई अपनी तरह से हर संभव प्रयास करता दिख रहा है। ऐसा ही एक नाम है क्रिकेटर से डीएसपी बने जोगेंद्र शर्मा का, जो इन दिनों हिसार जिले में लॉकडाउन का पालन कराने के लिए सड़क पर मोर्चा संभाल रहे हैं...

इनसे मिलिए

अमित धवन, हिसार

डारेन गॉफ, शेल्डन कॉटरेल, सचिन तेंदुलकर, महेंद्र सिंह धौनी, हरमनप्रीत कौर... दुनियाभर में ऐसे क्रिकेटरों की लंबी लिस्ट है जो अपने-अपने देशों की पुलिस या सैन्य बलों से सक्रिय या मानद रूप से जुड़े हैं, लेकिन इस समय एक गुमनाम सा चेहरा चेहरा चर्चित है। कोरोना वायरस के कारण जब दुनियाभर के क्रिकेटर घर में बैठकर वीडियो जारी करके प्रशंसकों को संदेश दे रहे हैं तो ऐसे समय में भारत को 2007 टी-20 विश्व कप जिताने वाले जोगेंद्र शर्मा हरियाणा के हिसार जिले की गलियों में लॉक डाउन का पालन करवा रहे हैं। उनके अलावा कॉमनवेल्थ गेम्स के स्वर्ण पदक विजेता मुक्केबाज अखिल कुमार, एशियन गेम्स में कांस्य पदक विजेता जितेंद्र और एशियन गेम्स चैंपियन कबड्डी खिलाड़ी अजय ठाकुर भी अपनी पुलिस की ड्यूटी को बखूबी निभा रहे हैं।

पहले टी-20 विश्व कप के अंतिम ओवर की चौथी गेंद पर मिस्बाह-उल-हक को आउटकर भारत को विश्व कप जिताने वाले शर्मा लॉकडाउन के बीच सड़कों पर पुलिस उपाधीक्षक की वर्दी में कोराना से जंग लड़ रहे हैं। लोगों को समझाते हैं। घरों से बाहर न निकलें। यदि कोई परेशान है तो उसकी मदद करते हैं। कहते हैं, क्रिकेट में लक्ष्य विरोधी टीम को हराने का होता है। इस बार का लक्ष्य बहुत ही बड़ा है। देश और समाज को बचाने की लड़ाई है। रोहतक के रहने वाले जोगेंद्र हिसार में बतौर डीएसपी अधिकतर समय ड्यूटी करते हुए बिता रहे हैं। हिसार में डीएसपी (लॉ एंड आर्डर) के पद पर तैनात जोगेंद्र कहते हैं कि कई देशों में कोरोना वायरस के संक्रमण से बहुत दुखदायक स्थिति है। हमारे देश में ऐसा न हो इस लिए हम लगे हुए है। यह हर व्यक्ति के लिए परीक्षा की घड़ी है। कोरोना की जंग सभी को मिलकर जीतनी है। पुलिस प्रशासन से सहयोग कर हर व्यक्ति को साथ देना है। यदि आदमी को हर किसी की जिंदगी बचानी है तो उसको घर पर रहना होगा। जोगेंद्र का कहना है कि वैसे तो लोग बाहर नहीं निकल रहे, लेकिन कुछ लोग आपात स्थितियों के कारण बाहर निकलते हैं। इनके अतिरिक्त जो दूसरे लोग बाहर आ रहे है उनके पुलिस चालान काट रही है। पुलिस ड्यूटी कर हर किसी की सुरक्षा के लिए सड़क पर तैनात है, बस अपील है कोई दूसरा बाहर न आए। जोगेंद्र के मुताबिक वह हर रोज परिवार से वीडियो कॉल और सामान्य कॉल पर बातचीत करते है। उनकी पत्नी शिखा घर पर रहती हैं। दो बेटे हैं जो हर रोज घर में रहकर खेला करते हैं। मेरी माता धनपति देवी भी साथ हैं। मुझे परिवार को थोड़ी चिंता होती है लेकिन यह मेरी ड्यूटी है। समाज को बचाने की। देश को इस महामारी से दूर करने की।

रोहतक के वैश्य स्कूल-कॉलेज से की पढ़ाई

जोगेंद्र के मुताबिक वह रोहतक में रेलवे स्टेशन के पास नया पड़ाव मोहल्ले में रहते थे। अब उन्होंने नया घर बना लिया है। उनकी शिक्षा वैश्य स्कूल और कॉलेज से रही। शुरू से वह स्कूल की तरफ से होने वाली खेलों की गतिविधियों में भाग लेते थे। कोई खेल ऐसा नहीं था जिसमें वह न खेलते थे। उनके बड़े भाई अश्विनी क्रिकेट खेलते थे। उन्हीं से क्रिकेट खेलने की प्रेरणा मिली।

क्रिकेट करियर

दाएं हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदबाज और बल्लेबाज

जन्म : 23 अक्टूबर 1983, रोहतक

पहला वनडे : 23 दिसंबर 2004

अंतिम वनडे : 20 जनवरी 2007

पहला टी-20 : 18 सितंबर 2007

अंतिम टी-20 : 24 सितंबर 2007

घर पर रहकर पढ़ें, योग करें स्वस्थ रहें

जोगेंद्र लोगों को सलाह देते हैं कि घर पर रहते हुए भी फिटनेस बनाए रखें। फिटनेस जरूरी है। घर में रहकर योग करें। खुद भी पढ़कर ज्ञान बढ़ाएं और बच्चों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें। घर में हवन कर सकते हैं। जोगेंद्र दिन भर सड़क पर रहते है। यदि कभी खाली समय मिल जाता है तो लॉ की किताबें पढ़ते हैं।

2007 में बने थे डीएसपी

हरियाणा सरकार ने वर्ष 2007 में जागेंद्र शर्मा को डीएसपी बनाया था। उसके बाद वह लगातार 10 साल क्रिकेट खेलते रहे। इस दौरान बीच में वह ड्यूटी देते रहते थे। वर्ष 2017 से वह पूरी तरह से पुलिस ऑफिसर मोड में आ गए।

मां तो मां ही होती है...

तेलंगाना के बोधन शहर की शिक्षिका रजिया बेगम बेटे के साथ। (फाइल) एएनआइ

नेशनल डेस्क, नई दिल्ली

कहते हैं कि जब भी बच्चे पर कोई परेशानी आती है तो मां आगे आकर उसे दूर करती है। एक ऐसी ही मां हैं तेलंगाना के बोधन शहर की शिक्षिका रजिया बेगम जिन्होंने लॉकडाउन के दौरान फंसे अपने बेटे को घर लाने के लिए 1,400 किमी लंबी यात्रा स्कूटी से कर डाली...

मां ईश्वर का दूसरा रूप होती है। यही वजह है कि वह मुश्किल वक्त में अपने बच्चों को न सिर्फ हौसला देती है, बल्कि उसे बाहर भी निकालती है। कोरोना वायरस के खतरे को रोकने के लिए देशभर में लागू लॉकडाउन में फंसे बेटे को घर वापस लाने के लिए तेलंगाना की एक शिक्षिका ने ममता, साहस व समझ की मिसाल पेश की है। शिक्षिका स्कूटी से 1,400 किलोमीटर लंबा सफर करके अपने बेटे को सकुशल वापस ले आई।

तेलंगाना के बोधन शहर की शिक्षिका रजिया बेगम का बेटा मुहम्मद निजामुद्दीन आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले में अपने दोस्त के घर फंसा हुआ था। निजामुद्दीन हैदराबाद में एक निजी कॉलेज से 12वीं की पढ़ाई कर रहा है। दो सप्ताह पहले उसकी परीक्षाएं खत्म हो गईं और वह अपने दोस्त के साथ नेल्लोर के रेहमताबाद स्थित उसके घर चला गया। इसके बाद लॉकडाउन लागू हो गया और वह रेहमताबाद में ही फंस गया। बेटे की सलामती को लेकर चिंतित रजिया बेगम ने रेहमताबाद जाकर उसे वापस लाने का फैसला किया।

तेलंगाना के एक प्राथमिक स्कूल की प्रधानाध्यापिका रजिया बेगम ने सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) वी. जयपाल रेड्डी से संपर्क किया। वहां से यात्रा की अनुमति मिलने के बाद रजिया बेगम छह अप्रैल को अकेले रेहमताबाद के लिए रवाना हुईं। इससे पहले वह स्कूटर से अपने शहर के बाहर कभी नहीं गई थी। इस बीच उन्हें कई जगहों पर रोका गया। जब उन्होंने एसीपी का पत्र दिखाया तो उन्हें आगे जाने दिया गया। स्थानीय लोगों और गूगल मैप की मदद से वह अगले दिन रेहमताबाद पहुंच गईं। उसी दिन शाम को वह अपने बेटे निजामुद्दीन को लेकर बोधन के लिए रवाना हुईं और आठ अप्रैल को अपने घर लौट आईं।

कोरोना : ब्लड प्लाज्मा से इलाज की नई किरण

कोरोना के इलाज में उम्मीद की एक नई किरण दिखी है। इस बीमारी से ठीक हो चुके मरीज के ब्लड प्लाज्मा से नए मरीजों के इलाज में मदद मिली है। चीन में देखा गया है कि कोरोना के गंभीर मरीजों को यह प्लाज्मा दिए जाने के 72 घंटे में ही उनके लक्षण खत्म होने लगे और हालत में सुधार भी हुआ। ब्रिटेन और अमेरिका में भी ठीक हो चुके कोरोना मरीजों के खून से इलाज के अच्छे परिणाम सामने आए हैं। कोविड-19 से उबरे मरीजों के प्लाज्मा में वह एंटीबॉडीज पाया जाता है, जो वायरस के सफाये के लिए उनकी इम्युनिटी के लिए जरूरी होता है। इसे कान्वलेसंट प्लाज्मा थैरेपी के रूप में जाना जाता है। इस थैरेपी का इस्तेमाल पहली बार एक शताब्दी पहले 1918 में स्पैनिश फ्लू महामारी के समय हुआ था। यह थैरेपी जीवन रक्षक साबित हो रही है और एक छोटे समूह पर किए प्रयोग में कोई गंभीर साइड इफेक्ट भी नहीं देखा गया है।

ब्लड प्लाज्मा देने वाली टिफ्फनी

मौजूदा महामारी में कोरोना से उबर चुकी 39 वर्षीय एक महिला टिफ्फनी पिंकेनी पिछले सप्ताह अपना ब्लड प्लाज्मा देने वाली पहली अमेरिकी बनीं। वह अब खुद को नए मरीजों के लिए 'आशा की किरण' मानती हैं। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि कान्वलेसंट प्लाज्मा पर और अध्ययन की जरूरत है, क्योंकि अभी तक उसके असर का कोई ठोस निष्कर्ष का सबूत नहीं मिला है।

प्लाज्मा आधारित इलाज के फायदे

- ब्लड प्लाज्मा पुराने रोगी से तत्काल ही लिया जा सकता है।
- यह नई दवा विकसित करने की तुलना में बहुत ही सस्ता है।
- करीब एक शताब्दी से इस्तेमाल में लाई जा रहे इस थैरेपी से रोगी में वायरस से लड़ने के लिए इम्युन सिस्टम मजबूत होता है।
- इसका इस्तेमाल कोरोना वायरस जैसे ही सार्स तथा मर्स और इबोला जैसे संक्रमण से निपटने में हो चुका है।

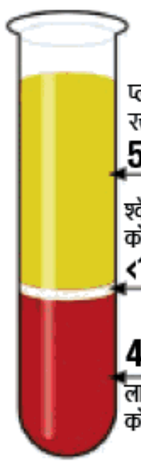

क्या है प्लाज्मा

प्लाज्मा रक्त की मात्रा का लगभग 55 फीसद बनाता है और लाल तथा श्वेत रक्त कोशिका के लिए तरल पदार्थ उपलब्ध कराता है, जो उसे पूरे शरीर में ले जाता है। इसे रोगियों को उचित मात्रा में दिए जाने से एंटीबॉडीज बनता है। लोगों द्वारा यह एंटीबॉडीज सिर्फ संक्रमित हो चुके लोगों से ही बनाया जा सकता है। सार्स और कोरोना वायरस-2 के मामलों में यह देखा जा चुका है कि एंटीबॉडीज किस प्रकार कारगर होते हैं, इसलिए कोविड-19 के इलाज में भी इसे एक नई उम्मीद के रूप में देखा जा रहा है। हालांकि वैज्ञानिक इस बीमारी के इलाज के लिए और भी तरीकों की खोज कर रहे हैं।

वुहान में हुआ है अध्ययन

कोरोना महामारी की शुरुआत गत दिसंबर में चीन के वुहान से हुई थी। वहीं चीन के नेशनल बायोटेक ग्रुप कंपनी लिमिटेड के काइ दुआन ने इस संबंध में अध्ययन किया। चूंकि यह महज एक पायलट अध्ययन था, इसलिए इसके निष्कर्ष प्रारंभिक ही माने गए। लेकिन इसका प्रकाशन प्रतिष्ठित जर्नल प्रोसिडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंस में हुआ। इसके तहत तीन अस्पतालों के दस मरीजों को अन्य दवाएं दिए जाने के साथ ही कान्वलेसंट प्लाज्मा थैरेपी के लिए चुना गया। शोधकर्ताओं के मुताबिक, तीन दिनों में ही रोगियों में बुखार, खांसी जैसे लक्षण समाप्त हो गए। रोगियों के लिवर, फेफड़ा तथा ब्लड ऑक्सीजन में सुधार देखा गया, जो इस बात के संकेत थे कि ये वायरस से लड़ रहे हैं। कान्वलेसंट प्लाज्मा चढ़ाने के बाद रोगियों में श्वेत रक्त कोशिका, लिम्फोसाइट्स बढ़ा पाया गया तथा एंटीबॉडी का स्तर भी उच्च बना रहा। दो रोगी, जिन्हें वेंटीलेटर सपोर्ट दिया जा रहा था, उन्हें वेंटीलेटर से हटाया जा सका और उन्हें नाक से ऑक्सीजन दी गई। इन दस रोगियों में से किसी की मौत नहीं हुई। अध्ययन के समाप्त होने तक तीन को अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया और बाकी सात में काफी सुधार देखा गया। लेकिन ब्रिटिश फार्माकोलॉजिकल सोसायटी के अध्यक्ष प्रोफेसर सर मुनीर पीर मोहम्मद कहते हैं कि इस निष्कर्ष को सतर्कता से लेना चाहिए। यह कोई औचक ट्रायल नहीं था और सभी रोगियों को एंटीवायरल समेत अन्य इलाज भी दिए गए।

पहले भी हो चुका है इस्तेमाल

कान्वलेसंट प्लाज्मा का इस्तेमाल पिछली शताब्दी में 1918 में स्पैनिश फ्लू महामारी के समय से हो रहा है। इसका ट्रायल 2009-2010 में एच1एन1 इंफ्लूएंजा, 2003 में सार्स तथा 2010 में मर्स महामारी के समय भी हो चुका है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के डॉ. माइक रेयान के मुताबिक, यह रैबीज तथा डिप्थेरिया जैसे संक्रमण में प्रभावी जीवन रक्षक साबित हुआ है।

यह कैसे करता है काम

ब्लड बैंक खून की तरह ही प्लाज्मा का भी डोनेशन लेता है। यदि कोई व्यक्ति सिर्फ प्लाज्मा डोनेट करता है तो उसका खून एक ट्यूब के जरिए निकाला जाता है और उसमें से प्लाज्मा निकाल कर शेष को डोनर के शरीर में वापस पहुंचा दिया जाता है। इसके बाद प्लाज्मा की जांच कर यह सुनिश्चित किया जाता है कि कहीं उसमें कोई रक्त जन्य वायरस तो नहीं है और क्या इसका इस्तेमाल सुरक्षित है। कोविड-19 के शोध के लिए इस बीमारी से उबर चुके लोग डोनर हो सकते हैं। डोनेट किए गए प्लाज्मा से इसका भी पता किया जाता है कि प्रति यूनिट प्लाज्मा कितना एंटीबॉडी है। इसी के आधार पर उचित डोज का निर्धारण होता है और यह डोनर कितनी बार भी डोनेट कर सकता है। इसकी भी संभावना है कि जिन रोगियों में कोई लक्षण नहीं दिखा हो या वह बीमार नहीं पड़ा हो, वह भी डोनर हो सकता है। लेकिन इन साइलेंट कैरियर की पहले जांच की आवश्यकता होगी। स्टेट न्यूज की रिपोर्ट है कि जापानी फर्मास्यूटिकल कंपनी ताकेदा एक ऐसी दवा बनाने पर काम कर रही है, जिसमें ठीक हो चुके रोगी के एंटीबॉडीज को गोली के रूप में ढाला जा सके।

क्या यह टीके के रूप में काम करेगा

वैज्ञानिक कोविड-19 का टीका विकसित करने में जी-जान से जुटे हैं। ऐसे में ब्लड प्लाज्मा उसी तर्ज पर एक अस्थायी सुरक्षा प्रदान कर सकता है। टीका व्यक्ति के इम्युन सिस्टम को अपना एंटीबॉडीज बनाने के लिए तैयार करता है। जबकि प्लाज्मा इन्फ्यूजन में किसी अन्य का एंटीबॉडीज होता है, जो कम समय के लिए प्रभावी होता है इसकी खुराक बार-बार देने की जरूरत पड़ती है। (स्रोत : डेली मेल)

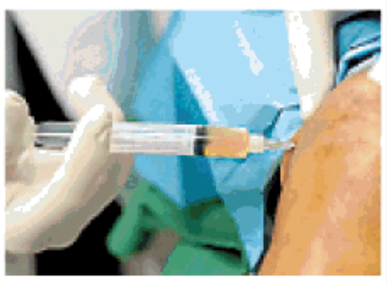

राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

आजकल

रविवार 12 अप्रैल 2020

14

www.jagran.com

पोलियो वैक्सीन को सुरक्षित और कारगर घोषित किया गया

1955 में अमेरिकी शोधकर्ता और वायरस विशेषज्ञ जोनस साक ने पोलियो के टीके की खोज की थी। व्यापक स्तर पर परीक्षण के बाद 1955 में आज ही के दिन इसे सुरक्षित और कारगर घोषित किया गया। दुनिया ने जोनस को जादुई शख्सियत बताया। इसके बाद ही कई देशों में इस वैक्सीन की खुराक देने की शुरुआत हुई।

धरती की कक्षा में चक्कर लगाने वाले पहले व्यक्ति बने यूरी गागरिन

आज ही के दिन 1961 में सोवियत संघ के पायलट और अंतरिक्ष यात्री यूरी गागरिन ने वोस्तोक-1 यान से बाहरी अंतरिक्ष में धरती की परिक्रमा की। यह उनकी इकलौती अंतरिक्ष यात्रा थी। बाद में सोयूज-1 अभियान के लिए उन्हें बैकअप क्रू की जिम्मेदारी सौंपी गई।

मेरे देश की धरती लिखकर अमर हो गए गुलशन बावरा

आज ही 1937 में गुलशन बावरा (गुलशन कुमार मेहता) का जन्म अविभावित पंजाब में हुआ था। बंटवारे ने परिवार छीन लिया और जयपुर आ गए। 1955 में मुंबई में रेलवे क्लर्क बने। भजन लिखना शुरू किया। कल्याणजी आनंदजी से मुलाकात के बाद किस्मत चमकी। 1957 में फिल्म सट्टा बाजार का उनका एक गीत लोकप्रिय हुआ। इसी फिल्म के वितरक शांतिभाई पटेल ने उन्हें बावरा उपनाम दिया। मेरे देश की धरती, कसमें वादे निभाएंगे हम जैसे लोकप्रिय गीत लिखे। सात अगस्त 2009 को कैंसर के चलते निधन हो गया।

इधर-उधर की

दादा-दादी ने की अनोखी शादी

न्यूयॉर्क, एजेंसी : कोरोना ने कई लोगों के शादी करने के अरमानों पर पानी फेर दिया। ऐसा ही हुआ न्यूयॉर्क के जर्मन

टाउन में रहने वाले 90 साल के एल्विन ली और वेस्टरविले में रहने वाली 85 साल की डोरोथी ड्रिस्केल के साथ। उन्होंने शादी करने की योजना बनाई थी। लेकिन कोरोना ने उनकी योजना को पटरी से उतार दिया। हालांकि इस दौरान उन्होंने रचनात्मक तरीका निकाला और वीडियो कांफ्रेंसिंग एप जूम के जरिये शादी की। इस शादी में बीस परिवार एप के जरिये शामिल हुए और यह एल्विन के घर पर हुई। ली ने अपनी पत्नी को 11 साल पहले और ड्रिस्केल ने दो साल पहले अपने पति को खो दिया था। ली के परिवार ने उनकी 90 वीं जन्मदिन पार्टी भी जूम पर दी थी। ली की पोती ने बताया कि इस पार्टी के बाद ही उन्हें यह विचार आया। यह पहली बार नहीं है जब लॉकडाउन के चलते इस तरह का अनोखा तरीका निकाला गया है।

कोरोना को हराएगी बैक्टीरिया की दवा

वैज्ञानिकों का दावा ▶ गंभीर मरीजों में कारगर साबित हो सकती है 'टाइकोप्लेनिन'

श्वसन तंत्र के संक्रमण को खत्म करती है यह दवा

संदीप पांडेय, लखनऊ

बैक्टीरियल इंफेक्शन के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एंटीबायोटिक दवा 'टाइकोप्लेनिन' कोरोना के गंभीर मरीजों के इलाज में भी कारगर साबित हो सकती है। फ्रांस में हुए शोध के बाद लखनऊ के लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान के फार्माको-अलर्ट में इस दवा को कोरोना पीड़ित मरीजों के लिए अल्टरनेटिव ड्रग के तौर पर शामिल किया गया है।

दरअसल, इंटरनेशनल जनरल ऑफ एंटीमाइक्रोबियल एजेंट्स में नौ मार्च को शोध प्रकाशित हुआ। इसमें फ्रांस के चिकित्सा वैज्ञानिकों ने एंटीबायोटिक 'टाइकोप्लेनिन' दवा को कोविड-19 बीमारी के इलाज में कारगर बताया है। दावा किया गया कि शरीर को घातक संक्रमण से उबारने वाली इस दवा में वायरस को भी मात देने की ताकत है। खासकर, श्वसन तंत्र के संक्रमण को नेस्तनाबूत करने में यह काफी कारगर साबित हो सकती है। ऐसे में लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान के फार्माकोलॉजी विभाग के डॉक्टरों ने भी दवा के रसायनों व उसके प्रभाव का आकलन किया और शोध में किए दावों की तहकीकात की। इसके बाद उन्होंने भी यहां के चिकित्सकों को भी कोरोना के भर्ती मरीजों में वैकल्किप दवा के रूप में इसके प्रयोग का सुझाव दिया है।

परिणाम पर रहेगी नजर : संस्थान में हर माह देश-दुनिया में हो रही नई दवाओं के प्रयोग व उसके दुष्प्रभाव पर फार्माको-अलर्ट जारी होता है। ऐसे में अप्रैल में फार्माको-अलर्ट 'सार्स कोव-टू' के ट्रीटमेंट पर जारी हो रहा है। इसमें कोविड-19 के इलाज में टाइकोप्लेनिन को बतौर अल्टरनेटिव ड्रग शामिल किया है।

अभी इन मरीजों को दी जाती है यह दवा : लोहिया संस्थान के फार्माकोलॉजी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अतुल जैन के मुताबिक, 'टाइकोप्लेनिन' दवा आइसीयू में भर्ती गंभीर संक्रमण के मरीजों में दी जाती है। यह मरीज ग्राम पॉजिटिव बैक्टीरिया से घिरे होते हैं। इनमें स्टैफिलोकोकस ऑरिस, एंटरोकोकस बैक्टीरिया से अपर रेस्पिरेटरी व लोअर रेस्पिरेटरी इंफेक्शन के अलावा तमाम दिक्कतें हो जाती हैं। साथ ही मेथिसिलिन दवा रजिस्टेंस हो जाती है। ऐसी गंभीर स्थिति में टाइकोप्लेनिन दवा बैक्टीरिया की सेल वॉल पर प्रहार कर मरीजों को संक्रमण मुक्त करने में मददगार बनती है।

अभी सात दवाएं, एक थेरेपी है विकल्प : अभी कोरोना के मरीजों में अमूमन सात दवाएं और एक प्लाज्मा थेरेपी दी जाती है। इसमें एंटी मलेरिया की हाइड्रॉक्सी क्लोरोक्विन, एचआइवी की लोपिनावीर एंड रिटोनावीर, एचसीवी की रिबाविरिन, वायरल इंफेक्शन की रेमडेसिविर, इंटरफेरॉन-1बी, इंटरल्यूकिन-6 इनहिबिटर्स व एजिथ्रोमाइसीन आवश्यकतानुसार मरीजों को दी जाती है।

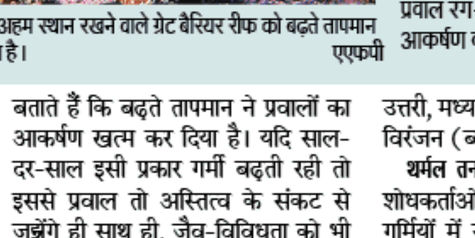

प्रतीकात्मक

वायरस के प्रोटीन खोल पर करेगी प्रहार

डॉ. अतुल जैन के मुताबिक, फ्रांस के चिकित्सा वैज्ञानिकों के शोध के अनुसार 'टाइकोप्लेनिन' दवा सार्स कोव-टू वायरस के प्रोटीन खोल पर प्रहार करने में सक्षम है। दावा है कि यह दवा देने से वायरस की संरचना का निर्माण बाधित होगा। ऐसे में मरीज में वायरस का री-प्रोडेक्शन नहीं हो सकेगा। वहीं, कोरोना का वायरस भी पहले श्वसन तंत्र पर ही अटैक करता है। ऐसे में यह दवा अपर व लोअर रेस्पिरेटरी इंफेक्शन से मुक्त कराने में भी मददगार होगी।

ड्रोन से दवा का छिड़काव

फ्रांस में कोरोना वायरस से संक्रमण के मामलों में तेजी से वृद्धि होने की वजह से हालात काफी गंभीर हो रहे हैं। संक्रमण की रोकथाम के लिए तरह-तरह के उपाय किए जा रहे हैं। राजधानी पेरिस में ड्रोन की मदद से दवा का छिड़काव किया जा रहा है। रायटर

ग्रेट बैरियर रीफ पर मंडरा रहा है अस्तित्व का संकट

मेलबर्न, प्रेट्र : ऑस्ट्रेलियाई पारिस्थितिकी में अहम स्थान रखने वाले विश्व के सबसे बड़े प्रवाल भित्ति 'ग्रेट बैरियर रीफ' पर बढ़ते तापमान की वजह से अस्तित्व का संकट मंडरा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण यहां कोरल ब्लीचिंग की समस्या बढ़ती जा रही है।

वैज्ञानिकों ने इसे दुनिया के लिए सबसे बड़ा खतरा बताया है। जब तापमान, प्रकाश या पोषण में किसी भी परिवर्तन के कारण प्रवालों पर तनाव बढ़ता है तो वे अपने ऊतकों में निवास करने वाले शैवाल को निष्कासित कर देते हैं जिस कारण रंग-बिरंगे प्रवाल सफेद रंग में परिवर्तित हो जाते हैं। इस घटना को ही कोरल ब्लीचिंग या प्रवाल विरंजन कहते हैं।

ऑस्ट्रेलिया की जेम्स कुक यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के अनुसार, अब तक गंभीर ब्लीचिंग से बची प्रवाल भित्तियों की संख्या लगातार घटती जा रही है। बता दें कि ग्रेट बैरियर रीफ ऑस्ट्रेलिया के सुदूर उत्तरी और दक्षिणी क्षेत्र में स्थित है।

जेम्स कुक यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर टेरी ह्यूजेस ने कहा, 'मार्च के आखिरी दो सप्ताहों में हमने 1036 प्रवाल भित्तियों का सर्वेक्षण किया। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि बढ़ते तापमान ने प्रवालों का आकर्षण खत्म कर दिया है। यदि साल-दर-साल इसी प्रकार गर्मी बढ़ती रही तो इससे प्रवाल तो अस्तित्व के संकट से जूझेंगे ही साथ ही, जैव-विविधता को भी नुकसान पहुंचेगा।' उन्होंने कहा कि पहली बार ग्रेट बैरियर रीफ के सभी तीन क्षेत्रों - उत्तरी, मध्य और अब बड़े हिस्से पर गंभीर विरंजन (ब्लीचिंग) हुआ है।

थर्मल तनाव से होती है कोरल ब्लीचिंग : शोधकर्ताओं ने बताया कि कोरल ब्लीचिंग गर्मियों में समुद्र के तापमान में वृद्धि के कारण पैदा होने वाले थर्मल तनाव के कारण होती है। बढ़ते तापमान के कारण पिछले पांच वर्षों में 2300 किमी रीफ सिस्टम में तीसरी गंभीर ब्लीचिंग हुई है। पहली बार इसके बारे में वर्ष 1998 में पता चला था। रिकॉर्ड के बताते हैं कि यह साल सबसे गर्म रहा था।

अर्थव्यवस्था का है आधार : बता दें कि ऑस्ट्रेलिया की पर्यटन अर्थव्यवस्था में ग्रेट बैरियर रीफ का योगदान अनुमानतः चार बिलियन डॉलर होता है, लेकिन यदि तापमान इसी प्रकार बढ़ता रहा तो इसे देश की अर्थव्यवस्था तो प्रभावित होगी ही साथ ही , ग्रेट बैरियर रीफ भी अपना विश्व विरासत का दर्जा खो सकता है। वैज्ञानिकों ने चिंता जताते हुए कहा कि हमें वैश्विक स्तर पर ऐसे कदम उठाने चाहिए जिससे तापमान में वृद्धि न हो पाए। यदि दुनियाभर की सरकारें समय रहते नहीं जागीं तो भविष्य में हमें कई और संकटों से भी जूझना पड़ सकता है।

- ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण बढ़ गई हैं कोरल ब्लीचिंग की घटनाएं
- बड़े क्षेत्र में प्रवाल हो चुके हैं रंगहीन, वैज्ञानिक ने जताई चिंता

आस्ट्रेलियाई पारिस्थितिकी में अहम स्थान रखने वाले ग्रेट बैरियर रीफ को बढ़ते तापमान की वजह से नुकसान पहुंच रहा है। एएफपी

... और रंगहीन हो जाता है

कोरल ब्लीचिंग तब होती है जब समुद्र के तापमान में बदलाव के कारण स्वस्थ कोरल तनावग्रस्त हो जाते हैं और कोरल अपने एल्गी (शैवालों) निष्कासित करते हैं। ये शैवाल कोरल के ऊतकों में रहते हैं और इनके न रहने पर कोरल रंगहीन हो जाता है। शैवालों की मौजूदगी में ही प्रवाल रंग-बिरंगे दिखते हैं और लोगों के आकर्षण का केंद्र बनते हैं।

धूमपान बढ़ाता है कोविड-19 का खतरा

शोध अनुसंधान

धूमपान करने वाले फेफड़े के रोगी सचेत हो जाएं। ऐसे लोग कोरोना वायरस की चपेट में जल्द आ सकते हैं। अपने तरह के पहले अध्ययन में शोधकर्ताओं ने यह दावा किया है कि फेफड़ों के रोग क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) से जूझ रहे लोग अगर धूमपान भी करते हैं तो ऐसे में कोरोना वायरस (कोविड-19) का उच्च खतरा हो सकता है। धूमपान करने वाले सीओपीडी रोगियों में एक एंजाइम का उच्च स्तर होता है, जो फेफड़ों में कोरोना के प्रवेश का रास्ता आसान कर सकता है।

पहले भी एक अध्ययन से यह जाहिर हो चुका है कि एंजियोटेंसिन कंवर्टिंग एंजाइम 2 (एसीई-2) फेफड़ों की कोशिकाओं की सतह पर रहता है। यह कोरोना के लिए प्रवेश स्थल के तौर पर काम करता है। वायरस कोशिकाओं में प्रवेश कर संक्रमण का कारण बनता है। यूरोपीय रेस्पिरेटरी पत्रिका में प्रकाशित नए अध्ययन के अनुसार, मौजूदा दौर में धूमपान करने वालों की तुलना में सिगरेट से तौबा कर चुके लोगों में एसीई-2 का निम्न स्तर पाया गया। कनाडा की ब्रिटिश कोलंबिया यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता डॉ. जेनिस लेउंग ने कहा, 'चीन के डाटा से जाहिर होता है कि सीओपीडी रोगियों में कोविड-19 का उच्च खतरा हो सकता है। हमारा यह अनुमान है कि एसीई-2 के उच्च स्तर के कारण यह जोखिम हो सकता है।' शोधकर्ताओं ने यह निष्कर्ष 21 सीओपीडी रोगियों और इतने ही सामान्य लोगों पर किए गए एक अध्ययन के आधार पर निकाला है। अध्ययन में एसीई-2 के स्तर और धूमपान समेत दूसरे कारकों के साथ तुलना की गई। -आइएएनएस

मनरंजन

बॉबी के मना करने पर भी सनी कूदे थे 13 हजार फीट से : अनिल शर्मा

वर्ष 2003 में अनिल शर्मा के निर्देशन में बनी फिल्म 'द हीरो' को रिलीज हुए इस साल 17 साल हो गए हैं। सनी देओल, प्रियंका चोपड़ा, प्रिटी जिंटा, अमरीश पुरी अभिनीत इस फिल्म की ज्यादातर शूटिंग स्विट्जरलैंड में हुई थी। अनिल शर्मा ने इस फिल्म से जुड़ी यादों को ताजा किया। उन्होंने बताया, 'एक महीने तक हम जुंगफ्राऊ में रहे थे। आनंद बक्शी साहब की यह आखिरी फिल्म थी। वह बीमार थे, लेकिन उन्होंने फिर भी मेरी फिल्म के लिए गीत लिखा था। मुझे अब भी याद है, हम सुबह चार बजे जुंगफ्राऊ के लिए ट्रेन से निकलते थे। हमें ढाई से तीन घंटे लगते थे। माइनस 20 डिग्री में हमने शूटिंग की है। वह क्रिसमस के दिन थे। वहां हमने सनी का 13 हजार फीट की ऊंचाई

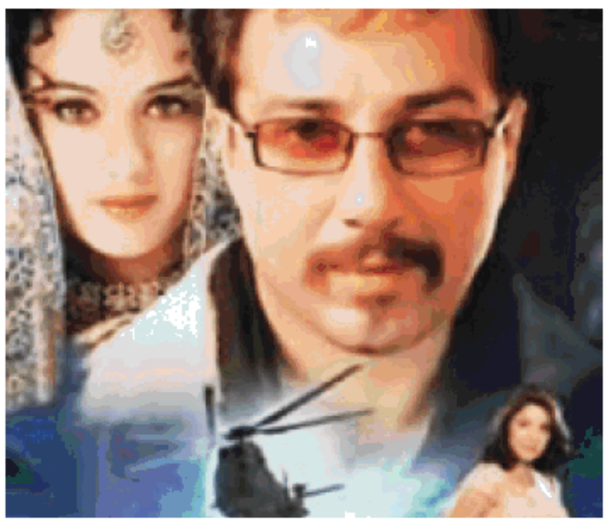

से नीचे कूदने वाला एक सीक्वेंस फिल्माया था। केबल के जरिए सनी को नीचे कूदना था। बहुत मुश्किल सीन था, लेकिन सनी को कोई डर नहीं था। उसी दौरान बॉबी देओल का फोन आ गया। उन्होंने सनी को इस सीक्वेंस को करने से मना किया। सनी ने कहा कि ठीक है, नहीं करूंगा। उन्होंने मुझसे कहा कि बॉबी का फोन आए तो मुझे मत देना और उन्होंने वह सीन पूरा किया। जब उनको कूदना था, तब केबल छोड़ दी गई, वह सीधे जमीन पर आकर गिरे। 10 से 12 मीटर फिसलते हुए वह नीचे तक आए। चार-पांच कैमरे लगे थे। मैं खुद घुटनों तक बर्फ में धंसा हुआ था। तब वीएफएक्स नहीं होते थे।' प्रियंका चोपड़ा को फिल्म में लेने की बात पर अनिल बताते हैं कि प्रियंका पहली ऐसी अभिनेत्री हैं, जिन्हें उन्होंने बिना स्क्रीन टेस्ट के साइन किया था। अनिल कहते हैं, 'प्रियंका अपने परिवार के साथ मेरे घर पर आई थीं। पहली मुलाकात में ही पता चल गया था कि वह अच्छी परफॉर्मर हैं। कनाडा में फिल्म का पहला शेड्यूल और पहला शॉट प्रियंका पर ही फिल्माया गया था। सीन बहुत लंबा था, एक टेक में प्रियंका ने वह सीन पूरा किया। फिर भी हमने चार से पांच शॉट ले लिए थे। लेकिन फिल्म में हमने पहला वाला शॉट ही लगाया था।'

सुनील दत्त की सलाह काम आई थी : सुनील लहरी

चर्चित धारावाहिक 'रामायण' में लक्ष्मण का किरदार निभाने वाले सुनील लहरी ने शनिवार को सोशल मीडिया पर धारावाहिक के क्रू मेंबर्स के साथ एक तस्वीर साझा की। वर्ष 2005 में आशा पारिख के शो कंगन के बाद सुनील अभिनय से दूर हैं। वह अपना प्रोडक्शन हाउस चला रहे हैं। 'रामायण' की यादों को ताजा करते हुए सुनील कहते हैं, 'शूटिंग के लिए मैं पहली बार उमरगांव ट्रेन से गया था। स्टेशन पर किसी को पता नहीं था कि शूटिंग कहां हो रही है। तब तक स्टेशन पर कोई लेने नहीं आया था। मैं ऑटो पकड़ने की सोच ही रहा था कि तभी कुछ लोग लेने पहुंच गए। सुनसान जगह पर स्टूडियो था। पहले अजीब लगा, लेकिन फिर आदत पड़ गई थी। पहला सीक्वेंस मेरा वह था, जिसमें हम सभी भाई विश्वामित्र के सामने गुरुकुल में बैठे रहते हैं।' यह शो भले ही सुनील के करियर का सबसे बड़ा शो था, लेकिन सुनील ने इसके बाद कोई कॉस्ट्यूम ड्रामा नहीं किया।

इसकी वजह बताते हुए वह कहते हैं, 'संन्यासी की ड्रेस में मैं आरामदायक महसूस करता था, लेकिन विग और मेटल के आभूषणों से दिक्कत हो जाती थी। जब विग उतरती थी, तब बालों की जड़ों में दर्द होने लगता था। तलवार, तीर वास्तविक और भारी थे। हाथ में कई बार चोट लग जाती थी। तब आजकल की तरह कूल लाइट्स नहीं होती थी। उस समय हार्ड रिफ्लेक्टर से रोशनी चेहरे पर मारी जाती थी। उसकी वजह से आंखें नहीं खुलती थीं। मुझे इंडस्ट्री में फिल्म 'नक्सलवादी' से ख्वाजा अहमद अब्बास साहब लाए थे। अब्बास साहब ने मुझे सुनील दत्त साहब से मिलवाया था। उन्होंने बताया था कि सुबह सूर्य को पांच मिनट तक देखने से रिफ्लेक्टर को सहने की आदत हो जाएगी। उनकी उस सीख से बहुत मदद मिली थी।' सुनील कहते हैं कि 'इस शो ने मुझे खुद के साथ ईमानदार रहना सिखाया है। रामायण हमें सिखाती है कि जीवन में क्या करना चाहिए, जबकि 'महाभारत' सिखाती है कि क्या नहीं करना चाहिए, वहीं श्रीमद्भगवतगीता सिखाती है कि जीवन कैसे जीना चाहिए।

जब कंगना बनीं सीता

रामानंद सागर निर्देशित 'रामायण' का पुन : प्रसारण शुरू होने के बाद लोग उससे जुड़ी अपनी पुरानी यादों को ताजा कर रहे हैं। शनिवार को कंगना रनोट की टीम की तरफ से सोशल मीडिया पर उनकी एक तस्वीर साझा की गई। यह तस्वीर उनके स्कूल के दिनों की है, जिसमें वह सीता बनी हैं। तस्वीर के साथ लिखा गया है कि, 'रोचक तथ्य 1 : जनता की भारी मांग पर पुराने रामायण का पुन : प्रसारण शुरू किया गया और वह इस समय का सबसे लोकप्रिय शो है। रोचक तथ्य 2 : छोटी कंगना ने स्कूल के दिनों में रामायण पर आधारित एक नाटक में परफॉर्म किया था। कंगना इस समय अपने गृह नगर मनाली में अपने परिवार के साथ हैं।

वजन कम करने में लगी हैं कृति

घर पर बैठकर जहां कुछ लोग पकवानों का आनंद ले रहे हैं, वहीं कुछ लोग अपनी सेहत को लेकर काफी सजग हैं। सितारों की बात करें तो इन दिनों कृति सैनन अपना वजन कम करने में लगी हुई हैं। शुक्रवार रात सोशल मीडिया पर अपने प्रशंसकों के सवालों के जवाब के दौरान उन्होंने यह जानकारी साझा की। सवाल पूछने वालों में अभिनेता अर्जुन कपूर और वरुण शर्मा भी शामिल रहे।

व्यायाम करने के सवाल के जवाब में कृति ने बताया कि वह व्यायाम कर रही हैं, लेकिन जिम जितना नहीं। सप्ताह के पांच दिन कम से कम 45 मिनट। एक अन्य यूजर के सवाल पर उन्होंने बताया कि अपनी अगली फिल्म के लिए उन्होंने 15 किलोग्राम वजन बढ़ाया था, लेकिन अब कम करने का प्रयास कर रही हैं। अर्जुन कपूर ने कृति से 'पानीपत' की शूटिंग के अनुभव के बारे में पूछा तो कृति ने लिखा, 'अर्जुन, आप मुझे दोबारा प्रमोशन के पथ पर लेकर जा रहे हैं। एक शानदार सह-कलाकार के साथ मैं इस अनुभव को हमेशा याद रखना चाहूंगी।' रितिक रोशन के साथ काम करने के सवाल पर उन्होंने कहा कि वह रितिक के साथ काम करना पसंद करेंगी। आगामी फिल्म 'मिमी' के सवाल पर कृति ने बताया कि फिल्म की शूटिंग पूरी हो चुकी हैं, सिर्फ एक गाना बाकी है। आगामी दिनों में वह 'मिमी' और 'बच्चन पांडे' जैसी फिल्मों में नजर आएंगी।

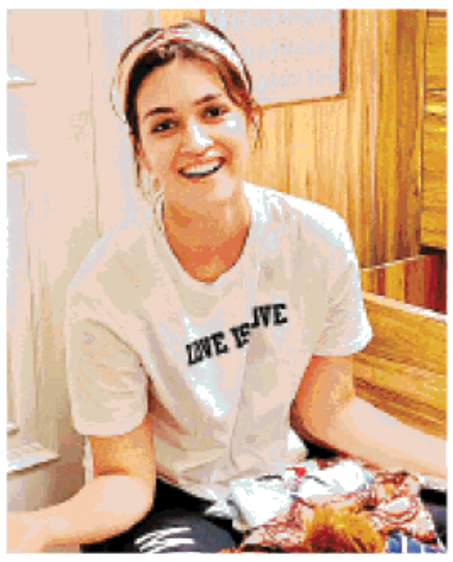

भूमि पेडणेकर बोलीं, माता-पिता ने सिखाया कि गलतियों से सीखो

घर में रहकर सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने वाले लोगों में भूमि पेडणेकर का नाम भी शुमार है। वह क्वारंटाइन के दिनों में अपनी मम्मी के साथ भी अपनी तस्वीरें साझा करती रहती हैं। भूमि ने बताया कि उनकी मम्मी उनके करियर में रचनात्मक तरीके से काफी सपोर्टिव रही हैं। उनके सपोर्ट के बिना मैं और मेरी बहन कुछ नहीं कर सकते थे। कई बार जब मैं और मेरी बहन लड़ते हैं, तो मम्मी हमारी लड़ाई में फंस जाती हैं। मम्मी-पापा की वजह से हम दोनों इतने सशक्त हैं। हम दोनों अपने माता-पिता की छवि हैं। मम्मी ने तो मेरी 'लस्ट स्टोरी' फिल्म की स्क्रिप्ट पढ़ी थी। मेरे जैसे माता-पिता सबके होने चाहिए। हमारे घरों में किसी विषय पर बात करना वर्जित नहीं माना जाता था। जब भी किसी बात से परेशान होती या मुश्किल में होती थी, तो अपने पिता से बात करती थी। भूमि बताती हैं कि उनके माता-पिता दोनों काम करते थे। ऐसे में दुनिया की राजनीति के साथ आर्थिक व्यवस्था पर भी बातचीत होती थी। दोनों चैरिटी करते थे, महिलाओं को शिक्षित करने का प्रयास करते थे। ऐसे में मैं और मेरी बहन बहुत ही बेहतरीन माहौल में बड़े हुए हैं। हमें कभी यह नहीं कहा गया, यह मत करो। उन्होंने हमेशा यही सिखाया कि अपने निर्णय खुद लो और गलतियां होने पर उनसे सीख लो।

मैं मैकेनिक बन गई हूं : पूनम ढिल्लों

इस समय पूनम ढिल्लों भी समय का सदुपयोग कर रही हैं। परिवार के साथ वक्त बिताने और खाना बनाने के अलावा उन्होंने और भी कई नई चीजें सीखी हैं। उनका कहना है, 'इस वक्त को मैं पूरी तरह से फैमिली टाइम मानती हूं। पहले सब काम की वजह से अपने-अपने समय पर उठते थे और खाना खाते थे। अब रसोई में खाना बनाते वक्त मेरे बच्चे भी मेरा हाथ बंटाते हैं। अब हम एक साथ खाना खाते हैं। इस समय हमें अपने आसपास काम करने वाले लोगों का महत्व समझ में आ रहा है। सही बताऊं तो मैं अपने घर में मैकेनिक बन गई हूं। कुछ दिनों पहले ही मैंने अपनी बेटी के कमरे की ट्यूबलाइट ठीक की है। सकारात्मकता बनाए रखने के लिए न्यूज चैनल देखना कम कर दिया है तथा किताबें पढ़ने और फिल्में देखने में वक्त बिताती हूं। पूनम आखिरी बार फिल्म 'जय मम्मी दी' में नजर आई थीं।

आज के प्रमुख टीवी कार्यक्रम

डीडी नेशनल
योग बाइ बाबा रामदेव : सुबह 6.00
सिने संगीत : सुबह 7.00
रंगोली : सुबह 8.00
रामायण : सुबह 9.00/रात 9.00
कोविड 19 अपडेट्स : सुबह 10.30/शाम 7.00
ब्योमकेश बक्शी : सुबह 11.00
वाह क्या टेस्ट है : दोपहर 12.00
जंगल बुक : दोपहर 1.00
छोटा भीम : दोपहर 2.00
सर्कस : दोपहर 3.00
श्रीमान श्रीमती : शाम 4.00
चाणक्य : शाम 5.00
देख भाई देख : शाम 6.00
संगीत सेतु : रात 8.00
बुनियाद : रात 10.30

डीडी भारती
उपनिषद गंगा : शाम 6.00
महाभारत : दोपहर 12.00/शाम 7.00

कलर्स
श्रीमद् भागवत महापुराण : सुबह 8.00
खतरा खतरा खतरा : शाम 4.00
कॉमेडी नाइट्स विद कपिल : शाम 6.00
नागिन : रात 8.00
खतरों के खिलाड़ी : रात 9.00

स्टार प्लस
सिया के राम : सुबह 5.00/शाम 7.00
राधाकृष्ण : सुबह 8.00/शाम 7.30
महाभारत : सुबह 9.00/शाम 6.00
इस प्यार को क्या नाम दूं : सुबह 11.00
ये रिश्ता क्या कहलाता है : दोपहर 1.00
दीया और बाती हम : दोपहर 3.00
बाला (फिल्म) : रात 8.00

स्टार भारत
सावधान इंडिया-एफआइआर : शाम 4.00
बेस्ट ऑफ लॉफ्टर चैलेंज : रात 8.00